ज्ञानमण्डल-ग्रन्थमालाका ८२वाँ ग्रन्थ

आर्याना
(अफगानिस्तान)

लेखक
रघुनाथ सिंह एम. पी.

भूमिका
श्री मोरारजी देसाई

बनारस
ज्ञानमण्डल लिमिटेड

मूल्य : तीन रुपये

प्रथम संस्करण, गणतन्त्र-दिवस, संवत् २०१४

प्रकाशक—ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी (बनारस)
मुद्रक—ओम् प्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, वाराणसी ५२५०-१४

समर्पण

भारत-अफ़ग़ान मैत्रीको

भूमिका

श्री रघुनाथ सिंहने अपनी अफगानिस्तान-यात्राके फलस्वरूप हमें भारतके इतिहासपर एक मजेदार और महत्त्वपूर्ण किताब दी है। इतनी छोटी किताबमें उन्होंने आर्योंके उद्गमस्थानका सारा इतिहास भर दिया है। भाषा सरल है और शैली चलती हवा जैसी स्फूर्तिसे भरी हुई है। किताबमें बादशाहों और वीर योद्धाओंके कार्योंके वर्णन हैं। इसकी कद्र और परीक्षा तो इस विषयके जानकार ही कर सकेंगे। मैं तो इतना ही कह सकता हूँ कि लेखकने काफी मेहनत करके अपने यात्रा-वर्णनको सजीव बनाया है और पाठकको बगैर तकलीफ वर्तमान और अतीतके ऐतिहासिक स्थानोंकी सैर करायी है। मैं लेखकके इस प्रयासका स्वागत करता हूँ और उन्हें इसके लिए बधाई देता हूँ।

१—विलिंग्डन क्रेसेंट
नयी दिल्ली
२६-१-५८

मोरारजी देसाई

दो शब्द

आर्याना अफगानिस्तानका प्राचीन नाम है। ऋग्वेदमें जिन नदियोंके नाम आये हैं वे नदियाँ अफगानिस्तानकी मालूम पड़ती हैं। इससे एक अनुमान यह लगाया जाता है कि ऋग्वेदका रचनास्थल भी अफगानिस्तान ही रहा होगा। दजलासे लेकर ब्रह्मपुत्रतक फारस, अफगानिस्तान और भारत ये तीन देश महान् आर्यजनस्थान थे। देशपरत्वेन ये तीन सगे भाई अलग-अलग हो गये। अफगान भी उन्हीं तीन भाइयोंमेंसे एककी सन्तान हैं।

अफगानिस्तानमें आर्याना एयर लाइन्स, आर्याना होटल अब भी उसी प्राचीन इतिहासका स्मरण दिलाते हैं। अफगानिस्तानके लोगोंका विश्वास है कि हिन्दू और पारसी, विश्वके सबसे पुराने इन दो प्रख्यात धर्मोंका मूल स्रोत आर्याना भूखण्ड है। ऋग्वेद और जिन्दावेस्ता इसी देशमें लिखे गये हैं।

भारतके समान अफगानिस्तानमें भी धार्मिक कट्टरता कभी नहीं थी। अफगानिस्तान और भारतकी यह प्राचीन विशेषता आजतक वैसे ही चली आ रही है।

गत वर्ष मैं सर्वश्री अकबरभाई चौढ़ा, राधारमण, महावीरप्रसाद भार्गव तथा नवाबसिंह चौहानके साथ अफगानिस्तान गया था। आर्याना यात्राका केवल वर्णन नहीं है, पर अफगानिस्तानके प्राचीनसे लेकर अबतकके इतिहासके नीचे सरस्वती जैसी जो एक सातत्यकी गुप्त धारा बहती है उसको खोज निकालनेका अन्वेषणात्मक प्रयत्न है।

अफगानिस्तानमें भारतीय पुरातत्त्व एवं इतिहास सम्बन्धी प्रचुर सामग्री बिखरी पड़ी है, फ्रान्सीसी पुरातत्त्वविशेषज्ञोंने इस सम्बन्धमें कम्बुजतुल्य बहुत काम किया है। प्रायः सभी खनन-कार्य उनके द्वारा

किये गये हैं। अफगानिस्तानके कबीलोंमें अनेक प्रकारके रीतिरिवाज तथा भाषाएँ प्रचलित हैं। भाषा-विज्ञान, संस्कृति एवं सभ्यतामें रुचि रखनेवालोंके लिए अफगानिस्तान आदर्श स्थान हो सकता है।

बामियान अद्भुत कलाकृति है। हाडा, बेग्राम तथा अनेक स्थानोंमें बौद्ध तथा हिन्दूकालीन ध्वंसावशेष भूमिके ऊपर तथा नीचे पड़े हैं। यहाँके एक-एक ग्राममें, एक-एक नगरमें भारतीय पुरातत्त्व सम्बन्धी वस्तुएँ भूली पड़ी हैं। बलख, हेरात, कन्धार आदिमें तो बिल्कुल ही कार्य नहीं हुए हैं। भारतीय विश्वविद्यालयों, भारत सरकार तथा विद्वानोंको इस ओर अन्वेषणार्थ आना समयकी माँग है।

पुस्तकको प्रस्तुत रूप देनेमें मित्रवर श्रीखाडिलकरने अथक परिश्रम किया है। उन्हें धन्यवाद जैसे शब्दमें धन्यवाद प्रकट करनेमें संकोच होता है। पुस्तकमें अनेक त्रुटियाँ रह गयी हैं। इसके लिए मैं ही उत्तरदायी हूँ। राजनीतिक जीवनके उथल-पथलमें समयका उपयोग ठीकसे नहीं हो पाता। पुस्तक किसी विशेष दृष्टिको लेकर नहीं लिखी गयी है, केवल अफगानिस्तान सम्बन्धी कुछ तत्त्व सम्मुख रख दिये गये हैं। उनसे क्या निष्कर्ष निकलता है यह समझना सहृदय पाठकका ही कार्य है।

श्री मोरारजी देसाईने व्यस्त कार्योंमें फँसे रहनेपर भी पुस्तक पढ़कर भूमिका लिखी है, इसके लिए उनका आभारी हूँ।

२६ जनपथ
नयी दिल्ली
२६ जनवरी, १९५८

रघुनाथ सिंह

विषयानुक्रमणिका

चित्र सूची

मुहम्मद जहीर शाह

(अफगानिस्तानके वर्तमान शाह)

महान् आर्य-जन स्थान

आर्योंकी कहानी कहता हूँ। आर्याह्वो एक देश था। उसका आद्यग्रंथ गाथा था। भाषा पुरानी वैदिक थी। सरितातुल्य भाषा भी अपनी गति बदलती है। आर्याह्वो हो गया ईरान। भाषा हो गयी पहेलवी। पश्चिमसे झोंका उठा। पुराना नाम उड़ गया। हो गया फारस।

एक देश था आर्याना। वह था संस्कृतियोंका मिलन-मन्दिर। वह था ऋग्वेदका रचनास्थल। उसकी नदियोंकी कहानी है। ऋग्वेदने गायी है। वह भी उजड़ा। आती लहरको रोक न सका। हो गया अफगानिस्तान। भाषा हो गयी पश्तो।

हम रहते हैं एक देशमें। उसे कभी कहते थे—आर्यावर्त। वह 'आसिन्धु-सिन्धुपर्यन्ता' फैला था। खैबर-दर्रा पार कर लोग आये। सिन्धुकी कहानीके साथ आये। वह हो गया हिन्दुस्तान।

आर्यस्थान महान् विशाल भूखण्ड था। दजलाके अंगूरकी डालियोंसे झुकी घाटीसे उसकी यात्रा आरम्भ होती थी। महानद ब्रह्मपुत्रकी शस्यश्यामल भूमिके दर्शनसे मंजिल समाप्त होती थी। अपनी गोदमें लिये था—आर्याह्वो, आर्याना तथा आर्यावर्त। वह था महान् आर्य-जन स्थान। उनमें रहते थे—तीन भाई। उनमें पट्टीदारी न थी। वे थे—एक माँके तीन बेटे।

घर बनता है। उजड़ता है। फिर कहीं बसता है। आर्य फैले भूमण्डलमें। उनसे घिर गया दो-तिहाई विश्वका भूखण्ड। उन्होंने बसायी नयी दुनिया। अपने घरोंसे उजड़कर। लेकिन विलीन

होने लगीं आर्याह्वों, आर्याना तथा आर्यावर्तकी मधुर स्मृतियाँ।

कहानी सुनाऊंगा। अपनी शिराओंसे पूछा। तुममें रक्त कहाँसे आया ? वे बोलीं—खून है अपने पुरखोंका। हाड़-मांस है—अपने पुरखोंका। क्यों न इन पुरखोंकी कहानी कहूँ ?

आप पूछेंगे, पुरानी बातें सुननेसे क्या लाभ। मुझे याद है, हम बच्चे थे। बड़ी-बूढ़ी कहानी कहती थीं, हम सुनते थे। सुनते-सुनते सो जाते थे। हमारे पुरखे उन्हें सुनते आये हैं। हम उन्हें सुनते चले आयेंगे। आनेवाले सुनते रहेंगे। यह क्रम कभी समाप्त न होगा। वे कभी पुरानी न होंगी। मेरी भी कहानी पुरानी न होगी। कहानी होगी, एक भूले समयकी, भूले पुरखोंकी। एक भूले देशकी। कुछ भूले भाइयोंकी।

वे भाई एक थे। सहोदर थे। एक-सा सोचते थे। एक-सा रहते थे। एक-सी पूजा करते थे। एक-सा जीते थे। एक-सा मरते थे। एक-सा बोलते थे। रोटा-बेटी एक थी।

समय बदलता है। अपने साथ बदल देता है जातिको। बदल देता है देशको। बदल देता है धर्मको। बदल देता है भाई-भाईको। एक भाईका मुख पश्चिमकी ओर उठा। दूसरेकी आँखें उठीं यरूशलमकी ओर और तीसरा देखने लगा पूर्वकी ओर। आर्यावर्तने पूर्वको ओर देखा। आर्यानाने पश्चिमकी ओर मुख फेर लिया। दो भाइयोंकी पीठें मिलीं, आँखें न मिल सकीं।

यात्रा आरम्भ

हम चले। 'आर्याना' वायुयान था। अफगान सरकारका था। नाम पढ़ते ही चौंका। उड़ता गया। लौटा जा रहा था उस ओर जहाँसे तीनों पानीपत जीतनेवाले लोग आये थे।

अमृतसर पड़ा। स्वर्णमन्दिर चमका। लाहौर आया। शाही मसजिदकी अधूरो मीनारें बन चुकी थीं—पाकिस्तानकी कहानी

सुननेके बाद। रावी बहती चली जा रही थी। सन् १९२९ के दिसम्बरमें इसके तटपर पण्डित जवाहरलालके संग नाचा था। उस दिन पूर्ण स्वतन्त्रताकी घोषणा बारह बजे रात हुई थी। उनमें थे पेशावरके पठान। उनमें थे बलूचिस्तानके बलूची। उनमें थे पंजाबके सिख। उनमें था सारा हिन्दुस्तान। हम नाचे थे। आजाद हिन्दुस्तानकी मनोहर स्वप्नकी कल्पनामें। आजादीके बाद इन्सान नाचा फिर वहीं, लेकिन हैवान बनकर।

हजारों फुट ऊपरसे देख रहा था लाजपतरायकी कर्मभूमि। देख रहा था भगतसिंहकी नगरी। देख रहा था सिखोंकी कभीकी राजधानी। मन भरकर देख न सका। विमान बढ़ता गया। लाहौर छूट गया—लपटते हुए अनंगपाल, जयपाल, सिखोंके इतिहासको।

सीधी-सीधी नहरें थीं। उनमें जल भरा था। खेत लहलहा रहे थे। सरसों फूली थी। गेहूँमें बालियाँ लग रही थीं। यह था लायलपुरका इलाका। यहाँका गेहूँ सारा भारत खाता था। वह हमें नसीब नहीं। हमें बहुत-कुछ अब नसीब नहीं।

हम चले रेगिस्तानके ऊपर। हमारा विमान पेशावर होकर न जा सका था। पाकिस्तानने रास्ता डेरा गाजी खाँ होकर दिया था। लायलपुरसे सिन्धुकी घाटीतक उजाड़-भूमि थी। बिखरे सूखे गाँव, कस्बे, शहर दिखाई दिये। दस वर्ष पहले वे हिन्दुस्तानी थे और आज! बिमान अपनी छाया नीचे छोड़ता चलता गया।

सिन्धु नद आया। ललचायी आँखें नीचे झुकीं। नीचेसे जैसे कोई बुला रहा था। ओह—इसके साथ इतनी स्मृतियाँ थीं! इतने इतिहास थे, इतनी भावनाएँ थीं! मन करता था कूद पड़ूँ। लहरोंमें समा जाऊँ। पूछूँ—तुमने हमें हिन्दू नाम क्यों दिया? हमसे क्यों रूठ गयी? हम अपनी 'सन्ध्या'में तुझे रोज याद करते हैं। तेरा गुण-गान करते नहीं थकते और तू हमारी तरफ देखती

भी नहीं। बोल, तेरे रूठनेकी हमें क्या कीमत अदा करनी पड़ेगी?

जिसके कारण तू आजाद हुई उस सपूत गांधीका भस्म तूने अपनी गोदमें न लिया। अपने पुत्रके प्रति तेरा यह कैसा मातृ-भाव? किस अपराधके कारण? क्या कहोगी? उस अपराधका हमें क्या प्रायश्चित्त करना पड़ेगा?

तेरी उपत्यका हरी-भरी है। जिन्होंने तेरी उपेक्षा की, तू उनका पेट भरती हो? जो तूझे अपनी माँ कहनेके लिए तैयार नहीं तू उनके साथ रहती हो। जो तेरे गौरवमें अपने गौरवका अनुभव नहीं करते, उन्हें तुम शीतल करती हो। जिन्होंने तूझे पाक न माना, जिन्होंने अपने नामके साथ तुम्हारा अपाक नाम न जोड़ना चाहा, उनके साथ गयी। यह कैसी विडम्बना। मैं अपनी भावनामें डूबा था। जहाजके परिचारकने कहा—डेरा गाजी खाँ।

डेरा गाजी खाँ सिन्धुके पश्चिमी तटपर है। यहाँ वैष्णव वैरागियोंका एक सम्प्रदाय था। वे महन्त कहलाते थे। सुरमेका व्यवसाय करते थे। सन् १९२१ से उन्हें अनेक प्रदर्शनियोंमें देखता आया हूँ। उनका रामानन्दी टीका, गलेमें मोटी तुलसीकी माला, घनी दाढ़ी, प्रसन्न मुखमुद्रा अबतक मुझे खूब याद है। वे मुझे मिले भारतमें। अपने देशसे दूर। अत्यन्त विपन्नावस्थामें थे। उनके मनकी उदासी, ठण्ढी आँखोंकी स्थिर करुणा कभी न भूल सकूँगा। उनका सब कुछ गया एक हिन्दू नामके कारण। वे युगोंसे सिन्धुतटपर स्नान, तर्पण, सन्ध्या करते थे सिन्धुको माँ कहते थे। मेरा मन न जाने कैसा हो उठा। मुझे डेरा गाजी खाँ जैसे भयानक लगा। डरावना लगा। शायद वह अपनी गाफ़ियोंमें प्रसन्न था। लोगोंको उजाड़कर। शायद लोगोंने समझा नहीं। वह प्रसन्नता श्मशानकी थी। वह रहती नहीं। मैं अन्यमनस्क-सा हो उठा था। मन उचटा-सा था। दुनियाकी उदासी जैसे चारों ओरसे मेरी ओर दौड़ी चली आ रही थी। परिचारकने कहा—वह

है तख्त सुलेमान ।

सिन्धु नद पार करते ही सीमान्त प्रदेश आया । सूखी पर्वत-माला मिली । पर्वतको सुलेमान कहते हैं । नीचे देखा । दूरतक देखा । सूखी, पादप-दूर्वाविहीन फैली पर्वतमाला । कहीं आबादी नहीं थी । जहाँतक दृष्टि जाती थी, पहाड़ी रेगिस्तान मालूम पड़ता था । घाटियोंमें दस-बारह मीलोंके बीच थोड़ा हरा-भरा स्थान किसी झरनेके किनारे मिल जाता था । वहीं इन्सान अपना जीवन बिताता था । जीवनके साथ मिलकर ।

कबायली क्षेत्रमें मकान कच्चे थे । प्रत्येक मकान गढ़ी था । चारों ओर ऊँची दीवार और चारों कोनोंपर ऊँचा बना बुर्ज, मकानोंकी एक जैसी शैली थी । दीवारोंमें गोली तथा तोप रखनेके झरोखे बने थे । यह कबीलेवालोंका प्रदेश था । सड़क न थी । रेल न थी । केवल गदहा, घोड़ा तथा ऊँटपर लोग चलते दिखाई दिये । कुछ भी जैसे देखने लायक नीचे न था । रेगिस्तान और उजाड़ भूखण्ड देखते-देखते आँखें थक गयीं । विमान मरु-पर्वतको पार करता बढ़ने लगा । मुझे तन्द्रा आने लगी । कुछ झपकी लगी । आवाज उठी -काबुल । सचेत हो गया । नीचे आँखें गयीं । हरित प्रदेश । मन पुलकित हो उठा ।

काबुल

सुलेमान पर्वतमालाको डाक चुका था । सुलेमान ही शायद पुरातन सोम पर्वत है । हमारा जहाज उस भूमिको स्पर्श करना चाहता था जहाँ सोमसेवी रहते थे । जिसका नाम कुभ था । वह कुभा नदीके दोनों तटपर बसा था । कुभका ही अपभ्रंश काबुल और कुभाका काबुल नदी हो गया है ।

जहाजपरसे ही पर्वत लाँघती, मैदानमें होती, फिर पर्वतपर चढ़ती दूरतक दीवार खड़ी दिखाई दी । समझा, यही बालाहिसार-का प्रसिद्ध दुर्ग होगा, किन्तु यह भ्रम था । यह हिन्दू रचना थी ।

आक्रामक मुसलमानोंसे काबुलकी रक्षाके निमित्त हिन्दू राजाओंने चीनकी दीवारकी तरह इस दीवारको बनवाया था। इसे काबुल-की दीवार कहते हैं। दीवार मिट्टीकी अधिकतर है। वह गत एक हजार वर्षोंसे यहाँके हिन्दूओंके त्यागे श्वेत यज्ञोपवीततुल्य लोहित पर्वतमालाके वक्षःस्थलपर जैसे फैली थी।

हमने समझा था, काबुल पुराना शहर होगा। लेकिन जहाज-से ही चौड़ी अलकतरेकी सड़क दिखाई दी। मैदान दिखाई दिये, बाग दिखाई दिये। अपनी जवानीमें जैसे उठता काबुल दिखाई दिया। सीधी सड़कोंमें खिलता काबुल दिखाई दिया। भारतमें सूदखोर काबुलियोंको देखकर जो धारणा हुई थी, उसमें ठेस लगी।

विमान एक पहाड़ीकी तलहटीमें घूमता उतरा। गर्द उड़ी, झुककर देखा। मालूम हुआ, सीमेण्ट तथा अलकतरेका हवाई अड्डा नहीं था। केवल कंकड़ बिछाकर पीट दिया गया था। यहाँ-की गरीबीका प्रथम दर्शन हुआ।

काबुल तथा कन्धार अन्तरराष्ट्रीय हवाई अड्डोंका रूप लेते जा रहे हैं। यहाँ रूस, हालैण्ड, अमेरिका, भारत और ईरानके विमान मिले। 'आर्याना' एयर लाइनके तीन-चार विमान खड़े थे। फाटक पर पहुँचा। अफगान संसदके सदस्य तथा भारतीय दूतावासके लोग मिले। उनसे मिला। दोभाषिये द्वारा संसद-सदस्योंसे बात-चीत हुई।

हिन्दुस्तानियोंको यहाँ घर जैसा मालूम होगा। हवाई जहाज आदिमें काम करनेवाले ज्यादातर हिन्दुस्तानी हैं। हिन्दुस्तानसे ही हवाई जहाज लेकर 'आर्याना' जहाजी व्यवसाय अफगान सरकारने आरम्भ किया है।

सब लोग प्रसन्न मुद्रामें थे। कोई शंकित दृष्टिसे हमें देख रहा था तो वे श्वेतांग लोग थे। उनकी संख्या काफी मिली। यहाँ

विश्रामालय है। पासपोर्ट आदि सब काम दस मिनटमें हो गया। हम चले काबुलकी ओर। काबुलसे आर्याना हवाई अड्डा ३ मील है।

हमारी गाड़ी एक नये बनते लाल दो-मंजिले भवनके सामने खड़ी हो गयी। अंग्रेजी ढंगका भवन था। चारों ओरसे खूब खुला तथा चौराहेपर था। यहाँसे भारतीय राजदूतका मकान मुश्किलसे चार सौ गज होगा। राजप्रासाद भी उतना ही दूर था।

काबुल होटल काबुलमें ठहरनेकी एकमात्र जगह है। सरकारी होटल है। विदेशी अथवा जिन्हें यहाँ जहाज बदलकर दूसरे देशोंमें जाना होता है, यहीं ठहरते हैं। काबुलमें मकानका किराया बहुत महँगा है। बनारसमें जो मकान चालीस रुपयेमें मिलेगा वही वहाँ चार सौ रुपये माहवारमें भी सस्ता समझा जाता है। काबुल होटलमें एक व्यक्तिके ठहरने और खानेका भारतीय बारह रुपया या अफगानी एक सौ बीस रुपया देना पड़ता है। भारतीय नोट और सिक्का यहाँ खुलेआम चलता है। उसे कलदार कहते हैं। खुले-बाजार बिक्री होती है। अफगान राजबैंक भी खुलेआम खरीदता है। अपने रुपयेकी यह इज्जत देखकर हृदय फूल उठा। सरकारी रेट एक भारतीय रुपये-का साढ़े चार अफगानी रुपया है। परन्तु यहाँके सब बैंक तथा बाजारमें एक रुपया दस अफगानीमें भुन जाता है। काबुल होटलमें भी रुपया भुनानेकी व्यवस्था है।

आर्याना होटल भी सरकारी है। राज-अतिथियोंके लिए सरकारने बनवाया है। फ्लश पाखाना तथा पानीकल लगा है। इस होटलका एक तरहसे हम लोगोंने पहले-पहल ठहरकर उद्घाटन किया। यहाँ भी सरकारने हम लोगोंसे बारह रुपये रोजके हिसाबसे लिया। इसमें खाने और रहने, दोनोंकी व्यवस्था थी।

अभी काबुलमें लोग समझते भी नहीं कि आर्याना कोई होटल भी है शायद एकाध सालमें यह प्रसिद्ध हो जायगा।

मुसलिम देशोंमें निरामिष भोजन मिलना कठिन है। हम लोगोंने पहले ही लिख दिया था। सरकारकी तरफसे माकूल इन्तजाम था। सब स्थिति समझनेपर यही निश्चय किया गया कि उबली तरकारी और नान खाना ही ठीक होगा। अफगानिस्तानमें तवेपर बनी रोटी कोई नहीं खाता। कमलके पत्तेसे भी बड़ी, खमीर डालकर 'नान' (एक तरहकी रोटी) बनायी जाती है। अफगानी लोग सूखा खाना पसन्द करते हैं। तरल पदार्थका सेवन बहुत कम देखा गया। नान और अंगूर या नान और गोश्त आम तौरसे सार्वजनिक आहार है।

घी गायका नहीं मिलता। गायका दूध भी कम होता है। गायें बहुत छोटा-छाटी, पतली-दुबली होती हैं। दूध और मलाई-की दूकान कहीं दिखाई न पड़ी। घी बकरी या भेड़का ही मिलता है। दूधकी भी वही अवस्था है। चर्बीका प्रयोग तरकारी बनानेमें प्रायः किया जाता है। तरकारी खूब होती है। काला बैगन अपने यहाँ ही जैसा होता है। टमाटर, गोभी, पातगोभी, आदी, पालक, प्याज और आलू अच्छे मिल जाते हैं। सब्जी खाना यहाँ अमीरीकी निशानी है। पालकके सागमें भी अण्डा डालकर बनाते हैं। रामतरोई अर्थात् भिण्डी भी मिलती है। नमक कम तथा मिर्च नगण्य यहाँके भोजनकी विशेषता है। काबुलमें सभी हिन्दुस्तानी भाषा समझ लेते हैं। हम लोगोंके होटलवाले हिन्दी खूब समझते थे। नमस्ते भी कहते थे।

भूख लगी थी ही। खाना सामने आते ही उसे देखने लगा। भातके साथ दाल, दही या रसेदार तरकारी प्रायः मिलाकर खायी जाती है। इनका यहाँ अभाव था। दाल खानेका रिवाज कम है। कहावत है कि अनाजसे अनाज कौन खायेगा?

टेबुल-कुर्सीपर खानेका ढंग जोर पकड़ रहा है। कसबों तथा देहातोंमें नानबाईकी दूकानें हमारे यहाँ जैसी गन्दी नहीं होतीं। प्रत्येक दूकानपर कीमती कालीन सुन्दरतापूर्वक बिछा रहता है। हुक्का बीचमें रखा रहेगा। बरतन साफ होगा। हाथ-पैर धोकर बड़े इतमीनानसे गलीचेपर पलथी मारकर बैठ जाइये। हुक्केका कश लगाइये। जो खाना हो शान्तिपूर्वक खाइये। लोगोंको खाने और खिलानेका शौक है। दूकानदार भी अपने ग्राहकको खिलानेमें गर्वका अनुभव करता है। दूकानदारोंमें मेहमानदारीकी भावना होती है। कौन कितना अच्छा अपने ग्राहककी सेवा कर सकता है इसकी होड़ रहती है।

अफगानिस्तानमें कहीं भी चायके साथ दूध या चीनी नहीं मिलेगी। छोटी प्याली और उबलो चायका एक पॉट सामने रखते हैं। प्रत्येक व्यक्तिके लिए एक पॉट, जिसमें एक लोटा चाय अटती होगी, रखा जाता है। उसमेंसे चाय उलटते जाइये, पीते जाइये। चायका स्वाद नहीं मिलता। काफी भी मिलती है लेकिन बहुत कम। माँगनेपर चीनी तथा दूधका प्रबन्ध चायके लिए हो जाता है। चीनी देशमें कम होती है। उसका प्रयोग मितव्ययिताके साथ होता है।

टेबुलपर प्रत्येक व्यक्तिके लिए एक पॉट चाय तथा प्याला रखा गया। हम लोग कुछ घबड़ाये। चायका रंग देखा। वह अत्यन्त हलका था। हरी चायका रंग था। गरम पानी और उसके पीनेमें ज्यादा फर्क नहीं था।

पर्यटनके लिए अफगानिस्तानमें जून मास अच्छा होता है। परन्तु इस मासमें फल नहीं होते। केवल फूलोंकी बहार होती है। फलोंके लिए अक्तूबर और नवम्बर श्रेष्ठ मास हैं। खेतोंमें गेहूँ कट जाता है। मक्का पकने लगता है। अंगूरकी बेलें लद जाती हैं। बादामके पेड़ नारंगीके पेड़ जैसे होते हैं। सेवका पेड़ छोटे

अमरूदके पेड़की तरह होता है । अनार भी फलसे झूल जाते हैं । यह ऋतु भी अच्छी होती है । गर्मीका प्रस्थान तथा बर्फ पड़नेका समय करीब आने लगता है । इस ऋतुमें अंगूर, अनार, बादाम, अखरोट, बब्बूगोशा, नाशपाती खूब होती है ।

अफगानिस्तानमें पानी बरफ पड़ते समय अर्थात् जाड़ेके मौसममें बरसता है । तीन इंच प्रतिवर्षसे अधिक वर्षा नहीं होती । तीन या चार मासतक बर्फसे देश ढका रहता है । चिनारके वृक्ष कुछ होते हैं । सफेदाके पेड़ भी होते हैं, कश्मीर जैसे नहीं बल्कि छोटे होते हैं । काबुल यद्यपि समुद्रकी सतहसे ६ हजार फुट ऊँचा है, परन्तु कहीं देवदार तथा चीड़के वृक्ष नहीं मिले । अफगानिस्तानका साधारण धरातल समुद्रकी सतहसे ३ हजार फुट ऊँचा है । शहतूलका वृक्ष समस्त अफगानिस्तानमें मिलेगा । भारतमें जो स्थान आमके पेड़का है वही यहाँ शहतूलका है । लोग केवल तूत शब्दका प्रयोग करते हैं । लाल और श्वेत दो प्रकारका होता है । उसके फलको सुखाकर रख लिया जाता है । वह चावलकी तरह बोरीमें भरा मिलता है । जाड़ेमें उसे भिगोकर, उबालकर तथा रोटीमें प्रयोग करते हैं । आम, जामुन, कटहल, बड़हर, शरीफा, अमरूद, मौलसिरी, खिरनी वगैरह नहीं होती ।

सबसे बड़ी विशेषता वहाँके सूर्यका निर्मल प्रकाश है । इतनी निर्मल धूप विश्वमें कहीं नहीं मिलेगी । आसमानमें बादल नहीं । धूलका नाम नहीं । आकाश शुद्ध नीला साफ दिखाई देगा । रात्रिमें शशिरश्मि तथा नक्षत्रोंकी चमक अत्यन्त लुभावनी लगती है । नमी अथवा वायुमें आर्द्रता न होनेके कारण मन स्वतः प्रफुल्लित रहता है । दिनमें कुछ गरम अथवा सूती कमीजके ऊपर सूती कुरता पहननेसे काम चल जाता है । रात्रिमें हलका ओढ़ना पर्याप्त होगा ।

इस ऋतुमें फलों और तरकारीकी बहुतायतके साथ एक चीज

और मिली। पहले ही दिन टेबुलपर प्रति व्यक्तिके लिए एक-एक सेरकी एक-एक फाँक श्वेत कोहड़े जैसी काटकर रखी गयी। भारतीय सरदाके समान था। यहाँ सरदा न कहकर खरबूजा कहते हैं। एक टुकड़ा मुँहमें डाला, मुँहसे निकल गया—यहाँ आना भाई सफल हो गया! वह मिश्रीसे भी अधिक मीठा था। उसकी मिठासमें तीखेपनके स्थानपर हलका माधुर्य था। वह इतना स्वादिष्ट था कि वर्णन करना कठिन है। मिठासकी सबसे बड़ी तारीफ यह थी कि वह मुँह नहीं बाँधता था। दाँतोंके नीचे पड़ते ही अनारदानेकी तरह रस निकल पड़ता था। मजार शरीफका खरबूजा सर्वश्रेष्ठ होता है। काबुलसे दूर है।

हम राजअतिथि थे इसलिए मँगाया गया था। खरबूजा एक रुपया सेर बिकेगा तो अनार दो आना सेर। खरबूजा खाना खुशहालीकी निशानी है। बहुतसे तो इतने मीठे होते हैं कि बीचका हिस्सा काटकर फेंक दिया जाता है। इस खरबूजेसे न तो हम लोगोंका मन भरा और न पेट। यदि केवल इसीके लिए अफगानिस्तान सौ बार आना पड़े तो कोई भी खुशीसे आयेगा। इस खरबूजेके सामने लखनऊ और जौनपुरका खरबूजा फीका मालूम पड़ता है। इसके स्वादके शतांशको भी वह नहीं पा सकता।

आर्याना होटलमें सभी आधुनिक प्रसाधन थे। हमें वह घर जैसा ही लगा। यहाँके कर्मचारियोंके 'नमस्ते' तथा उनकी हिन्दुस्तानी बोलीसे एक लहमेके लिए भी ख्याल न आया कि हम हिन्दुस्तानके बाहर हैं।

हवाई अड्डेसे काबुल बंकके चौराहेतक सीधी चौड़ी सड़क है। यही यहाँका राजपथ है। राजाका राजप्रासाद, आर्याना होटल इसी सड़कपर स्थित है। महालका नाम शेरपुर है। सड़क नयी बनी है। सड़कके दोनों किनारोंपर चिनारके वृक्ष लगाये जा रहे हैं। इस सड़कके एक छोरपर हवाई अड्डा तथा दूसरेपर

काबुलका चौराहा है।

चौराहेके मध्यमें पख्तूनिस्तानका झण्डा फहराता है। पख्तून स्तम्भ है। पख्तूनिस्तान हमारा है, सब पख्तून एक हैं, यहाँसे यही ध्वनि उठती है। प्रत्येक पठान इस स्थानको बड़ी श्रद्धाभक्तिकी दृष्टिसे देखता है। इसी चौराहेकी दाहिनी ओर काबुल होटल और अफगान बंक है। इस सड़कको काबुल नदीके तटसे मिलानेका प्रयास किया जा रहा है। पुराने महाल तोड़े जा रहे थे। बायीं तरफ ताँगोंका अड्डा है। ऊँचे भवनोंका निर्माण हो रहा है।

राष्ट्रीय सभाके अध्यक्षसे भेंट

मध्याह्न भोजनके पश्चात् हम लोग भारतीय दूतावास पहुँचे। श्री हस्कर भारतीय राजदूत हैं। उनके साथ राष्ट्रीय सभाके अध्यक्ष महामहीम श्री नौरोज खाँसे हम भेंट करने चले। स्थान आर्याना होटलसे एक फरलाँगपर था। श्री नौरोज खाँ रूस, इंग्लैण्डमें रह चुके हैं। हिन्दी भी जानते हैं परन्तु बोल नहीं सकते। अफगानिस्तानमें सभी लोग हिन्दी समझ लेते हैं। बोलनेमें कठिनाईका अनुभव करते हैं। संसद् भवनके एक कक्षमें अध्यक्ष महोदयसे मुलाकात हुई। वे बड़े ही शिष्ट, स्पष्टवक्ता तथा मितभाषी हैं दुभाषियेके द्वारा बातें हुईं। शिष्टमण्डलकी ओरसे मैंने बात की। लगभग पौन घण्टा बातचीत हुई। बातचीतमें हमने एक बहुत ही उच्चकोटिके इन्सानका अनुभव किया। उन्होंने हर प्रकारकी सुविधा देनेका वादा तथा अफगानिस्तान आगमनका स्वागत किया। हमने भी उन्हें भारत आनेके लिए निमन्त्रण दिया।

भारतीय पर्यटक अफगानिस्तानकी उपेक्षा करते रहे हैं। हम केवल अफगानिस्तान देखने आये हैं, यह जानकर लोगोंको आश्चर्य
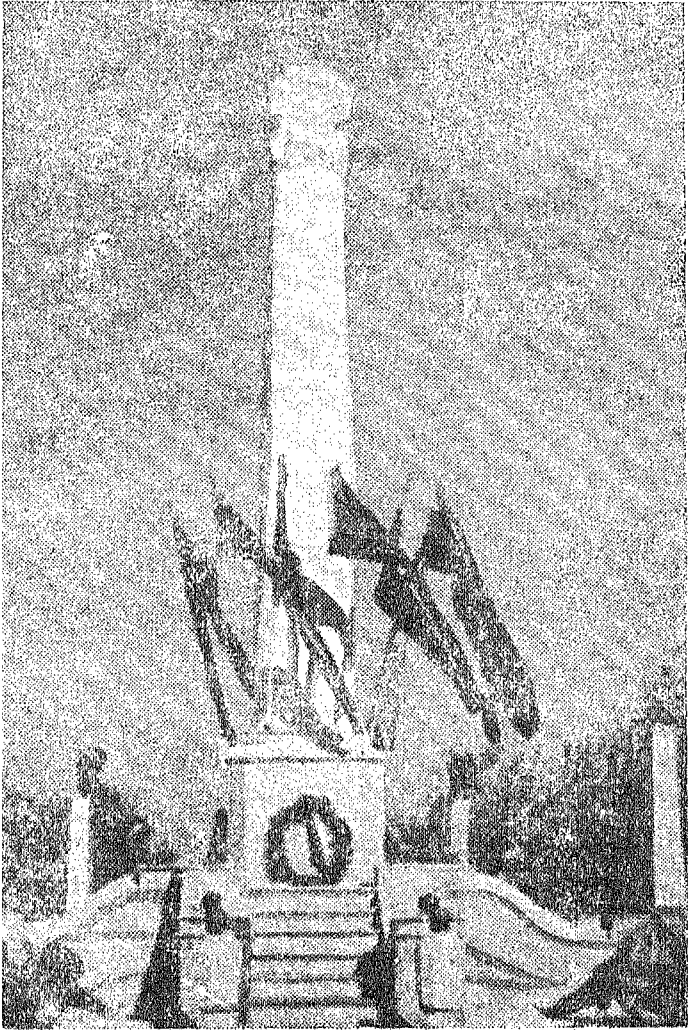
स्वातन्त्र्य स्तम्भ

होता था। भारतीय यहाँ रुककर या तो मास्को जाते हैं या यूरोप। कोई यहाँ ठहरता नहीं। दूतावास भी चकित था। सब यही पूछते थे, यहाँ हम क्यों आये। पर्यटनके लिए अफगानिस्तानको क्यों चुना। भारतीय दूतावाससे सहयोग तथा सहानुभूति प्राप्त करनेमें हम विफल रहे। उसकी समझमें अन्ततक न आया कि हम हैं क्या बला! क्यों यहाँ आये हैं? हमारा क्या प्रयोजन था? लोगोंसे मिल-जुलकर क्या होगा? भारतका इसमें क्या उद्देश्य है?

राजनीतिक पर्यवेक्षकों तथा सुलझे लोगोंने हमारे कार्यक्रमको पसन्द किया। हमने पर्यटनकी दृष्टिसे महत्त्व दिया। जानकार अफगानी बहुत ही खुश थे। अफगानिस्तान जैसे पिछड़े मुल्कमें लोग कम आते हैं। देखनेकी चीजें भी कम हैं। यूरोपियन तथा अमेरिकन लोगोंके देशकी आब-हवा तथा उपज वहाँसे मिलती-जुलती है। उन्हें नयी बात नहीं मिलती। उनमें यहाँके लिए कम आकर्षण होता है। अफगान दूतवासको जब यह मालूम हुआ कि हम पर्यटनके लिए जा रहे हैं तो वह बहुत खुश हुआ। भारतको ११ करोड़ विदेशी मुद्रा पर्यटकोंसे मिलती है। विदेशी मुद्राप्राप्ति निमित्त प्रत्येक देश पर्यटनको प्रोत्साहित करता है। दिल्लीके सफदरजंग हवाई अड्डेपर प्रथम मन्त्री गुलाब शाह स्वयं हमें छोड़ने आये। हमारे पासपोर्टके एक फार्मपर हस्ताक्षर तथा मुहर नहीं थी। मेरा आज जानेका भी निश्चय नहीं था। मैं दूसरे दिन राधारमणजीके साथ जानेवाला था। उन्होंने तुरत वहीं दस्तखत कर दिये। बोले—जाइये सब ठीक होगा। कोई फिक्रकी बात नहीं। उनके हाथमें तस्बीर थी। साधारण अफगान धार्मिक होता है।

विदेशोंमें प्रायः भारतीय यूरोपीय कपड़ोंमें जाते हैं। यह ठीक नहीं है। मैं दक्षिण-पूर्व एशिया आदि तथा अफगानिस्तानमें धोती

कुरतेमें ही रहा। चूड़ीदार पाजामा और शेरवानीमें पाकिस्तानी होनेका शक पैदा हो जाता है। धोती-कुरता मौलिक भारतीय राष्ट्रीय पोशाक है। उसे देखते ही लोग राष्ट्रीयता समझ जाते हैं। अफगानिस्तानमें यही हुआ।

अफगानी और वहाँके हिन्दुओंकी पोशाकमें बिलकुल भेद नहीं है। हिन्दू और मुसलमान सभी स्त्रियाँ बुर्केका प्रयोग करती हैं। अफगानी लड़कियाँ बिन्दीके स्थानपर काला टीका गुदवा लेती हैं। हमें भ्रम हुआ कि वे हिन्दू होंगी। भारतमें मुस्लिम महिला गुदना नहीं गुदवाती, परन्तु मालूम हुआ, देहातोंतकमें यही रिवाज है। भारत तथा पाकिस्तानमें मुसलमान महिलाएँ सरपर बिन्दी लगानेसे घबड़ाती हैं। बिन्दी लगाना जैसे हिन्दू महिलाओंकी ही चीज है। वे उसे धर्मका एक रूप मान लेती हैं। भारतमें धर्म यही समझा गया कि जो एक करे, उसका ठीक उलटा दूसरेको करना चाहिये। धोती-कुरतेने हमें हर जगह सहायता पहुँचायी, हिन्दुओंसे मिलने और जाननेका मौका दिया। अफगानियोंको जैसे हमारी पोशाक बताती गयी कि हम हिन्दुस्तानी हैं।

अफगानिस्तानमें पाकिस्तानके प्रति अच्छी भावना नहीं है। वे उनसे घृणा करते हैं। हमारी धोतीके कारण जरा भी हिन्दी जाननेवाला तुरन्त पास आकर बोलता और मेहमानदारी कबूल करनेके लिए कहता था। दोस्तीकी हामी भरता।

शामको हम टहलने चले। सबकी आंखें हमारी ओर उठती थीं। शहरके बीच काबुल नदी है। नदीमें पानी नहीं-सा था। दोनों ओर सड़कें हैं। दूकानें हैं। यही स्थान काबुलका हृदय है। नदीपर बहुतसे झूलन तथा लोहेके पुल बने हैं। नदीके तटपर थोड़ी ऊँची चहारदीवारी बनी है। इसी दीवालपर बहुत-सी कालीनें बिछायी रहती हैं। सौदागर घूमते रहते हैं। कालीनकी

खरीद-बिक्री होती है।

कालीनकी यहाँ बहुत चाल है। कालीन व्यापारकी एक मुख्य वस्तु है। विदेश खूब जाती है। भारतकी कालीन मोटी बनती है। यहाँकी पतली, किन्तु मजबूत और टिकाऊ होती है। पुरानी कालीनका दाम नयीकी अपेक्षा अधिक होता है। एक कालीन गृहस्थीमें पचास वर्षतक चल जाती है। सौ वर्ष कालीनकी जिन्दगी मानी गयी है। कालीन घरोंके सजानेके काममें आती है। इस्लामी देश होनेके कारण दीवालोंपर चित्रकारी नहीं की जाती। चित्र भी नहीं लगाया जाता। इस्लाममें वर्जित है। अतएव कालीन दीवालोंपर टाँग देते हैं। सुन्दरसे सुन्दर कालीन दिवालोंपर झूलती मिलेगी। उनसे कम-कीमती फर्शके काम लायी जाती है।

काबुलमें हिन्दू तथा सिख दूकानदार बहुत मिलेंगे। टहलते हुए उनकी दूकानोंपर गये। वे बड़े प्रेमसे मिले। काबुली हिन्दुस्तानमें सूद कमाने जाता है। यहाँ हिन्दू रुपया पैदा करने आता है। हम आये थे अपनी जेब खाली करने। काबुलमें हिन्दुओंके महाल हैं। इन्हें 'हिन्दू गूजर' तथा 'आशामाई' कहते हैं। सिख लोग लगभग दो सौ वर्षोंसे यहाँ हैं। पाकिस्तान हिन्दुस्तानके बटवारेके समय सीमान्त प्रदेश अर्थात् फ्राण्टियरके बहुतसे हिन्दू और सिख अफगानिस्तानमें आबाद हो गये हैं। वे यहाँकी राष्ट्रीयता भी ले चुके हैं। उन्हें अफगानी हिन्दू कहा जाता है। भारतीय हिन्दू और यहाँके हिन्दुओंमें सद्भावनाका अभाव पाया। भारतीय हिन्दू केवल रोजगार और रुपया पैदा करनेमें उसी प्रकार लगा रहता है जैसे भारतमें काबुली पठान। हमने दोनोंको ही सुझाव दिया कि यह भावना घातक है। भारतीय हिन्दुओंकी बड़प्पनकी भावना बुरी लगी। अफगानिस्तानमें मुसलमानोंकी आबादी ९९.५ होगी। कुल आबादी एक करोड़ बीस लाख है।

काबुलकी आबादी डेढ़ लाख होगी, परन्तु वह बढ़ती जा रही है।

हिन्दुस्तानियोंका मुख्य बाजार अफजल बाजार है। यहाँ सभी दूकानदार हिन्दुस्तानी हैं। हम लोग यहाँ पहुँचे। बाजारमें प्रातःकाल आनेका वादाकर लौट चले। यह भी निश्चय हुआ कि प्रातःकाल ७ बजे यहाँके गुरुद्वारों तथा मन्दिरोंमें भी भ्रमण किया जाय।

भारतीय राजदूत श्री हस्करने राष्ट्रीय सभाके अध्यक्षके सम्मान-में भोज दिया था। संयोगसे हम भी आ गये थे। अतएव रात्रिका भोजन वहीं हुआ।

भारतीय दूतावास एक बड़ा कूड़ाखाना मालूम हुआ। हस्कर साहबका मकान एक छोटा राजप्रासाद था। कालीन खूब बिछी थी। सजावट सुन्दर थी तथा रुचिकर थी।

ठीक आठ बजे राजदूत महोदयके यहाँ पहुँचे। लोग आने लगे थे। अचानक एक सज्जनने पूछा—क्या आप लोग आमिष भोजी हैं। हम लोगोंने निरामिषकी बात कही। श्रीमती हस्करने तुरन्त कुछ तरकारी बनानेके लिए कहा। खाना मिलनेपर यह कहना ही पड़ा कि रसोइया चतुर तथा रसज्ञ था। श्रीमती हस्कर एक चतुर हिन्दू गृहिणी साबित हुईं। इतने जल्द भोजन तैयार करना कठिन था। यहाँ भी खरबूजा मिला। हमारे मित्र श्री नवाब सिंह चौहान खरबूजेपर फिदा हो गये थे। उन्हें काबुल ही खरबूजामय मालूम होता था। अकबरभाई निरामिष भोजी हैं जानकर अफगानिस्तानके मुसलमानोंको आश्चर्य हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल ठीक ६॥ बजे हम निकल पड़े। काबुलके ताँगेवाले बड़े उलझे लोगोंमेंसे हैं। मोल-चाल खूब होता है। दिल्लीमें जितनी दूरीका आठ आना देना पड़ेगा उतने दूरका काबुलमें दो रुपया लगेगा। सवारीपर चढ़नेका कम रिवाज है। टैक्सी भी थोड़ी है। वे किराया अपने स्टेशनसे आने तथा

पहुँचाकर फिर लौटनेतकका जोड़कर लेते हैं। टैक्सी और ताँगेवाले दोनों ही अच्छे नहीं साबित हुए।

हिन्दूगुजर मुहल्लेमें हम ताँगेसे तरे। ताँगेवाला मुहालसे बहुत दूर उतारकर चलता बना। हमारी शकल हिन्दुओंकी-सी थी। अकबरभाई भी गांधीजीकी तरह लुंगी तथा चादर ओढ़ते थे। उन्हें कोई मुसलमान न समझता था। मालूम होनेपर लोग आश्चर्य करते थे। हिन्दूगुजर मुहाल बड़ा है। हिन्दुओं तथा सिखोंकी दूकानें मिलीं। कुछ लोग आते-जाते भी मिले। अफगानी हिन्दू और सिख बाहरवालोंसे मिलनेमें हिचकते हैं। एक भारतीय सिख मिले। उनसे गुरुद्वारा श्री हरिरायका पता पूछा। वे बड़े प्रेमसे संग हो लिये।

दोनों पट्टीके दूकानदारोंकी आँखें हमारी ओर उठती जाती थीं। काबुलमें आठ गुरुद्वारे मुख्य हैं। गुरुद्वारा श्री हरिराय प्रमुख है। गुरुद्वारा बिलकुल भारतीय मकानतुल्य था। बीचमें आँगन था। दूसरी मंजिलपर लोग बैठे थे। हम भी बैठे। वहाँ हिन्दू, सिख महिलाएँ काफी संख्यामें थीं। कुछ बुर्का लिये थीं, कुछ भारतीय ढंगकी चादर। अपने लोगोंके बीचमें जाकर अभूतपूर्व आनन्दका अनुभव हुआ। लोगोंके मुखोंकी ओर देखा। उनकी आँखोंमें कौतूहल था। हम क्यों आये। क्या प्रयोजन था। हम कौन हैं, यह जानना चाहते थे। किन्तु कोई बोल न सका। हिन्दू वहाँ बहुत दबे हैं। उनमें कोई राजनीतिक अथवा सामाजिक जीवन न था। हमसे मिलकर शायद काई शंका करे। सरकारमें शिकायत हो जाय आदि भावनाओंका उठना स्वाभाविक था। गुरुद्वारेमें लोगोंने चाय पिलायी। एक-एक बूँद चायमें न जाने कितना स्नेह, कितनी स्मृतियाँ गुथी थीं कि लिखना कठिन है।

यहाँ हमने एक पथप्रदर्शक माँगा। एक भारतीय नेशनल

तुरन्त तैयार हो गया। उनके साथ सभी गुरुद्वारोंमें दर्शन किया। गुरुद्वारोंमें अखण्ड ज्योति जलानेकी प्रथा है। प्रत्येक गुरुद्वारेमें बहुत अच्छी सफाई मिली, कीमती कालीन सुन्दरता-पूर्वक सभी जगह बिछी मिली। प्रत्येक गुरुद्वारा बाहरसे चौमंजिला मकान मालूम होता था। वहाँके सिखांके सीमित सामाजिक जीवनका केन्द्र था।

हिन्दूगुजर महाल पुरानी दिल्लीका एक मुहल्ला मालूम होगा। दूकानोंमें पूड़ी-तरकारी, जलेबी, लड्डू, चावल, दाल, रोटी सब दिखाई देगा। मकान ५ या ६ मंजिलेतक हैं। सभी मिट्टीके मकान हैं, लेकिन गलियाँ अत्यन्त गन्दी हैं। पाखाना गलियोंमें गिरता है। नाली गलीके ऊपर बहती है। अगर काबुलमें ठण्ढक न पड़ती तो महामारी अवश्य फैल जाती। खिड़कियोंसे झाँकती हमें भारतीय नारियाँ मिलीं। हमें देखते ही चकित हो गयीं। उनकी कौतूहलपूर्ण स्नेहमयी मुद्रा हम भूल न सकेंगे। उनके पुरुखोंके देशसे हम आये थे। वे भारत न देख सकेंगी। हम भारत और अफगानिस्तान दोनों देख रहे थे। एक वृद्धाकी आँखोंमें आँसू देखा। वह काशी दर्शन करने आना चाहती थी, लेकिन जीवनमें सम्भव न था। मेरा मस्तक झुक गया। दिल भारी हो गया। यहाँ आनेके उत्साहमें कमी आने लगी थी।

चारों ओर मकान और बीचमें चौक होता है। प्रत्येक चौक और गलीके बीच बड़ा फाटक होता है। काबुलमें राज्योंका उलट-पुलट तथा लूट-मार बहुत होती रही है। अतएव मोरचा और किलेबन्दी प्रत्येक मकान और महालमें मिलेगी।

यहाँके हिन्दुओंका विचित्र किस्सा है। महमूद गजनीने भारतपर आक्रमण किया था। उस समय बहुतसे हिन्दू दासतुल्य यहाँ लाये गये थे। उन्हींके गुजरके लिए यह स्थान दिया गया था। इसीसे इस स्थानका नाम 'हिन्दूगुजर' हो गया है।

हिन्दुओंपर किसी मुसलिम शासकने कभी अत्याचार नहीं किया। किसीकी बहू-बेटीपर किसीने आँख नहीं उठायी। हिन्दुओंका बहू-बेटियोंको भगाने, उन्हें मुसलमान बनाकर अपने यहाँ रख लेनेमें किसी मुसलमानने गत ७ सौ वर्षोंमें कभी गर्वका अनुभव नहीं किया। हिन्दूकी बहू-बेटी और मुसलमानकी बहू-बेटीमें कोई अन्तर नहीं था। एक जाति दूसरेका हाथ बँटा अपना घर विश्वासके साथ सौंप देती है। कितना अन्तर भारत और अफगानिस्तानके लोगोंमें है। बच्चा सक्काके समय भी हिन्दुओंपर आँच न आयी। वहाँकी सहिष्णुता एवं भाईचारा देखकर भारतके मुसलमानोंपर दया आती है। उनके कारण पाकिस्तान इसलिए बना कि वे हिन्दुओंके साथ न रह सके। इसे दैवकी विडम्बना कह सकते हैं।

हिन्दुओंके मन्दिर गुरुद्वारोंके समान मकानोंमें हैं। मन्दिर-तुल्य वहाँ कोई इमारत नहीं मिलेगी। ठाकुरद्वारे कई हैं। एक स्थानपर तो छोटे-छोटे बच्चोंको हिन्दी पढ़ायी जा रही थी। अफगानिस्तानमें सरकारकी तरफसे केवल परशियन और पश्तो पढ़ानेका प्रबन्ध है। हिन्दुओंका अपना कोई स्कूल नहीं है। वहाँ एक स्कूलकी नितान्त आवश्यकता है।

हिन्दुओंका दूसरा स्थान 'आशामाई' का मन्दिर है। वहाँका पर्वत भी आशामाईके नामसे प्रसिद्ध है। बच्चा सक्काने इस पहाड़ीपर अपना डेरा जमाया था। किन्तु उसने भी मन्दिर या किसी हिन्दूपर हाथ नहीं उठाया। आशामाई एक देवी हैं। यह मन्दिर बहुत ही सुन्दर बना है। मन्दिरमें शहतूतके पेड़ और अंगूरकी बेल खूब लगी हैं। पानीकी नहर भी मन्दिरमें आयी है। आस-पासके मुसलमानोंके घरोंमें मन्दिरकी नहरसे पानी भिश्ती ऊपरी कामोंके लिए ले जाता है। शंकरका मंदिर तथा यज्ञशाला भी है। स्थान बहुत ही साफ-सुथरा तथा ज्योतिर्मय प्रतीत होता था।

काबुलमें एक सन्त पीर रतनदास हो गये हैं। इनका भी स्थान है। उसमें अनेक महन्तोंकी समाधियाँ बनी हैं। पीर रतनदास पहुँचे फकीर हो गये हैं। वे एक शहतूतके नीचे बैठे थे। बादशाहके आदमी काटने आये। पूछनेपर कहा गया शहतूत सूख गया है। काट दिया जाय। सन्तने कहा—वृक्ष हरा है। वृक्ष हरा हो गया। बादशाहके पास खबर पहुँची। शहतूतका कटना मुल्तवी कर दिया गया। पीर रतनदासकी प्रसिद्धि हो गयी। उनके नामके स्थान पेशावर तथा भारतमें भी कई स्थानोंपर हैं। स्थानके महन्तजी बहुत ही शिष्ट थे। उन्होंने इसी मन्दिरकी फुलवाड़ीमें लगे सेव प्रसादस्वरूप हम लोगोंको दिये। चारों ओर मुसलमानोंकी आबादी है। परन्तु सब इस स्थानकी कदर करते हैं। कभी किसीने यहाँपर दंगा या फसाद करनेका प्रयास नहीं किया।

बाबरकी कब्र देखनेकी इच्छा थी। उसका कारण था। बाबर आगरामें दिवंगत हुए थे। मजारके लिए काबुलका स्थान अपनी जिन्दगीमें चुना था। उनकी लाश भारतसे लाकर यहाँ दफन की गयी। मनमें विचार उठा। बाबरने इस स्थानको क्यों चुना?

बाबरबागमें पहुँचे। काबुलसे दो मीलका फासला होगा। एक पत्थरका बँधा सरोवर है। उसमें लोग कूदते और नहाते हैं। चिनारके पुराने वृक्ष खड़े हैं। शायद तीन सौ वर्षके होंगे। पानीका चश्मा है। पृष्ठभागमें ऊँचा पर्वत है। नीचे हरी-भरी घाटी है। काबुल जैसे सूखे स्थानमें और किस चीजकी आवश्यकता हो सकती थी।

यहाँकी अभिरम्यता, प्राकृतिक दृश्य और शान्ति देखकर ही बाबरने इस स्थानको चुना होगा। सूखे देशमें पानीका चश्मा हो, हरी-भरी उपत्यका हो, फलोंसे लदे वृक्ष हों, बेलोंमें अंगूरके गुच्छे झूलते हों, वृक्षकी शीतल छाया हो, सरल मानव जीवन हो, फिर

किसीको क्या चाहिये ? तुर्किस्तानसे बाबरको हटना पड़ा था। अफगानिस्तानमें अपना राज्य कायम किया। अफगान फौजसे हिन्दुस्तान फतह किया। हुमायूँके खातिर खुदासे दुआ माँगी— पुत्र अच्छा हो जाय। खुदा लड़केकी बीमारी बापको दे दे। बाबरकी प्रार्थना भगवान्ने सुन ली। पुत्र क्रमशः अच्छा होने लगा। पिता धीरे-धीरे बीमार होने लगा। उस बीमारीसे बाबर
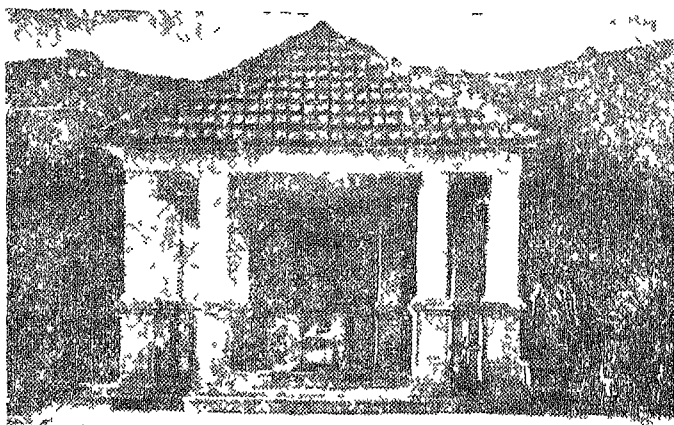
बाबरकी कब्र

उठा नहीं। हुमायूँके स्वस्थ होते ही वह खुदाके घर चल बसा। वह एक महान् वीर था। वह उन्हींके बीचमें चिरनिद्रा लेते रहना चाहता था, जिन्होंने उसे बिगड़े दिनोंमें आवास दिया था, उसके साथ भारत फतह करने आये थे। बाबर उनके बीच कयामततक रहकर जैसे उनके अहसानको उतार रहा हो।

बाबरकी मजार सादी है। उसकी बगलमें उसके दो लड़कों अर्थात् हुमायूँके दो भाइयोंकी कब्रें हैं। एक ओर मुगल-वंशके

किसी बादशाहकी भी मजार है। द्वितीय पानीपतका विजेता, जिसने राणा साँगा तथा इब्राहीम लोदीको पराजित किया था, वहाँ अपनी चिरनिद्रामें सोया है। उसने मुगल साम्राज्यकी नींव डाली थी।

स्थान पसन्द आया। मन चला, कूदकर नहा लूँ। परन्तु देश-कालका विचारकर रुक गया। यह छोटा सरोवर झेलम नदीके उद्गम कश्मीरके अनन्तनागतुल्य है। अनन्तनाग अठपहला है। वह चौकोर तथा बड़ा है। सुन्दरता और पानीकी जो स्थिरता अनन्तनागमें है, वह यहाँ नहीं मिलती। अनन्तनाग नीलमका एक बड़ा टुकड़ा मालूम होता है। उसका पानी बड़ा ही स्थिर है। यहाँ तो चश्मेके पानाकी हरकत सरोवरमें स्पष्ट प्रतीत होती है। सम्भव है कि इसीको देखकर अनन्तनागको बनानेकी कल्पना की गयी हो।

बालाहिसारका प्रसिद्ध दुर्ग शहरके अन्दर एक पहाड़ीपर है। दुर्ग बहुत बड़ा नहीं है। मिट्टी, पत्थर और ईंटा, तीनोंके संयोग-से बना है। मिट्टीका अंश अधिक है। अनेक युद्धोंसे इसका सम्बन्ध रहा है। चुनार, चित्तौड़, आगरा अथवा दिल्लीके लाल किलेकी तुलनामें छोटा मालूम होता है। आजकल सैनिक विद्यालय है।

अमीर अमानुल्लाके महलके सामने अफगानिस्तानका संग्रहालय है। यहाँपर सिक्कोंका संग्रह अपूर्व है। हाडा, बामियान, बेग्राम आदि स्थानोंसे खनन-कार्यों द्वारा प्राप्त मूर्तियाँ, हाथीदाँतके सामान, पलस्तरोंपर मिली चित्रकारी सभी अच्छे ढँगसे रखी है। भारतीय इतिहासके विद्यार्थियोंके लिए जितनी अधिक सामग्री एक ही स्थानपर यहाँ मिलेगी उतनी शायद ही कहीं प्राप्त हो सके। पुराने अस्त्र-शस्त्रोंका भी संग्रह अच्छा है। नूरिस्तान वगैरहमें प्राप्त काष्ठकी मूर्तियाँ भी सुरक्षित रखी गयी हैं। प्रत्येक खुदाईके स्थान-

में प्राप्त सामग्रीके लिए एक-एक कमरा अलग रखा गया है। हाथी-दाँतपर बौद्ध तथा जातककथाएँ उत्कीर्ण मिली हैं। वे अद्भुत हैं। उनसे तत्कालीन सामाजिक जीवनपर काफी प्रकाश पड़ता है। इस संग्रहालयको बिना देखे जो भी भारतीय इतिहास लिखना चाहेगा उसका कार्य अधूरा ही रहेगा।

बच्चा सक्काको पराजित कर अफगानिस्तानमें स्वर्गीय शाहंशाह श्री नादिरशाहने एक नये राजवंशकी स्थापना की। उनके पुत्र शाहंशाह जहीरशाह अफगानिस्तानके बादशाह हैं। स्वर्गीय श्री नादिरशाहके पिता तत्कालीन काबुलके अमीरों द्वारा भारतमें निष्कासित थे। उनका जन्म देहरादूनमें हुआ था। वहींपर उन्होंने शिक्षा पायी थी। उनपर भारतीयताकी छाप थी। अफगानिस्तानको उन्होंने प्रगतिकी दिशाकी ओर बढ़ाया। उन्हींके समयमें ध्वंसावशेषों तथा पुरातत्व विभागका काम सुचारुरूपसे आरम्भ किया गया। उन्होंने ही बच्चा सक्कासे अफगानिस्तानको मुक्त किया था। बच्चा सक्कासे मुक्ति पानेके स्मारकस्वरूप काबुलमें प्रवेश करते ही 'निजात स्तम्भ'—मुक्तिस्तम्भ मिलता है। यह सादा और सुन्दर है। बीच चौरस्तेपर बना है। इसके दाहिनी तरफ चमन-ए-हजूरी है। यह खेल तथा परेडका मैदान है। अफगान स्वतन्त्रता-दिवस २७ मईको प्रतिवर्ष यहाँ मनाया जाता है। निजात बाजार वामपार्श्वमें मैदानकी ओर मुख किये बना है। मैदानके पूर्वमें तया-ए-मरेजान है, राज्यका कब्रिस्तान है। यह छोटी-सी पहाड़ी है। शाहंशाह नादिरशाहकी यहाँ मजार है। गांधीजीकी समाधिपर विदेशी तथा सम्भ्रान्त व्यक्ति पुष्प अर्पण करते हैं। उसी प्रकार यहाँ भी पुष्प चढ़ानेकी प्रथा हो गयी है। हमने भी पुष्पांजलि अर्पित की। सरदार सुलतान महमूद खाँ तथा राजवंशके अन्य लोगोंकी कब्रें हैं। सुलतान नादिरशाहकी मजारपर बहुत ही

अच्छी इमारतका निर्माण हो रहा है। बननेपर यह काबुलका अत्यन्त दर्शनीय स्थान हो जायगा। ताजमहल श्वेत संगमरमरका है। यह गौना अफगानिस्तानके कीमती मारबलका बन रहा है। इसकी शैली पुरानी नहीं किन्तु आधुनिकतम है। अभी चतुर्थांश भी नहीं बना है, केवल बीचका गुम्बद बनकर तैयार हो गया है। उसपर मारबल लगाये जा रहे हैं।

दफन किया गया पूरा स्थान कीमती कालीनोंसे ढका है। लोगोंने जो गुलदस्ते अर्पित किये हैं वे करीनेसे सजाकर रखे गये हैं। प्रत्येक मजार मूल्यवान् शालोंसे ढकी है। वे लाल, हरे तथा कितनी ही रंगोंके थे। आनेपर मालूम नहीं होता कि किसी कब्रिस्तानमें खड़े हैं।

मैदानसे चार फर्लांग उत्तर सैनिक अस्पताल, सुरक्षा मन्त्रणालय, केन्द्रीय कस्टम हाउस है। सुरक्षा मन्त्रणालयके पश्चात् सैनिक क्लब, ओलिम्पिक बँगला और नया दुर्ग, जिसे किला-ए-जंगी कहते हैं, बना है। सुरक्षा मन्त्रालय तथा कस्टम हाउसके मध्य तृतीय अफगान युद्ध (सन् १९१९) के स्मृति-स्वरूप स्वातन्त्र्य-स्तम्भ निर्मित हैं। तृतीय अफगान युद्ध भारत सरकार अर्थात् ब्रिटिश और अमीर अमानुल्लाके बीच हुआ था। उस समय स्वर्गीय बादशाह नादिरशाह अफगान फौजके सिपहसालार थे। स्मारकके बाद अर्ग अर्थात् राजप्रासाद, दिलकुशा महल, सालमखाना तथा राजकुटुम्बके बँगले बने हैं। उसके पश्चात् ही स्वर्गीय अमीर अब्दुर्रहमान खाँकी मजार है। शहरके पश्चिमी तरफ मशीनखाना अर्थात् टकसाल है।

काबुलसे पश्चिमकी ओर पहाड़ियोंके पश्चात् चहारदेह उपत्यका है। यह आठ मील चौड़ी तथा १२ मील लम्बी है। चारों ओर पर्वतमालाओंसे घिरी है। पहाड़ियाँ एकके बाद दूसरी ऊँची होती गयी हैं। अन्तमें तुषाराच्छादित हिन्दूकोह पर्वतका दर्शन मिलता

है। उपत्यकाकी सिंचाई पागमान तथा काबुल नदियोंके पानीसे होती है।

काबुलसे चार मील उत्तर खैरखाना दर्रेके पश्चात् सिम्त-ए-शुमाली उपत्यका मिलती है। यह ५० मील लम्बी तथा १५ से २० मील चौड़ी है। उपत्यका अत्यन्त उपजाऊ है। फल, मुख्यतया अंगूर, बहुत ज्यादा पैदा होता है। यहाँसे भारतके लिए अंगूर तथा किसमिस भेजी जाती है। पेटियोंमें बन्द की जाती है। खेतसे ट्रकें उन्हें लेकर पेशावर जाती हैं। पेशावरसे पाकिस्तान होते यह भारतमें आती है।

सिम्त-ए-शुमाली जिलेके उत्तरमें चरिकरके समीप बेग्राम है। पुरातत्व खनन-कार्य हुआ है, इसका बहुत ऐतिहासिक महत्त्व है। अधिक अन्वेषण तथा खनन-कार्यकी आवश्यकता है। अभी जो कुछ हुआ है वह समुद्रमें बूँदके समान है।

काबुलसे २० मील दक्षिण लोगर उपत्यका है। यहाँ खूब अनाज पैदा होता है। काबुलके खाद्यान्नकी पूर्ति इसी उपत्यकाकी उपजसे हो जाती है।

तसकरी बौद्ध स्तूप काबुलसे १० मील दक्षिण-पूर्व है। स्तूप अपने पूर्ण आकारमें स्थित है। नींवके पासकी ईंटें खसकती जा रही हैं। स्तूप नेपालके चारुदेवीके स्तूपतुल्य है। कहा जाता है कि तृतीय शताब्दीमें इसका निर्माण हुआ था। स्तूपकी मेखलाका शृङ्गार खम्भेपर खड़ी मेहराबोंसे किया गया है। पाश्चात्य स्थापत्य एवं वास्तुकलाविद् कहते हैं कि मेहराब प्रणाली मुसलमानी कालके पश्चात् भारतमें आयी। पाश्चात्यकी देन है। उनके लिए यह स्तूप एक उत्तर है। हिन्दुओंको मेहराबका ज्ञान था। अगर न होता तो स्तूपमें १७०० वर्ष पहले मेहराबकी आलंकारिक मेखला कैसे बनाते।

काबुलमें भारतीय श्री रामनाथजीने अपने निवासस्थानपर

आनेके दूसरे ही दिन चाय पिलायी। हम लोगोंके अतिरिक्त चार-पाँच व्यक्ति और उपस्थित थे। श्री रामनाथ हींगके सबसे बड़े व्यापारी हैं। इनकी एक फर्म दिल्लीमें भी है। उनका व्यवहार स्नेहपूर्ण था।

काबुलके वर्णनमें अपने तीन मित्रोंके यहाँ हुए भोजनके वर्णनको नहीं छोड़ सकते। श्री भार्गवजी भारतीय राजदूतके निजी सचिव हैं। उनकी श्रीमतीजीने नौ प्रकारकी तरकारियाँ बनाकर खिलायीं। श्री आनन्दजीकी श्रीमतीजीने बड़े शिष्टतापूर्ण ढंग और स्नेहसे हमें रोटी खिलायी, जिसका मिलना काबुलमें कठिन था।

संयुक्तराष्ट्रसंघके अन्तर्गत अनेक भारतीय हैं। यहाँकी विभिन्न योजनाओंमें कार्य करते हैं। श्री भूषणजीने हमें २८ सितम्बरको रात्रिमें भोजन कराया। इस समय प्रायः सभी संयुक्तराष्ट्रकी योजनाओंमें कार्य करनेवाले भारतीय यहाँ एकत्र थे। भूषणजी मजेदार आदमी हैं। हँसमुख हैं। क्या कहते हैं, उन्हें उसका जैसे कुछ ज्ञान नहीं रहता। बात उनके दिलमें छिप नहीं सकती। बातकी वहकमें कुछ ऐसी बातें भी कह देते हैं जो अप्रिय लग जाती हैं। संयुक्तराष्ट्रसंघमें कार्य करनेवाले सभी भारतीयोंकी वहाँ बड़ी सराहना है। उनके कारण भारतका मस्तक ऊँचा उठा है।

भारतीय दूतावासके प्रति लोगोंका विचार अच्छा नहीं है। लोग परिवर्तन चाहते हैं। भूतपूर्व राजदूतकी तारीफ चारों ओर सुनी गयी। दूतावासमें आफिशियल ढंग बहुत आ गया है। मानवीय स्पर्शकी हमें यहाँ कमी मालूम हुई। किसी भी देशके दूतावासके लिए यह चीज खटकनेवाली है। उनसे हमें काबुलमें कुछ सहायता नहीं मिल सकी। जिन देशोंमें हम गये वहाँके राजदूत एक प्रकारका सुझाव देते हैं। देशकी स्थिति बताते हैं।

कहाँ किस प्रकारका व्यवहार करना चाहिये, इसकी शिक्षा देते हैं, किनसे भेंट करना आवश्यक है, किनसे नहीं मिलना चाहिये। देशमें कैसी विचारधारा चल रही है। प्रगतिशील तथा अप्रगतिशील शक्तियाँ किस प्रकार कार्य कर रही हैं। किस देशकी ओरसे यहाँ क्या कार्य हो रहा है। हमें क्या ढंग अपनाना चाहिये। किस प्रकार घूमना चाहिये आदि बातोंपर किसीने भी प्रकाश नहीं डाला। आनेके पूर्व भारतमें प्राप्त अफगानिस्तान सम्बन्धी सभी पुस्तकें पढ़ चुके थे। तात्कालिक राजनीतिक समस्याका ज्ञान था। अतएव हमें विशेष दिक्कत न हुई।

देश-वर्णन

तृतीय पानीपत युद्धके विजेता अहमदशाह अब्दाली थे उनके समयमें पहले-पहल अफगान शब्दका प्रयोग किया गया। देशका सम्बोधन इसके पूर्व आर्याना, पक्तिया (पक्शिया), खुरासान, पश्तूनख्वाह तथा रोह नामसे होता था। अहमदशाह अब्दालीने अपनी कवितामें पश्तूनख्वाह नामसे भी देशका सम्बोधन किया है। पश्तूनख्वाहका अर्थ है—पश्तूनोंका देश। रोह शब्दका प्रयोग पर्वतके लिए होता था। देशका दक्षिण-पूर्वी भाग प्रायः पर्वतीय है। इस शब्दका सम्बोधन उसीके लिए किया जाता था। यह शब्द अप्रचलित हो गया है। आजसे २५ सौ वर्ष पूर्व प्रसिद्ध यूनानी इतिहासकार हीरोडेटसने पक्तिया नाम इस देशका दिया है। पुरातन लेखकोंने देशको आर्याना, एरियाना, ऐर्या तथा ऐर्यानादि नामसे लिखा है। उनका शाब्दिक अर्थ आर्योंका देश होता है। खुरासानका अर्थ उगता सूर्य है। प्रारम्भिक मुसलिम लेखकोंने ईरानके पूर्वके देशके लिए खुरासान नाम दिया है।

अफगानिस्तानके पूर्वमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान है। उत्तर-

में रूस है। दक्षिणमें बलूचिस्तान है। पश्चिममें ईरान है। पूर्व-पश्चिमकी अधिकतम लम्बाई ७०० मील और उत्तरसे दक्षिण चौड़ाई ५०० मील है। क्षेत्रफल २,७०,००० वर्गमील है। जनसंख्या एक करोड़ बीस लाख है। देश पूर्णतया पर्वतीय एवं रेगिस्तानमय है। मध्यकी पर्वतमालाका नाम हिन्दूकुश है। इसका मूल पामीर है।

चौदहवीं शताब्दीके पर्यटक इब्न बतूताने हिन्दूकुशका अर्थ दिया है। उसके अनुसार हिन्दूकुशका शाब्दिक अर्थ होता है हिन्दुओंका हत्यारा। भारतपर इस्लामी हमलेमें असंख्य हिन्दू नरनारी गुलाम बनाकर अफगानिस्तान लाये गये थे। वे यहांके शीत तथा बर्फके कारण इतनी अधिक संख्यामें मर गये कि नाम ही हिन्दुओंका हत्यारा हो गया।

नमकीन रेगिस्तान जिसे 'नमक-सर' कहते हैं, हेरातमें जाकर विलीन हो जाता है। यह स्थान ईरानके उत्तरमें है। प्राचीन नाम हेरातका हरविया था। हिन्दूकुश हिमालयके समान अभेद्य दीवालकी तरह नहीं है। अनेक दर्रे हैं। इन्हीं दर्रोंसे मध्यएशिया-से आक्रामकोंने अफगानिस्तान होते हुए भारतपर आक्रमण किया।

दूसरी पर्वतमाला सुलेमान है। प्राचीनकालमें इसे सोम पर्वत कहते थे। इसकी संज्ञा त्रिकुट नामसे भी दी जाती है। सिन्धु घाटी तथा अफगानिस्तानके पठारके बीच दिवालस्वरूप खड़ा है। हिन्दूकुशकी अपेक्षा कम ऊँचा है। इसमें खैबर पीवर, टोची, गोमल तथा बोलन दर्रे हैं। इनके अतिरिक्त एक मार्ग और है। इस मार्गसे सिकन्दरने भारतपर आक्रमण किया था। जलालाबादसे बजौर तथा स्वाततक कुनर घाटी द्वारा यह जाताहै। स्वात देश तथा स्वात नदीका प्राचीन नाम सुवस्तु है।

हम पहले लिख चुके हैं कि हिन्दूकुशके लिए यह भी कहा जाता है कि यह प्राचीन गन्धमादन पर्वत अथवा उसकी एक

शाखा है। ऋग्वेदमें अफगानिस्तानकी नदियोंका नाम आया है। आमू जिसे ओकस कहते हैं, अफगानिस्तान तथा रूसकी प्राकृतिक सीमा निर्धारित करती है। आमूका प्राचीन नाम वक्षु था। इसका नाम 'वेह्रोध', 'क्यू-शू' 'अमूपः' तथा 'जैहुण' भी है। इस भूभागमें कोक्षा, कुण्डुज, मुर्घव तथा हरीरुद मुख्य स्रोतस्विनियाँ हैं। हरीरुदके उत्तरीय तटपर हेरात शहर स्थित है। हेरातको प्राचीनकालमें हरोविया भी कहते थे। रूसकी सीमा कुश्कसे हेरात केवल ५० मील है।

महानद सिन्धुमें अफगानिस्तानकी मिलनेवाली नदियोंमें प्रसिद्ध नदी काबुल अर्थात् कुभा है। सिकन्दरने कोफेन नामसे उसे सम्बोधित किया है। अन्य नदियाँ कुर्रम अर्थात् क्रुम (कूर्म ?), गोयल अर्थात् गोमती, कुणार या कश्कर हैं।

शीस्तानका प्राचीन नाम शकस्थान है। इसकी झीलमें दक्षिणी अफगानिस्तानकी सरिताएँ मिलती हैं। हेलमन्द-हेरमन्द या हिलमन्द नदी मुख्य है। यूनानियोंने इसे हेतुमत नाम भी दिया है। मैं इस नदीके किनारे लगभग ८० मील गया हूँ। यह घोर मरुस्थलमें बहती है। इसका उद्गम स्थान काबुलके समीप पागमानका भूप्रदेश है। दूसरी नदी अर्गन्धाव है। वेदमें सरस्वती नामसे इसका वर्णन आता है। यह नदी कन्धारके समीप बहती है। किला-ए-बुस्तके समीप अर्गन्धाव एवं हेलमन्द-का संगम है। अन्य नदियाँ कशरुद, हरुत तथा करहरुद हैं।

अफगानिस्तानकी आबहवा बहुत उत्तम है। शीतकालमें अत्यन्त शीत तथा ग्रीष्म ऋतुमें सरद तथा गर्म हवा बहती है। वर्षा केवल वर्षमें ३ इंच होती है। चावल कम होता है। देहरादून-की तरह उत्तम नहीं होता। मोटा होता है। मक्का अर्थात् भुट्टा खूब होता है। गेहूँ पतला होता है। उर्द तथा मूँग भी कुछ हो जाती है। दुम्मा भेड़, उसका मांस, उसका बाल तथा उसकी

पोस्तीन मुख्य उद्यम है। गाय यहाँ नगण्य है। भैंस तो होती ही नहीं। बकरियाँ भी भेड़ोंकी अपेक्षा स्वल्प ही होती हैं गदहा बहुत होता है। यातायातका मुख्य साधन है। माल ढोने और चढ़ने, दोनोंके काममें आता है। घोड़े अच्छे होते हैं। खच्चर भी कहीं-कहीं देखनेमें आ गया था।

हिन्दू तथा पारसी धर्म विश्वके सबसे पुराने प्रख्यात धर्म हैं। यहाँके लोगोंका विश्वास है कि दोनों ही धर्मोंका मूल स्रोत आर्याना भूखण्ड है। ऋग्वेद तथा जिन्दअवेस्ता इसी देशमें लिखे गये थे।

प्राचीनकालमें देश रेशमी मार्गपर था। यह मार्ग चीन, तुर्किस्तान, अफगानिस्तान होता भारततक आता था। दूसरी ओर ईरानकी खाड़ीतक पहुँचता था। इस मार्गसे हाथीदाँतका सामान, सूती कपड़े, मोती और गरममसालोंका व्यापार होता था।

प्राचीनकालमें आर्यानामें एक प्रकारका लोकतन्त्र प्रचलित था। जनता अपने शासकका निर्वाचन करती थी। जनता धार्मिक थी। किन्तु राज्यधर्म निरपेक्ष था। धार्मिक कट्टरताके स्थानपर दूसरोंके धर्मके लिए आदर था। तत्कालीन मुद्राओंपर बलख (बाह्लीक), यूनानी, बौद्ध, ईरानी तथा हिन्दू देवताओंकी मूर्तियाँ अंकित हैं। कहीं-कहीं तो दो धर्मोंकी मूर्तियाँ एक साथ मुद्राओंपर पायी गयी हैं।

ऋग्वेदका कालनिर्णय हो जानेपर ही इतिहासपर वास्तविक दृष्टि डाली जा सकती है। विद्वानोंने अनेक अनुमान इस सम्बन्धमें किये हैं। कौनसा सिद्धान्त तुलापर ठीक उतरेगा, कहना कठिन है।

एशिया माइनरके उत्तर-पूर्व मिटानीमें कुछ वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं जिनपर दिक् देवता वरुण, इन्द्र, मित्रकी मूर्तियाँ बनी हैं। मिस्रमें भी कुछ इस प्रकारकी हिन्दू देवताओंकी मूर्तियाँ प्राप्त हुई

हैं। यह सभ्यता मिस्रसे भारततक फैली थी, यह निर्विवाद है।

जिन्दअवेस्ताके कालका भी निर्णय नहीं हुआ है। कुछ लोग उसे ७ हजार वर्ष प्राचीन मानते हैं। कुछ कहते हैं, उसका काल ईसासे २७ सौ वर्ष पूर्वसे अधिक नहीं हो सकता। कुछ लोग बाइबिलमें वर्णित अब्राहम अथवा इब्राहीमको (जरदस्तुका) उक्त समकालीन मानते हैं। यूनानी लेखकोंको जरदस्तुका ज्ञान था। जरदस्तुकी गाथाका अर्थ पाणिनिके व्याकरण द्वारा सुन्दर ढंगसे होता है। पश्तो तथा गाथा दोनों ही भाषाओंकी मूल वैदिक भाषा थी। पश्तो, पहेलवी, गाथा तथा जिन्दअवेस्ताकी भाषा और फारसी वैदिक भाषाके ही अपभ्रंश हैं।

अफगान इतिहासका स्रोत वैदिक साहित्य, अवेस्ता, प्राचीन अवशेष, शिलालेख, मुद्रा तथा पूर्वबुद्धकालीन ध्वंसावशेषोंमें जो समस्त अफगानिस्तानमें बिखरे पड़े हैं, प्राप्त होगा।

बामियान, भारतके नालन्दा, अजन्ता, एलोरा, ओदण्डपुर, तक्षशिलातुल्य भारतीय संस्कृति सभ्यता और कलाका केन्द्र था। कोहिस्तानकी वैग्राम उपत्यका प्राचीन 'कपिसा' थी। इसकी गाथा चीनी तथा यूनानी पर्यटकोंने खूब गायी है। काबुलसे ४० मील उत्तर घोरबन्ध नदीपर स्थित है। फ्रांसीसी पुरातत्व विशेषज्ञोंने सन् १९२२ में कपिसा, हाडा ककरक, खरिखाना दर्रा, कुण्डुज, कुण्डिकिस्तान तथा शीस्तानके विषयमें खोज की है। उनके द्वारा आर्यानाकी सभ्यतापर विशेष प्रकाश पड़ता है। सुर्खकोटल वस्त्र उत्पादक केन्द्र पुल-ए-खुमरीके पास है। यहाँके खनन-कार्य द्वारा यूनानी-कौचन सभ्यतापर प्रकाश पड़ता है। यहाँ दो मन्दिर प्राप्त हुए हैं। वे यूनानी सभ्यता तथा भारतीय सभ्यताके जैसे भग्न-सूत्रको जोड़ते हैं। बलख अर्थात् वाह्लीकके खनन-कार्योंमें यूनानी तथा बौद्ध, दोनोंकी मूर्तियाँ आदि प्राप्त हुई हैं। उनसे प्रकट होता है कि यूनानी प्रभावके साथ ही साथ

बौद्ध प्रभाव यहाँ जोरोंपर था। बलखका अर्थ होता है शहरोंकी माँ। प्राचीनतम शहर होनेके कारण शहरको विश्वके शहरोंकी माँ कहा जाता है। बलखके पश्चात् ही उस क्षेत्रमें और शहर अस्तित्वमें शायद आये होंगे। इस समय तत्कालीन बलखके केवल ध्वंसावशेष ही रह गये हैं।

काबुल और मजार-ए-शरीफ राजपथके निर्माणकालमें सन् १९३१ में कुछ ईंटें प्राप्त हुईं। उनपर कुछ अक्षर अंकित थे। खनन-कार्य आरम्भ किया गया। अग्नि मन्दिर प्राप्त हुआ। मन्दिर एक आँगनके मध्यमें है। चारों ओर कच्ची ईंटोंका घेरा है। इस मन्दिरका सम्बन्ध अग्निपूजक पारसियोंसे अथवा हिन्दुओंसे है, यह गवेषणाका विषय है। दोनों ही जातियाँ अग्निकी पूजा तथा स्तुति करती हैं। मन्दिर वर्गाकार है। मन्दिरके मध्यमें एक बड़ी वेदी है। यहींपर भारतीय कुशान-वंशीय राजाओंकी वेशभूषा-में एक मूर्ति प्राप्त हुई है। सन् १९५२ में इस स्थानपर दूसरा अग्नि मन्दिर मिला। उसके मध्यवर्ती चबूतरेपर अग्निवेदियाँ अक्षुण्ण मिली हैं।

आर्योंके आगमनके पूर्व आर्यानाकी क्या अवस्था थी। आर्य इस देशमें पहलेसे ही आबाद थे। कुछ कहते हैं वे बाहरसे आये। आर्याना, आर्यावर्त तथा आर्याह्वोंमें आबाद हुए थे। इसमें सन्देह नहीं कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो तथा सुमेर और इलाम-में प्राप्त अवशेषोंके आधारपर साधिकार कहा जा सकता है कि इन सभ्यताओंमें साम्य था। वे उच्चकोटिकी सभ्यता उपस्थित करती थीं। मेसोपोटामियामें खनन-कार्य इस समय हो रहे हैं। उनसे उक्त सभ्यताएँ मिलती हैं। उनकी लिपि सुमेर तथा बेबिलोनमें प्राप्त लिपिसे मिलती है। अतएव कहा जाता है कि उनमें निवास करनेवाली जातियाँ एक ही वंश-परम्पराकी प्रतिनिधि थीं। यह सभ्यता नील नदीसे सिन्धुकी उपत्यकातक

फैली थी। सम्भव है कि ऋग्वेद में वर्णित 'पनस' लोग यही रहे हों।

शीस्तान अर्थात् शकस्थानमें हम गये थे। इसमें नादअली और तरोसर स्थान है। नादअली छोटा कस्बा है। एक दुर्ग भी है। अमेरिकी योजनाके अन्तर्गत इस स्थानमें नहरें निकाली जा रही हैं। विकासका कार्य हो रहा है। यहाँ हमारे चाय पीनेका प्रबन्ध था। इस स्थानपर खनन-कार्य हुए हैं। उनमें प्राप्त वस्तुओं तथा सिन्ध-घाटी, इलाम और सुमेरमें बहुत साम्य है। अफगानिस्तानका वाणिज्य-व्यवसाय भारत, मध्य एशिया तथा मिस्रतक होता था। मिस्रमें तूतनखामेनके पिरेमिडसे यहाँकी बनी हुई वस्तुएँ प्राप्त हुई हैं।

पाश्चात्य लेखकोंका मत है कि आर्य मध्य एशियासे भारत तथा अफगानिस्तानमें आये थे। उनका आदि निवासस्थान वाह्लीक (बलख), चीनी तुर्किस्तान, पामीर, जर्मनी, डेन्यूब नदीका मध्यवर्ती भूभाग, दक्षिणी रूसका पठार तथा पश्चिमी साइबेरिया था। एक मत यह भी है कि वे शक देशसे आये थे। यह देश रूसका दक्षिणी भाग है। कुछ लोगोंका मत है कि क्रीमिया तथा फर्श (प्रुशिया) उनका आदिस्थान था। एक मत यह भी है कि कैस्पियन सागर और अरब सागरके समीपवर्ती देशोंमें उनका निवास था। जिन्दअवेस्ताके आधारपर कहा जाता है कि 'आर्यन वैजो' अर्थात् आर्योंका स्थान ओक्स (आमू) तथा जक्सर्टीस (अरङ्ग) नदीके समीप था। इस स्थानको पुरातन जिन्दअवेस्तामें 'बख्दी' (बलख) अर्थात् वाह्लीक कहा गया है। अफगान विद्वान् कहते हैं कि यह स्थान अफगानिस्तानका उत्तरी भाग था। यही आर्योंका मूल निवासस्थान था। भारतमें स्वर्गकी कल्पना उत्तर दिशामें की गयी है। अफगानिस्तान भारतके उत्तर स्थित है। यही भारतीय कल्पित स्वर्गीय भूमि है।

ऋग्वेदमें १०२८ छन्द हैं। दस मण्डल हैं। दसवें मण्डलमें कुछ धर्मनिरपेक्ष सिद्धान्तोंकी झाँकी मिलती है। ऋग्वेदकी गाथाएँ जिन्दअवेस्ताकी गाथाओंसे मिलती हैं।

यम, मित्र, वरुण और सोमपानकी पद्धति दोनों ही ग्रन्थोंमें है। अग्निका प्रमुख स्थान दोनोंमें है। दोनों ही अग्निको देवता मानते हैं। भारतीय वृक्षों, धान आदिका वर्णन नहीं है। यहाँतक कि बैनियन (वटवृक्ष) का, जिसकी भारतीय साहित्यमें भरमार है, ऋग्वेदमें नामतक नहीं आता। ऋग्वेदमें शेरका भी वर्णन नहीं मिलता। इसके विपरीत अफगानिस्तानसे सम्बन्धित सभी वस्तुओं-का वर्णन है। ऋग्वेदमें अनेक गोत्रीय जातिका वर्णन है। उनमें गान्धारका भी वर्णन मिलता है। इस जातिका निवासस्थान काबुलकी उपत्यका है। मूल आर्योंके मन्दिर क्यों नहीं मिलते? इसका उत्तर मिलता है, आर्योंमें मूर्तिपूजाकी प्रथा नहीं थी। आर्य मन्दिर नहीं बनाते थे। वंशीय पौरोहित्य प्रथा नहीं थी। प्रत्येक गृहपति ही अपने घरका स्वामी था। उनके सामाजिक जीवनका केन्द्र यज्ञकी वेदी थी। यज्ञवेदीके लिए मन्दिर बनानेकी आवश्यकता नहीं होती थी। मन्दिर मूर्ति रखने तथा उसकी उपासना आरम्भ होनेके पश्चात् अस्तित्वमें आये।

अफगानिस्तानका गाथा-काल, ऋग्वेद, अवेस्ता, शाहनामा, नाम-ए-खुशरोवाँ, गरशसपनामा आदिकी कविताओंपर आधारित कर लिखा जा सकता है।

जनश्रुतिके आधारपर तीन राजवंशोंका पता चलता है—पारद, कवि तथा अस्पः। पारद वंशका प्रथम राजा कैमूर्थ था। उसीने बलख (बाह्लीक) नगरकी स्थापना की थी। अवेस्ताके अनुसार इस वंशका प्रथम राजा व्हइवंघ अथवा हुसंग था। इस वंशसे सम्बन्धित 'विवान घम,' 'जमशेद' आदिका नाम आता है। जमशेद अर्थात् यमशेद ही वास्तवमें ऋग्वैदिक यम हैं। इस

वंशका लोप 'दाहक' (नाग) द्वारा हुआ था। वह बेबिलोनसे आया था। उसकी माता 'अहिरमन' अर्थात् राक्षस किंवा दैत्य-कन्या थी। वह 'त्रिशिरा' था। त्रिशिराका वर्णन रामायणमें मिलता है। राजा जमशेद्का पतन अहुरमज्द (असुर महा) देवताके नाराज हो जानेके कारण हुआ था।

यमशेदने भागकर कुरंग (कुरंग ?) राजाके यहाँ शरण ली। वह जबुलके राजा थे। जबुल ही आधुनिक गजनी है। महमूद गजनी यहींका सुलतान था। उसीने भारतपर आक्रमण कर 'सोमनाथ'का प्रसिद्ध मन्दिर तोड़ा था।

गजनीकी राजकन्यासे यमशेदने विवाह किया। इस विवाहसे महावीर रुस्तम पैदा हुआ। रुस्तम शीस्तानका महान् पौराणिक वीर था।

रुस्तमके सम्बन्धमें एक दूसरी गाथा भी है। यमशेद्के नव विवाह द्वारा एक पुत्र 'गरशास्य' (गृहास्य ?) था। उसका पुत्र 'नरीमन' हुआ। नरीमनका पुत्र 'सम' हुआ। 'सम'का पुत्र 'जल' हुआ। वह काबुल आया। राजकन्यासे प्रेम हो गया। राजकन्याका नाम 'रुदबेह' था। उनसे उत्पन्न सन्तानका नाम 'रुस्तम' हुआ।

दाहकके साथियोंने यमशेद्को पकड़ लिया। उसे दो भागोंमें कर दिया। दाहकको प्रतिदिन मनुष्योंका भेजा नागोंको भोजन निमित्त देना पड़ता था। वह अप्रिय हो गया था। यमशेद वंशीय 'थ्रैतपोना' (धृतपोनि ?)ने विद्रोहका झण्डा उठाया। उसने जलदेवी अर्द्विसुर अनहिताके लिए १०० घोड़ोंका अश्वमेध, १००० बैलोंका वृषभमेध, १०,००० भेड़ोंका अजमेध किया। उसका सेनापति 'कव' था। दाहक पराजित हुआ। यमशेदकी दो कन्याएँ 'अर्णवक' या अर्नवाज तथा 'स्वनहवक' या शाहरवाज दाहकसे मुक्त की गयीं।

धृतका पुत्र गरशास्य (गृहास्थ ?) राजा हुआ। धृत था। इसने 'सोम' एक पादपसे जनकल्याण निमित्त निकाला। उसके दो पुत्र उरवाक्ष्य तथा गरशास्प हुए। उरवाक्ष्य स्मृतिकार हुआ। गरशास्पने ऊर्गन्धाव तथा शीस्तानतक राज-विस्तार किया।

इस वंशके पश्चात् कवि वंशका उद्भव हुआ। उन्हें 'कै' 'कवि' तथा 'कवा' कहते हैं। प्रथम राजाका नाम कव कोवृत अथा कै कुक (कान्य कुब्ज ?) था। उसने बलख (बाह्लीक)को अपनी राजधानी बनाया। रुस्तमकी सहायतासे तूरानी आक्रामकोंपर विजय प्राप्त की। उसका पुत्र 'कवि उषा' अथवा 'कै कौस' हुआ। इस वंशका तृतीय राजा कवि 'स्यवर्षन' अथवा शियावंश हुआ। 'कवि खुशरो' (कवि हुश्राव) कवि उषाका पुत्र तथा अंतिम राजा था। गाथा है कि एक भयंकर आँधीमें अपने साथियोंके साथ वह लोप हो गया।

तृतीय वंश 'अस्प' (अश्व) नामसे प्रख्यात था, प्रत्येक राजाके नाममें अस्प शब्द प्रयुक्त होता था। इसलिए इस वंशका नाम 'अस्प' रख दिया गया। 'कवि खुशरो' पुत्रहीन था। उसने 'होहरास्प' या 'और्वत अस्प'को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। बलख (बाह्लीक) को अपनी राजधानी बनाया। एक मन्दिरका निर्माण कराया। उसे दो पुत्र 'विष्टास्प', 'गुस्तास्प' तथा 'जरिवर' या 'जरिर' थे। अपने जीवनकालमें ही उसने गुस्तास्पको राज्यभार सौंप दिया। स्वयं अग्नि मन्दिरमें शेष जीवन व्यतीत करने लगा।

महात्मा जरदस्तु, जिन्होंने पारसियोंका धर्म प्रचारित किया, इसी गुस्तास्पके समयमें हुए थे। राजा और रानी दोनोंने ही इस धर्मको स्वीकार कर इसके प्रचारका बीड़ा उठाया। इसी स्थानसे मूल वैदिक धर्मकी दो शाखाएँ हो जाती हैं। एक पारसी धर्मके

रूपमें चली। दूसरी शुद्ध वैदिक परम्परा रह गयी। पारसी धर्म आमूकी उपत्यकासे लेकर दक्षिणी आर्यानाके हेलमन्द तथा अर्गन्धावकी उपत्यकातक फैल गया। तत्पश्चात् आर्यानाके ५०० वर्षोंके इतिहासका कुछ पता नहीं चलता।

यूनानी इतिहासमें वहाँके आर्योंका प्रथम वर्णन उस समय आता है जब कि असीरिया (असुर देश) के राजा नीनसने बलखपर आक्रमण किया था। यूनानी इतिहास हिरेडोटसके अनुसार उसकी सेनामें २० लाख सैनिक थे। २ लाख १० हजार अश्वारोही थे। १० हजार ६ सौ रथ थे। बलखके राजाने मुकाबला किया। १ लाख असीरियन सैनिक युद्धक्षेत्रमें मारे गये। बलखकी सेनाने कालान्तरमें दुर्गमें शरण ली। असीरियावाले युद्धस्थलसे हटना चाहते थे। इसी समय असीरियाके एक अधिकारी मिनानकी स्त्री सेमीरामीकी चातुरीसे दुर्ग विजित हुआ। वह राजाकी पटरानी तथा उत्तराधिकारिणी बनी।

राजप्राप्तिके पश्चात् रानीने भारतपर आक्रमणकी योजना बनायी। उसे सफलता प्राप्त न हुई। आर्यानाका दूसरी बार वर्णन ७४५ ईसा पूर्वमें असीरियाके सम्बन्धमें ही प्राप्त होता है। चल्हामें एक लेख मिला है। उससे प्रतीत होता है कि उसका राज नर्मी, परसुआ, जिकरात्लू, निशे तथा अरकुत्तीतक फैला था। अरकुत्ती ही अरकोशिया भूक्षेत्र था। इसीमें हेलमन्द तथा अर्गन्धाव नदियाँ बहती थीं। वर्तमान कन्धार इसी क्षेत्रमें स्थित है।

आर्योंकी शाखाकी ही मीड़ परसुअस अर्थात् परसियन तथा यूरोपके पेलासगिक केल्टिक, ट्यूटानिक तथा सल्वोनिक जातियाँ थीं। आर्योंसे ही अफगानिस्तान तथा भारत आबाद था। मीड़ जाति अनेक जगहोंमें विभाजित थी। मीड़ जातिका वर्णन भारतीय वाङ्मयमें मिलता है। दियोसेस (देवस् ?) के नेतृत्वमें

७१५ ईसा पूर्वके लगभग संघटित हुए। लगभग ६३४ ईसा पूर्वमें फ्रआर्तने असीरियापर आक्रमण किया। संघर्षमें उसे वीर-गति मिली।

सन् ६३२ में मीड़ियाके दूसरे राजा क्यकरेसने असीरियापर आक्रमण किया। उसने असीरियाको परास्त कर निनेवेह्पर घेरा डाल दिया। अन्तिम असीरियन राजा असुर इमिदितिनने अपने सेनापति जबापोलासरको मीडियन लोगोंको रोकनेके लिए भेजा। वह शत्रुसे मिल गया। उसने अपने पुत्रकी शादी मीडियाके राजासे कर सम्बन्ध जोड़ लिया। बेबिलोनका राजा बन बैठा।

बेबिलोन और मीडियाकी संयुक्त शक्तियोंने निनेवेह्पर घेरा डाल दिया। दो वर्षतक घेरा पड़ा रहा। तृतीय वर्ष दजला नदीमें बाढ़ आ गयी। लगभग दो मीलकी किलेबन्दी नष्ट हो गयी। असीरियाके राजाने एक बहुत बड़ी चिता बनवायी। अपनी रानियों तथा स्नेहियोंके साथ चितारोहण किया। दासताके स्थानपर भयंकर चिताकी अग्निका आलिंगन किया। विजेताओंने विशाल असीरियन साम्राज्यको परस्पर बाँट दिया।

परसुअस अर्थात् परसियन साम्राज्यका उदय साइरस राजा-के समय हुआ। उरिया झीलके समीपवर्ती भूखण्डमें मीड़ लोगोंके सम्बन्धी आर्य रहते थे। उनका पहला राजा ह्रवमनिश था। यूनानी लेखकोंने अचीमीनियन लिखा है। उसीके नामपर अचीमीनियन साम्राज्यका नाम भी रख लिया गया।

यूनानी इतिहासकार हीरोडोटसके अनुसार परशिया अथवा फर्स मीडिया साम्राज्यके अन्तर्गत था। चालीस वर्षकी अवस्थामें साइरस मीडियाको पराजित कर स्वतन्त्र हो गया। उसने आर्यानाके वाह्लीक (बलख) प्रदेशपर आक्रमण किया, कपिसा-को नष्ट कर दिया। बलूचिस्तानमें भी प्रवेश किया। उस समय

बलूचिस्तानको जेदरोशिया कहते थे। उसने मसा जेताईपर भी आक्रमण किया, किन्तु पराजित होकर मारा गया।

वहाँकी रानीने उसका मस्तक मशकमें रखा। मशकको पारसियोंके खूनसे भर दिया और बोली कि अपनी प्यासको अनन्ततक अपने भाइयोंके खूनसे बुझाते रहो। कुछ इतिहास-लेखक कहते हैं कि वह पराजित नहीं हुआ। शान्तिपूर्वक मरा। उसकी कब्र पसरगदाईमें आज भी मौजूद है। स्थान परशिया अर्थात् फारसमें है।

परसियन राजाओंकी अगणित गौरव-गाथाएँ हैं। यहाँ वर्णन असंगत होगा। यह निर्विवाद है कि गान्धार (कन्धार) बेहिस्तून तथा सिन्धुकी उपत्यकातक उनका प्रभाव था। उनके एक राजा दारसने सिन्धुके अन्वेषण निमित्त एक दल भेजा था। दो वर्षमें इस दलने सिन्धुके स्रोत तथा संगमतकका पता लगाया था। सूसा उनकी राजधानी थी।

पिता फिलिपकी मृत्युके समय सिकन्दरकी अवस्था केवल ३० वर्षकी थी। सिकन्दरका नाम कुछ लोगोंके अनुसार अलिक सुन्दर प्राचीन कालमें प्रत्यक्ष हुआ है। कुछ आधुनिक विद्वान् उसका संस्कृत नाम अथेन्दी लिखते हैं। अथेन्द नाम कहीं देखने-में अभी नहीं आया। प्रचलित नाम सिकन्दर है। अतएव उसीका प्रयोग किया गया है। उसने बाइस वर्षकी उम्रमें ३० हजार पदादिक तथा ५ सौ अश्वारोहियोंके साथ यूनानपर आक्रमण किया। यूनान विजयके पश्चात् परशियन साम्राज्यपर आक्रमण किया। बीस हजार वैतनिक यूनानी सैनिकोंके साथ परशियनोंने मुकाबला किया। सिकन्दरकी आँधीके सम्मुख ठहर न सके। पारसी नवसेनापति मिनोनकी मृत्यु हुई। राजा दाराकी कमर ही जैसे टूट गयी।

सिकन्दर आगे बढ़ा। राजा दारा स्वयं ७ लाख सेनाके साथ

सिकन्दरके सम्मुख आया। इशसके युद्धमें दाराको पलायन करना पड़ा। सिकन्दरने सोरिया, मिस्र तथा फोनीशिया विजय किया।

दाराने दजला नदी तथा कुर्दिस्तानके सम्मुख पुनः मोर्चा लगाया। यह स्थान गौगमेला था। यहाँका युद्ध गौगमेला या अरबेला (उरुवेला) के नामसे प्रसिद्ध है। दाराका पैर यहाँसे भी उखड़ गया। इस समय सिकन्दरकी अवस्था २५ वर्षकी थी।

दारासे भयहीन होकर सिकन्दर बाबुल (बेबिलोन)की ओर कूच किया। सूमा राजधानीका पतन हुआ। सिकन्दरको अपार धनराशि प्राप्त हुई। वह परसीपोलिसकी तरफ बढ़ा। यहाँका खजाना बेबिलोन तथा सूसासे भी अधिक था। केवल ५०० मन सोना परसीपोलिससे सिकन्दरको प्राप्त हुआ। सिकन्दरने पारसी राजा तथा ईरानके इस अत्यन्त पुरातन नगरको नष्ट करनेके लिए स्वयं अपने हाथोंसे नगरमें आग लगायी।

बलख (बाह्लीक)में दाराने शरण ली। उसका एक सूबा था। राज्यपाल बेबसने उसके साथ विश्वासघात किया। स्वयं स्वतन्त्र राज्य कायम करनेका स्वप्न देखने लगा। उसने राजा दाराको जंजीरोंसे जकड़कर कैद कर लिया। दाराका पता सिकन्दरको मिला। बलखपर आक्रमण किया। राज्यपाल नगर छोड़कर भागा। राजाको जंजीरसे जकड़ दिया। रथपर बैठाकर रथ लेकर भागे। सिकन्दरने पीछा किया पलायित लोगोंने सिकन्दरको पास पहुँचते देखा। दाराके संरक्षकों या उसके कभीके प्रिय नौकरोंने उसे घायल कर दिया। रथपर ही सिकन्दरके पहुँचनेके पूर्व दाराके प्राणपखेरू उड़ गये थे और उसके साथ समाप्त होता है, सदाके लिए पारसी राज्यका शताब्दियोंका इतिहास। यह प्राचीन जगत्का सबसे बड़ा साम्राज्य था। सिन्धुसे

नील नदीकी उपत्यकातक फैला था।

सिकन्दर वीर था। उसकी अवस्था केवल २६ वर्षकी थी। दाराकी यह अवस्था देखकर विचलित हो गया। अपना वस्त्र उतारा। सम्राट्के शरीरको ढक दिया। पूर्ण राजकीय सम्मान एवं शोभायात्राके साथ उसका अन्तिम संस्कार पसरगदाईमें किया गया। यह घटना सन् ३३० ईसवीकी है।

सिकन्दर आर्यानाकी ओर बढ़ा। उसका लक्ष्य भारत पहुँचना था। आर्याना भारतके समान छोटे-छोटे राज्योंमें विभाजित था। असंघटित था। अपनी २७ वर्षकी अवस्था अर्थात् ३२९ ईसापूर्व-में उसने हिन्दुस्तानमें प्रवेश किया। इर्रारूदके किनारे ईरानतक पहुँच गया। वहाँसे फरहकी ओर बढ़ा। वह शीस्तानकी राजधानी थी। उसके कुछ साथियोंने यहाँ उसकी हत्या करनेका षड्यन्त्र किया। षड्यन्त्र विफल हुआ। षड्यन्त्रकारी कत्ल कर दिये गये।

हेलमन्द नदीकी ओर सिकन्दर बढ़ा। उसे आर्यास्वस गोत्रीय आर्य मिले। यहाँसे वह आधुनिक गिरिश्ककी ओर बढ़कर अर्गन्धाव नदी अर्थात् कन्धारप्रदेशके समीप पहुँच गया। गजनी फतह किया। काबुल पहुँच गया। काबुलसे बढ़ता कपिसा पहुँचा। कोहेदामन उपत्यकामें जाड़ा बिताया। हिन्दूकुश पर्वतमालाके समीप पहुँचा। उसने वर्तमान चेरिकर तथा ओपियनके समीप नगर स्थापित किया। ओपियन चेरिकरसे ३ मील पश्चिम है। जबलुससिराज अथवा परवन दरः तथा बगरम् भी यूनानियों द्वारा स्थापित शहर कहे जाते हैं। बगरम्में हिन्दू तथा बौद्ध सामग्री बहुत ही अधिक मात्रामें खनन-कार्यों द्वारा प्राप्त हुई है।

कपिसा पहुँचनेपर बलखपर आक्रमणकी योजना सिकन्दरने बनायी। बलखका राज्यपाल जो अब स्वतन्त्र हो गया था, सिकन्दर-

का सामना करनेमें असमर्थ था, वह पकड़ा गया। दाराके साथ विश्वासघात विसस राज्यपालने किया था। उसका बदला उसे क्रूर ढंगसे मारकर सिकन्दरने जैसे लिया। इस समय सिकन्दरको उम्र २८ वर्षकी हो गयी थी।

समरकन्द लेनेके पश्चात् सिकन्दरने श्री नदी (सोर दरया) को अपने साम्राज्यकी पूर्वी सीमा बनाना चाहा। यह स्थान मेसीडोनियासे ३,५०० मील पूर्व था। उसने नदी पारकर शकोंको पराजित किया। आमू नदी पारकर वह बलख आया। बलखके एक सरदारकी कन्या रोशनासे उसने विवाह किया।

सिकन्दरकी २९ वर्षकी अवस्था थी। विजयकी योजना बलखमें बैठकर बनाने लगा। उसने १,२०,००० पदातिक तथा १५,००० अश्वारोहियोंकी विशाल सेना एक महान् देशपर आक्रमण करनेके लिए आर्यानामें संघटित की। तक्षशिलाके हिन्दू राजा अम्भीसे सम्पर्क स्थापित किया।

उसने ३२७ ईसा पूर्वमें हिन्दूकुश पार किया। निसईया शहर पहुँचा। वह काबुल उपत्यकामें था। वहाँसे उसने कुछ भारतीय राजाओंको, जो उसे सहायता देना चाहते थे, मन्त्रणाके लिए बुलाया।

काबुल नदी पार करनेके पहले यूनानी देवी पथेनाकी पूजा की। बलि दिया। उसने अपनी सेनाका दो भाग किया। अपने नेतृत्वमें वह लघमन तथा कुनर घाटीसे चला। सेनापतिको काबुल नदीके मार्गसे सिन्धु नदीपर मिलनेके लिए आदेश दिया। स्वात घाटीको लाँघता सिकन्दर भारतकी ओर बढ़ा। अटकसे १६ मील उत्तर ओहिन्द स्थानपर दोनों सेनाएँ मिलीं। सिकन्दर विलम्बसे पहुँचा। उसके सेनापतिगण दूसरी सेनाके साथ कुछ दिन पूर्व पहुँच चुके थे। सन् ३२९ ईसा पूर्वमें सिन्धु नदी पार करनेका प्रयास आरम्भ किया गया। उनके साथ तक्षशिलाका राजा अम्भी

तथा एक और अन्य राजा संजय थे।

राजा अम्भी तथा पोरस और पर्वतीय राजा अभिसारसे शत्रुता थी। वे सिकन्दरकी सहायता शत्रुताके लिए कर रहे थे। पोरसके विरुद्ध अभियानमें अम्भी राजाने ५ हजार सेनासे सिकन्दरकी मदद की। राजा पुरु (पोरस)को आत्मसमर्पणका सन्देश भेजा गया। परन्तु उसने वीरतापूर्वक अस्वीकार किया। अपने राज्यकी सीमा झेलमपर वह आ गया। यूनानियोंने अपने सम्मुख एक महान् तेजस्वी वीर तथा उसकी सेना देखी।

दोनों सेनाएँ एक-दूसरेके सामने पड़ी रहीं और झेलम बहती रही। अन्धड़, तूफान और अन्धकारका लाभ उठाकर सिकन्दर १६ मील सेनासे और उत्तर बढ़ा। वहाँ उसने झेलम पार की। यूनानियोंसे भारतीय वीरोंका सामना हुआ। यूनानियोंने २०० हाथियोंकी सेना पहले पहल देखी। उनकी समझमें कुछ न आया। यूनानियोंसे घायल होकर हाथी पीछे लौटे। उन्होंने भारतीय सेनाका ही नाश किया। भारतीय अपने हाथियोंसे ही पिस गये। सेनाकी व्यवस्था बिगड़ गयी। यूनानियोंने इस परिस्थितिका लाभ उठाकर पोरसपर हल्ला बोल दिया। युद्धमें १२ हजार भारतीय वीरगतिको प्राप्त हुए। विश्वविजेता सिकन्दरने अपने जैसी वीर जाति पायी। बन्दी पोरसपर मुग्ध हो गया। उसने उसे मुक्त किया।

वह सिन्धके किनारे दक्षिणकी ओर बढ़ता अपने देशको लौट चला। मुलतानके समीप उसे फिर भारतीय सेनाका सामना करना पड़ा। वहाँ वह बुरी तरह घायल हो गया। अपनी ३० वर्षकी अवस्थामें वह भारतको त्यागकर बलूचिस्तान होते लौटा।

बेबिलोनमें वह अपनी ३२ वर्षकी अवस्थामें पहुँचा। वहाँ

विजित देशोंके अनेक लोग उपस्थित थे। अरबको जीतनेकी उसने योजना बनायी। एक दावतमें वह बहुत शराब पी गया। उसे ज्वर आया। ग्यारहवें दिन मृत्यु हो गयी। अपनी ३२ वर्षकी आयुमें उसने २३ जून, सन् ३२३ ईसा पूर्वमें आँख मूँद ली। उसका १० वर्षोंका जीवन विश्व-इतिहासकी अभूतपूर्व घटना है। वह धूमकेतुतुल्य आया और गया, किन्तु इस महान् विजयके पीछे पश्चिम और पूर्वका अनुपम सहयोग उत्पन्न हुआ। उस समयसे आजतक पूर्व-पश्चिम कभी अलग नहीं हुए।

सेहना गर्भवती थी। सिकन्दरको कोई सन्तान न थी। उसने अपने साम्राज्यको संघटित नहीं किया। आँख मूँदते ही उसका साम्राज्य बिखरने लगा। सेल्यूकस पूर्वी साम्राज्यका अधिपति बन बैठा। आर्याना उसके राज्यमें था।

उसने भारतपर आक्रमणकी योजना बनायी। सन् ३०५-३०२ ईसा पूर्वके बीच काबुल नदीकी घाटीसे होता चला। सिन्धु पार किया। कहा जाता है कि चन्द्रगुप्त मौर्य लगभग ५ लाख पदातिक तथा ९ हजार युद्धीय हाथियोंके साथ रणभूमिमें आया। उसके साथ विशाल युद्धीय रथोंकी पंक्ति भी थी।

चन्द्रगुप्तकी महान् गौरवपूर्ण विजय हुई। दोनों राजाओंमें सन्धि हुई। चन्द्रगुप्तने ५०० हाथी सेल्यूकसको दिया। बदलेमें हिन्दूकुश पर्वततकका भूभाग भारतके अधीन आया। उसमें जद्रोशिप (बलूचिस्तान), एरिया, अरकेशिया आदि प्रदेश थे। साथ ही साथ सेल्यूकसकी कन्यासे चन्द्रगुप्तने विवाहकर दोनों राज्योंमें मैत्री सम्बन्ध भी स्थापित कर लिया।

सेल्यूकसका राज्य लगभग ईसा पूर्व सन् २४६ तक संघटित रहा। तत्पश्चात् वाह्लीक तथा पार्थिया स्वतन्त्र हो गये। अफगानिस्तानमें प्रथम यूनानी-वाह्लीक राज्य वाह्लीक क्षेत्रमें कायम हुआ। यह राज्य २०० वर्षोंतक चलता रहा। बलख

नगर अत्यन्त समृद्धिशाली तथा एशियाके वाणिज्य-व्यवसायका केन्द्र बन गया।

अशोकका राज्य बलूचिस्तान तथा अफगानिस्तानतक फैला था। बौद्धधर्म उसके कालमें आर्यानामें खूब फैला। उसका वर्णन यथास्थान किया जायगा।

पार्थियामें अरक (अश ?) ने राज्य स्थापित किया था। भारतमें अशोककी सत्ताके कारण किसी विदेशीको आक्रमण करनेका साहस न हुआ। मौर्यवंशके अन्तिम राजा बृहद्रथकी हत्या ईसा पूर्व सन् २८४ में कर उसका सेनापति पुष्यमित्र स्वयं गद्दीपर बैठा।

सन् १८९-१६७ ईसा पूर्व कालमें भारतपर पुनः आक्रमणके बादल उठने लगे। डिमिट्रियसने विशाल सेनाके साथ भारतपर आक्रमण किया। उसके साथ उसका सेनापति मिलिन्द (मिनान्दर) भी था। तक्षशिलाका पतन बिना किसी अवरोधके हो गया। वहाँ उसने दो नगरों—भीर तथा सिरकमका निर्माण करवाया। उसने पंजाब, सिन्ध तथा सौराष्ट्र अपने अधीन कर लिया। मिलिन्दने साकल (सियालकोट) तक फतह किया। वह जमुनाके तटसे होता पाटलिपुत्रतक पहुँच गया। 'मालविकाग्निमित्र' नाटकमें प्रकरण आता है कि सिन्धुके दक्षिण नदपर पुष्यमित्रके अश्वमेधके अश्वको यवनोंने रोक लिया था। उसके पौत्रने युद्ध कर घोड़ा ले लिया था। उसने दो अश्वमेध यज्ञ किये थे। कहा जाता है कि डिमिट्रियसको उसने पराजित भी किया था। पुष्यमित्रके कालमें ही पाणिनि हुए थे। पुष्यमित्रका वंश शुंग कहलाता है।

राजा डिमिट्रियसने सियालकोटको अपने भारतीय विजित देशोंकी राजधानी बनाया। उसका साम्राज्य सीर दरियासे खम्भातकी खाड़ी तथा पूर्वमें गंगातक विस्तृत था। डिमिट्रियस

पहला राजा था, जिसने अपनी मुद्रापर यूनानी लिपिके साथ भारतीय खरोष्ठी लिपिका भी प्रयोग किया था।

यूक्रेट्राइडने विद्रोह किया। उसने स्वतन्त्र राज्य बलखमें स्थापित कर लिया। उसने बलख अपने पुत्र हिलीकोलको सुपुर्द किया। सन् १६५ ईसा पूर्व हिन्दूकुश पार किया। कपिसाका पतन हुआ। कन्धारपर झण्डा फहराया। पंजाबके अन्दर घुसा। परन्तु मिलिन्दने उसे आगे बढ़ने न दिया। उसमें तथा इमिटाइड्समें सन्धि हुई। सन्धिके अनुसार तक्षशिला, कन्धारपर मिलिन्दका आधिपत्य मान लिया गया। इमिटाइड्सका पुत्र हेलिबोल्स यूनानी बाह्लीक वंशका अन्तिम राजा था। पार्थिया (देहलवी) लोगोंका उद्भव हो रहा था। उसने सन् १३५ ईसा पूर्वमें बलख त्याग दिया। कपिसामें आया। यहाँ उसने अपनी राजधानी बनायी। तक्षशिला, कन्धार तथा झेलम नदीतक उसने अपना राज्य संघटित कर लिया।

शक जाति सीर दरियाके पारकी रहनेवाली थी। लड़ाकू जाति थी। उनकी सेनामें स्त्री एवं पुरुष दोनों होते थे। विश्वकी यह प्रथम मिश्रित सेना थी। स्त्री तथा पुरुष दोनों ही युद्धमें भाग लेते थे। दोनों ही सेनाका नेतृत्व करते थे। शकोंके पश्चात् इस प्रकारकी सेनाका आजतक विश्वमें संघटन नहीं हुआ।

साइरस महान्ने शकोंपर आक्रमण किया था। शकोंमें सेनाके ५ लाख सैनिक थे। महिला और पुरुषोंकी संख्या करीब-करीब बराबर थी। स्त्रियाँ भी अश्वारोहा थीं, पुरुषोंके समान लड़ती थीं। ५ लाख सैनिकोंमें ३ लाख पुरुष तथा २ लाख महिलाएँ थीं। उसका सेनापति शकराज अमोरजेस था। उसकी धर्मपत्नीका नाम स्परेथ्रा था। सेनापति युद्धस्थलमें बन्दी हो गया। उसकी स्त्री स्परेथ्राने सेनाकी कमान सँभाली। विशाल परशियन

सेनाको पराजित किया। बहुत बड़ी संख्यामें परशियन सैनिक बन्दी हुए। साइरस महान्ने अपने बन्दियोंके बदलेमें राजा अमोरजेसको मुक्त कर दिया।

यूनानी इतिहासकार शकोंकी रूपरेखा खींचते हुए कहते हैं—उनके व्यवहार रूखे तथा अपरिष्कृत होते थे। उनकी शकल घिनौनी होती थी। स्वभावके उग्र थे। शरीर स्थूल होता था, मुलायम तोंद रहती थी, सरपर चीनियोंके समान कम बाल होते थे। वे कभी स्नान नहीं करते थे। पुरुषोंमें पानीके भापसे शरीर साफ करनेकी प्रथा थी। अर्थात् वे वाष्पस्नान करते थे। महिलाएँ शरीरपर एक प्रकारका लेपन लगाती थीं। उसे छुड़ा देनेपर शरीर मुलायम तथा त्वचापर चमक आ जाती थी। तीन काड़ियोंको मिलाकर नमदेका गोला तम्बू बनाते थे। अधिकतर गदहोंका पनीर तथा दूध पीते थे। गोमांस तथा अश्व-मांस उनके यहाँ उत्तम भोज्य पदार्थोंमें गिना जाता था।

युद्धस्थलमें अपने शत्रुओंका रक्तपान करते थे। मृत शत्रुका वे मस्तक काटकर अपने सरदारके पास ले जाते थे। मृत शत्रुका मुण्ड अपने घोड़ेकी रासमें बाँधकर विजयका प्रदर्शन करते थे। अपने शत्रुके दाहिने हाथको काटकर उसके चमड़ेसे अपना तरकस बनाते थे। खोपड़ीका पान-पात्रकी तरह उपयोग करते थे। दिनमें प्रायः घोड़ेपर अपने ढोरोंको चराते रहते थे। उनका मुख्य आयुध तीर-धनुष तथा छोटी तलवार होती थी। अश्वारूढ़ बाण चलानेमें वे प्रवीण थे।

शक सूर्य, चन्द्र, मरुत, वरुण तथा पृथ्वीकी पूजा करते थे। यूनानी देवता हरक्यूलीज अथवा अरबके वीरता-प्रतीक हनुमान सदृश किसी देवताकी पूजा करते थे। वह वीरताकी प्रतिमूर्ति समझा जाता था।

शकोंमें पुरोहित प्रथा न थी। वर्षमें एक दिन उनका महान्

पर्व होता था। वे नंगी तलवार लटका देते थे। उसे सजाते थे। कृपाणके सम्मुख नरमेध तथा पशुमेध किया जाता था। बलिप्रदत्त नर या पशुका गर्म खून झूलती तलवारपर डाला जाता था।

अपनी मातृभूमि त्यागकर दूसरे देशोंमें क्यों गये, इसका केवल अनुमान ही लगाया जा सकता है। भारतके साथ तो उनका बहुत ही सम्बन्ध है। शक सम्वत् प्रचलित है। कहा जाता है कि चीनने शकों तथा हूणोंसे अपनी रक्षा करनेके लिए चीनकी दीवालका निर्माण कराया था। शक सीर दरियाके उत्तर अर्थात् चीनके पश्चिमी भागमें रहते थे। इस दीवालके कारण चीनमें प्रवेश अवरुद्ध हो गया। उनका ध्यान उत्तर और पूर्वकी अपेक्षा दक्षिण तथा पश्चिमकी ओर हो गया।

शक लोग बलखसे होते हुए आर्यानामें आये। वे द्रगियानामें आये। वहाँ बसे। उसका नाम शीस्तान अर्थात् शकस्थान हुआ। शीस्तान तथा अर्कोशियामें आबाद हुए।

वहाँसे बोलन दर्रे द्वारा सिन्धु नदीके दक्षिणी भागमें प्रविष्ट हुए। यहाँ इन्होंने भारतीय शक राज स्थापित किया। वे उज्जैनतक पहुँच गये थे। मथुरा तथा नासिकके शिलालेखोंसे प्रकट होता है कि राज्यका विस्तार पूर्वमें यमुना, दक्षिणमें गोदावरीतक फैला था। जैन गाथा है कि विक्रमादित्यने शकोंको परास्त किया था। उन्हें शकारि भी कहते हैं। इस विजयके उपलक्ष्यमें विक्रम संवत् सन् ५६ ईसा पूर्वमें चलाया गया था। शकराज शालिवाहनका नाम आता है। उनके नामसे शालिवाहन शक संवत् सन् ७९ ईसवीसे चला है।

अपने सरदार मौ-के नेतृत्वमें उत्तरी पंजाबके वाह्लीक-भारत-वंशीय राजाओंपर आक्रमण किया। उन राजाओंका सम्बोधन यवन नामसे होता था। तक्षशिला लेनेके पश्चात् उन्होंने गान्धारपर आक्रमण किया। उसे सन् ७८ ईसा

पूर्वमें ले लिया।

राजा मो-के पश्चात् उसका पुत्र एजेस प्रथम राजा हुआ। उसने पूर्वीय पंजाबके यवनवंशीय राजाओंका नाश किया। इसी प्रकार ओनोनेसने भी आर्यानाके दक्षिण पश्चिममें एक सुगठित राज्यकी स्थापना की। इसके अन्तर्गत अर्कोशिया भी था।

आर्यानाके उत्तरी-पश्चिमी भागको पार्थिया कहते हैं। उत्तरी सीमापर मरगियाना और पूर्वमें एरिया था। दक्षिणमें शीस्तान और पश्चिममें हैरीनिया तथा शगोशिया था। उत्तर-दक्षिण २०० मील चौड़ाई तथा पूर्व-पश्चिम ५०० मील लम्बाई थी। देशकी घाटियाँ अत्यन्त उपजाऊ थीं। पुरानी बाइबिल, जिन्दाअवेस्ता तथा असारियन लेखोंमें पार्थियाका नाम नहीं मिलता। सम्राट दाराके समयमें ५२१ ईसा पूर्वमें उनका प्रथम वर्णन मिलता है। उन्होंने सम्राट्के विरुद्ध विद्रोह किया था। विद्रोह दबा दिया गया।

पार्थिया कौन थे, निश्चयात्मक रूपसे कहना कठिन है। उन्हें पहलवीवंशीय कहते हैं कुछ लोग भारतीय पह्लवसे उन्हें जोड़नेका प्रयास करते हैं। उनका कहना है कि दक्षिण भारतके पह्लव पार्थियनके वंशज हैं। पार्थियाका प्रयोग पार्थके रूपमें भी मिलता है। पहल शब्दका भी प्रयोग किया गया है। कुछ उन्हें शकोंकी एक शाखा मानते हैं। जिसे 'दहै' कहते थे। उनका नाम 'पारिन' अथवा 'अपर्णि' था। कुछ उन्हें बलख आर्योंकी सन्तान मानते हैं। उनका नाम आर्योंकी 'पकस्त' अथवा वर्तमान 'पश्तून'का ही रूप है। सिकन्दरके विरुद्ध पार्थियन लोग परशियाके साथ लड़े थे।

कुशाण चीनके कानसूके निवासी थे। येह्ची गोत्रकी एक शाखा थे। उन्हें गोबी निवासी कुथा जातिका सम्बन्धी भी मानते

हैं। अपनी जन्मभूमिसे सन् १७५ ईसा पूर्वमें वे हूणों द्वारा उद्वासित किये गये।

हूण वास्तवमें कौन थे, कहना कठिन है। अनुमान किया जाता है कि वे पूचीके सीमान्तपर रहनेवाले रिपुंग-नू थे। वे ही हूणोंके आदि पुरखे कहे गये हैं। शकोंके सम्पर्कमें आये। शकोंपर दबाव पड़ने लगा। वे वसु नदीके दक्षिणकी ओर चल पड़े। वहाँसे भी उन्हें अरिया तथा पाराथियाकी ओर बढ़ना पड़ा। कुशाणोंने १४०-१३० ईसा पूर्वके मध्य शकोंको उत्तरी आर्यानासे निकाल दिया। बलख आदि स्थानोंपर आधिपत्य स्थापित कर लिया। लगभग एक शताब्दीके अन्दर कुशाण लोग संघटित हो गये। उनका साम्राज्य समृद्धशाली हो गया। बलख उनकी योजनाका केन्द्र था। कपिल, काबुल और गजनी उनके नीचे थे। वे पश्चिमी पार्थियनोंसे मिले। पूर्वमें चीनसे भी लोहा लिया। दक्षिणमें उत्तरी भारत, मथुरा तथा मालवातक फैल गये।

तक्षशिलाके राजाके राजदूत हेलियोडोरसने सन् १४० ईसा पूर्वमें वेसनगरमें भगवान् वासुदेवके सम्मानार्थ एक स्तम्भ स्थापित किया। यह स्थान मैंने सन् १९५३ में देखा था। एक गाँवके अन्दर है। आबादीके बीच एक चौकोर चबूतरेके बीच स्तम्भ खड़ा है। इस स्थानको सुन्दर तथा रुचिपूर्ण बनाना समयकी माँग है। उसके समृद्धिशाली राजा कजुलाकदफिसिसने काबुल उपत्यकामें मुद्राएँ ढलवायीं। उन मुद्राओंपर उसकेनामके साथ 'महाराज' शब्द प्रयुक्त किया गया है। उसने अपनेको 'देवपुत्र' भी कहा। उसकी मुद्रापर अंकित है—'महाराजाधिराज सर्वलोक ईस्वरस्य महीस्वरस्य कोमी कदफीसिज'। ८० वर्षकी अवस्थामें सन् ७८ में वह दिवंगत हुआ।

विम कदफिसिस द्वितीय राजा हुआ। उसने अपना राज्य बनारस तथा नर्मदातक फैलाया। 'महाराज'की पदवी धारण

की। उसकी मुद्राओंपर शिव तथा नन्दीकी मूर्तियाँ बनी हैं। खरोष्ठी तथा यूनानी लिपियाँ इस कालमें बहुलतासे प्रयुक्त होती रहीं। इसी कालमें 'गान्धार' शैली कलाका विकास होता है। उसने सन् ११० तक राज किया।

कनिष्क इस वंशका सबसे प्रतिभाशाली राजा हुआ है। उसका काल १२० से १६० ईसवीतक कहा जाता है। उसने कश्मीर विजय कर कनिष्कपुर नगर बसाया। गाजीपुरसे आर्याना तथा दक्षिणमें विन्ध्याचलतक उसका साम्राज्य फैला था। उसने खोतान, यारकन्द तथा काशगरके सामन्तोंको दबाया। पार्थियनोंको भी उससे पराजित होना पड़ा।

कनिष्ककी दो राजधानियाँ थीं। आर्यावर्तमें पेशावर अर्थात् पुरुषपुर तथा आर्यानामें कपिसा अर्थात् बेग्राम। वसन्त ऋतुमें वह नाग्रहर (जलालाबाद) में समय व्यतीत करता था। उसकी मुद्राओंपर 'गन्धार राज' तथा 'ओइशो' अंकित मिला है।

पेशावर अर्थात् पुरुषपुरमें अपनी शीतकालीन राजधानीमें १५० फुट ऊँचा संघारामका निर्माण कराया। यह विश्वका उच्चकोटिका भव्य मन्दिर था। कपिसा (बेग्राम-आर्याना) उसकी ग्रीष्मकालीन राजधानी थी। उसने अनेक देवस्थान तथा चैत्यादि बनवाये थे। चीनकी राजकन्या उसके यहाँ एक प्रकारसे बन्दी थी। राजकन्याने एक विहारका निर्माण कराया था। सन् ६३० में ह्वेनसांगने पर्यटनविवरणमें इन मन्दिरोंका वर्णन किया है। कनिष्कके पश्चात्, उसका पुत्र हविष्क तत्पश्चात् पौत्र हुविष्क राजा हुआ। इस वंशका अन्तिम राजा वासुदेव था। उसकी मुद्राओंपर शिव एवं नन्दीकी मूर्तियाँ अंकित हैं। उसकी मृत्यु सन् २२० में हुई। उसके साथ ही कुशान राज पतनोन्मुख हो गया।

कुशान शक्ति क्षीण होनेपर एक कुशान राजा किदारने आर्याना राजकी पुनः स्थापना की। राजधानी बलख बनाया। कुछ समय पश्चात् इसने अपनी राजधानी पेशावरमें स्थापित की।

इफ्नेलाइटको अरब और परशियन हयलत कहते थे। उन्हें श्वेत हूण भी कुछ लोग कहते हैं। उन्हें ह्यटल और हेथल भी कहते थे। यूनानी नाम इफ्नेलाइट है। रोमन उन्हें श्वेत हूण कहते थे। कुछ उन्हें पीटा मंगोलियन जातिके कहते थे। कुछ उन्हें आर्य मानते हैं। चीनी लोगोंके अनुसार उनका मूल निवास चीनकी दीवारके उत्तर था। उन्होंने खोतान होते हुए आर्यानामें प्रवेश सन् ४२५ ई० में किया। कुछ ही समयमें कास्पियन सागरसे खोतानतक साम्राज्य स्थापित कर लिया। पारसियोंके साथ उनका संघर्ष हुआ। बहरामपुर सन् (४२०-४४०) ने उन्हें मर्वके युद्धमें परास्त किया। राजा मारा गया। मृत राजाका राजमुकुट बहरामने उपहारस्वरूप बलखके अग्निमन्दिरमें चढ़ा दिया। किन्तु कालान्तरमें उनके राजा मेहरगुरने पारसी सेनाको परास्त किया। (४४०-४७५) यज्दिगिर्द फारसका राजा था। उसके पश्चात् फिरोज फारसी गद्दीपर बैठा। उसके समयमें अक्षुनर आर्यानाका राजा था। उसने हिन्दूकुश पर्वत पारकर कपिसा, काबुल, गजनी तथा गान्धार ले लिया। उनका एक गोल जबुल गजनीमें आबाद हो गया। उनके नामपर देशका नाम जबुलिस्तान पड़ गया। पाटलिपुत्रके राजा कुमारगुप्तके पुत्र स्कन्दगुप्तने विदेशी हूणोंको रोकनेका प्रयत्न किया। उनका सारा जीवन सन् ४६१ ई० तक संघर्षमय ही बीता। भानुगुप्तके समय तोरमाणने भारतमें प्रवेशकर मालवामें अपनी राजधानी स्थापित की। तोरमाणका सन् ५०२ में देहावसान हो गया। उसका पुत्र मिहिरकुल राजा हुआ। हूणोंकी मुद्राओंपर नन्दीकी

मूर्ति तथा 'जयतुष्टचा' अंकित मिलता है।

मिहिरकुलने दो राजधानियाँ स्थापित कीं। एक बलख तथा दूसरी सियालकोटमें थी। उसका सैनिक केन्द्र बामियान था। अपने राजत्वकालके आरम्भमें उसने कश्मीर-विजय किया। सन् ५३२ में मालवाके प्रतापी राजा यशोधर्माने मगधके गुप्तराजा नरसिंह बालादित्यकी सहायतासे मिहिरकुलको पराजित किया। भारतसे निकाल बाहर किया। उसने कश्मीरमें शरण ली जहाँ वह कालान्तरमें सन् ५४२ में दिवंगत हुआ। मध्यभारतके मन्दसोर नामक शिलालेखसे पता चलता है कि उसने प्रायः समस्त भारत जीता था। उसने विक्रमादित्यकी पदवी धारण की थी। मिहिरकुलके पराभवके पश्चात् ही आर्याना आदि सीमान्त देशोंमें अनेक स्वतन्त्र छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये।

सातवीं शताब्दीमें तुर्क मध्यएशियामें शक्तिशाली हो गये। तुर्क तथा फारसके राजा नौशेरवाँ, दोनोंने आर्यानापर आक्रमण सन् ५५६ में किया। शीस्तान, बलख तथा एरिया विदेशियोंके हाथमें चला गया। वे दक्षिणी तथा पूर्वी आर्यानापर आँख गड़ाने लगे।

कहा जाता है कि हूणकी ही एक शाखा तुर्क लोग थे। उनका निवासस्थान सूचा इर्कलिज था। यह स्थान अल्ताई पर्वतमालाके समीप था। चीनके वी वंशके सम्राटोंने उन्हें उद्वासित किया। जुअन देशकी सीमापर आ गये। वे लोहारका काम करते थे। जुअनसे संघर्ष हुआ। तुमेनके नेतृत्वमें तुर्क पश्चिमकी ओर बढ़े। तरिम तथा सार दरयाकी उपत्यकामें जम गये। उन्होंने आर्याना-में भी प्रवेश किया। तुर्कोंके आधिपत्यमें सन् ५५३ तक मंगोलिया-से काले सागरतक देश आ गया।

तुमेनकी मृत्युके पश्चात् उसका साम्राज्य उसके दो पुत्रों मौहन

तथा इस्तमीमें विभाजित हो गया। पश्चिमी साम्राज्य इस्तमी तथा पूर्वी मोहनको मिला। परशियासे मिलकर तुर्कोंने आर्यानापर आक्रमण किया। तुर्कोंने आर्यानाका उत्तर-पूर्वी-भाग तथा पारसियोंने एरिया तथा बलख लिया। फारसके राजा नौशेरवाँने इस्तमीकी राजकन्यासे विवाह कर लिया। किन्तु विवाह सम्बन्धसे स्नेहबन्धन मजबूत नहीं हुआ। दोनों ही एक-दूसरेकी शक्तिसे ईर्ष्या करने लगे। इस्तमीने रोमन सम्राट् जस्टिन २ को प्रभावित कर नौशेरवाँपर आक्रमण करा दिया। नौशेरवाँने रोमन सेनाको सन् ५७३ में निसीवी तथा दारा नामक स्थानोंमें परास्त किया। नौशेरवाँकी मृत्यु सन् ५७९ में हो गयी। इस्तमीने फारसपर सन् ५८८ में आक्रमण कर दिया। वह परास्त हुआ। इस्तमी मारा गया। उसका पुत्र कैद हो गया।

ह्वेनसांगके वर्णनसे मालूम होता है कि सातवीं शताब्दीमें, बामियान, कपिसा, जघोरीमें स्वतन्त्र राज्य स्थापित थे। सन् ६३२ में वह कपिसाके राजासे मिला था। राजा तुर्क नहीं बल्कि क्षत्री वंशीय थे। उनकी दो राजधानियाँ थीं। ग्रीष्मकालीन राजधानी कपिसा थी। दूसरी राजधानी उधनभण्ड (उण्ड, या ओहिंद) थी। उनके अधीन समस्त पूर्वी तथा दक्षिणी अफगानिस्तान था। वह डेरा इस्माइल खाँ, वजीरिस्तान, बलूचिस्तान तथा शीस्तान झीलके मध्य स्थित था। तक्षशिला, कपिसा राज्यके अन्तर्गत ही था। वह बौद्धधर्मी था। चीनी अतिथियोंका वह बड़ा आदर-सत्कार करता था। सन् ६४३ में ह्वेनसांग जब लौटा तो राजासे उण्डमें मिला था।

मुसलमानोंके उद्भवके साथ ही साथ अफगानिस्तानपर युद्धके बादल मँड़राने लगे। नवीन उत्साह तथा धर्म-प्रचारकी भावनासे प्रेरित होकर अरब तथा नवीन मुसलिम जातियाँ विश्वको मुसलमान बनाने तथा विश्वपर मुसलमानी झण्डा लहरानेकी

कल्पना करने लगीं।

सन् ६८२ में मजिद बिन जैदने अपने भाई नोवेदाहके साथ काबुलकी ओर सैनिक प्रयाण किया। काबुलके राजाने उन्हें परास्त किया। प्रयाण असफल रहा। मजीद स्वयं लड़ता मारा गया। खलीफाको बाध्य होकर काबुलके राजाको ५० लाख दीनार हर्जानेके तौरपर देना पड़ा।

कुछ समय पश्चात् मुसलमानोंने अब्दुल अजीज इब्न अतुल्लाके नेतृत्वमें पुनः काबुलपर आक्रमण किया। वह भी असफल हुआ।

हज्जाज बिन युसुफको खलीफा अतुल मलिकने पूर्वका राज्यपाल नियुक्त किया। इस बार विशाल सेना काबुलपर आक्रमण करनेके लिए संघटित की गयी थी। काबुलके राजाने मुसलिम सेनापति अतुल्लाको १० लाख दीनार देकर लौटाना चाहा। परन्तु अतुल्लाने स्वीकार न किया। राजाने खुलकर मैदानमें आना सम्भव न देखकर मार्गमें पड़नेवाले सब गाँवोंको उजाड़ दिया। विशाल सेनाको मार्गमें कुछ प्राप्त न हो सका। अतुल्लाने सन्धिके लिए निवेदन किया। ३ लाख दीनार देनेके बाद मुसलिम फौज वापस लौटी। प्रतिज्ञा करवायी गयी कि काबुलपर पुनः आक्रमण नहीं किया जायगा। राज्यपाल हज्जाजने सन्धिकी शर्तें नहीं मानीं। अतुल्लाको पदच्युत कर दिया। मूसा बिन बल्हाको उसने उसके स्थानपर सेनापति नियुक्त किया।

सन् ६०८ में उबेदुल्ला इब्न-अबू बकरने बहुत बड़ी सेनाके साथ काबुलपर आक्रमण किया। काबुलके राजाने पुनः वही पुरानी चाल चली। सेना जब पहाड़ी इलाकेमें पहुँची तो अरबोंने देखा कि उनका सम्बन्ध साथियों तथा देशसे टूट गया है। सात लाख दीनार हर्जाना देकर अरबोंकी फौज बिना काबुल विजय

किये पुनः पीछे लौट गयी।

काबुल विजयकी पुनः योजना सन् ७०० में बनायी गयी। अब्दुर्रहमान इब्न अशस दस हजार सेनाके साथ बढ़ा। राजाने पुनः अरबोंसे निवेदन किया कि वार्षिक धन देनेके लिए तैयार हूँ। उनके देशका नाश न किया जाय। अरबोंने प्रार्थना अस्वीकार कर दी। राजाने पुनः पुरानी चाल दुहरायी। जाड़ा आ गया। बरफ पड़ने लगी। सेनाको कुछ मिल न सका। उसने हज्जाज राज्यपालसे आक्रमण स्थगित करनेके लिए प्रार्थना की। राज्यपालने उसे कायर कहा। अब्दुर्रहमानने विद्रोह कर काबुलके शाहसे शान्ति-सन्धि कर ली। राज्यपालपर आक्रमण कर दिया। हार गया, काबुलके शाहकी शरणमें आया। अरबोंने पुनः काबुलपर आक्रमण करनेका प्रयास कुछ समयके लिए त्यागा।

कालान्तरमें काबुलमें ब्राह्मणशाही या हिन्दूशाही अथवा काबुलकी रायनशाही नामक वंशकी स्थापना हुई। यहाँके एक राजा रतिबलका पता सन् ८७१ ईसवीमें चलता है। ब्राह्मण शाहानका पहला राजा 'कलर' था। उसका उत्तराधिकारी सन्तदेव हुआ। उसकी मुद्राओंपर 'श्री सामन्तदेव' अंकित मिलता है। उसके कालमें याकूबबिन लैठने काबुलपर आक्रमण किया। सामन्तदेवने काबुल त्यागकर गरदेजको अपनी राजधानी बनाया।

इस वंशके द्वितीय राजा 'कमल'के समयमें अमस बिन लैठने आक्रमण किया। लोघर घाटीका अत्यन्त सुन्दर मन्दिर सकवन्द मुसलमानों द्वारा ध्वंस किया गया। काबुल शाहानने अपनी राजधानी गरदेजसे हटाकर ओहिन्दमें स्थापित की।

भीमदेव अथवा भीमपाल इस वंशका चौथा राजा था। उसने सन् ७८२ से ९५० तक शासन किया था। उसकी मुद्राओंपर श्री भीम उत्कीर्ण मिलता है।

जयपाल इस वंशका पाँचवाँ राजा था। वह सुबुक्तगीन गजनीका समकालीन था। उसका राज्य लोधमान पश्चिमसे लेकर भारतमें सतलज और उत्तरमें कश्मीर तथा दक्षिण मुलतान-तक फैला था।

बुखाराके समनी वंशीय पाँचवें बादशाह अब्दुल मलिकका एक तुर्क दास था। उसका नाम अलप्तगीन था। वह खुरासानका राज्यपाल नियुक्त किया गया। सन् ९०१ में बादशाहका देहान्त हो गया। लोग बादशाह चुननेके लिए एकत्र हुए। अलप्तगीनने स्वर्गीय बादशाहके नाबालिग लड़के मन्सूरके बादशाह बनाये जानेके विरुद्ध मत दिया, किन्तु लोगोंने मन्सूरको बादशाह चुना। अलप्तगीन अपनी जानका खतरा देखकर देश छोड़कर भागा। वह गजनी आया। गजनीमें उसने प्रसिद्ध गजनी राजवंशकी स्थापना की।

अलप्तगीनके पश्चात् उसका पुत्र इशाक बादशाह बना। उसकी मृत्यु हो गयी। बुखाराके शाहने अलप्तगीनके ही एक गुलाम बल्तगीनको गजनीका शासक स्वीकार किया। सन् ९७२ में बल्तगीनके पश्चात् पिरे गजनीका शासक हुआ।

गजनीमें मुसलिम राज्यकी स्थापना होते देख राजा जयपाल सशंक हो गया। वह कुशल सेनानी था। उसने समय न खोया। खतरा समझ गया। गजनीके बादशाह तथा जयपालसे संघर्ष आरम्भ हो गया। सन् ८७१ तक अरबोंने कितनी ही बार काबुलपर आक्रमण किया परन्तु वे सफल न हो सके।

जयपालने विशाल सेना एकत्र की। सिन्धुको पारकर लोधमानतक सन् ९८८ में पहुँच गया। सुबुक्तगीन जयपालकी योजनाका ध्यानपूर्वक अध्ययन कर रहा था। वह सेना लेकर सामने आया। हिन्दू जाति इस समय कुसंस्कारोंमें इतनी फँस गयी थी कि उसका जीवन जैसे जड़ हो गया था। रात्रिमें तूफान

आया, हिन्दू सेनामें आवाज उठी, दैव हम लोगोंके विपरीत है। तूफान उसका द्योतक है। वे हतोत्साह हो गये। बाध्य होकर जयपालने सन्धि कर ली। जयपालने ५० हाथी तथा काफी धन दिया। सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर हुए। जयपाल लाहौर लौट आया।

लाहौर पहुँचते ही सुबुक्तगीनने जयपालकी पश्चिमी सीमामें प्रवेश किया। जयपाल मुसलमानोंकी ताकत समझ गया था, उनमें संघटन था, मुसलमानोंका युद्ध धार्मिक था, उनके सामने धर्म-प्रचारका आदर्श था। वे जहाँ पहुँचते थे, मन्दिर नष्ट करते थे, लोगोंको मुसलमान बनाते थे। एक बार मुसलिम बनी जनता सर्वदाके लिए हिन्दुओंसे निकलकर उनके खिलाफ हो जाती थी। वे विश्वास करने लगते थे कि मूर्तिपूजक हिन्दू काफिर हैं। उन्हें खुदाकी राहपर लाना धार्मिक तथा भगवान्‌का काम है, उससे पुण्य होगा, भगवान् खुश होगा, गुमराह रास्तेपर आयेंगे। खुदा उनकी कुर्बानीका पुरस्कार देगा। दूसरी ओर बिखरी हिन्दू जनता थी, उसका कोई आदर्श नहीं रह गया था। जातियोंमें लोग बँटे थे। राज्य-कार्य कुछ चुनी हुई जातियोंका काम रह गया था। युद्धमें लड़ना भी केवल क्षत्रियोंका कर्म समझा जाता था। मुसलमानोंके साथ पूरी मुसलिम जनताकी आवाज उठती थी। पूरी जनता शस्त्र लेकर मैदानमें उतरी थी। हिन्दुओंमें केवल यह भार क्षत्रियोंपर ही रह गया था।

जयपालने भारतके अन्य राजाओंसे सहायता माँगी। भारतपर होनेवाले भयङ्कर आक्रमणकी ओर लोगोंका ध्यान आकर्षित किया। उसने १ लाख अश्वारोही तथा पैदल एकत्र किये। सेना उत्तरापथकी ओर बढ़ी। सुबुक्तगीनके साथ संघर्ष हुआ। जयपाल पराजित हो गया। अफगानिस्तानका पूरा भाग सुबुक्तगीनने ले लिया। वह अपनी स्थिति यहीं मजबूत करने लगा। पंजाबकी ओर न बढ़ा।

अफगानिस्तानपरसे अन्तिम हिन्दू राज समाप्त हो गया। जनताने पूर्णतया इस्लाम स्वीकार कर लिया। सुबुक्तगीन ५३ वर्षकी अवस्थामें सन् ९९७ में तिरमिजमें दिवंगत हुआ। उसे गजनीमें लाकर मिट्टी दी गयी। सन् ९९९ में सुलतान महमूद गजनी अपने भाईको गद्दीसे उतारकर बादशाह बना। उसने भारतपर आक्रमण किया। सोमनाथका मन्दिर टूटा। इसलामी झण्डा भारतपर लहरा उठा।

अफगानिस्तानके पश्चिमी और उत्तरी भागमें इसलाम फैला। वहींसे वह बढ़ा। काबुल, कपिसा आदिसे हिन्दुओंका राज नाश करते उसने भारतपर अधिकार किया। सन् ६५२ में द्वितीय खलीफा हजरत उसमानके समयमें अरबका एक प्रसिद्ध सेनापति अब्दुल्लाबिन अमीरने खुरासानपर आक्रमण किया। निशापुरको अपना सैनिक केन्द्र बनाया। वहींसे उसने अफगानिस्तानके अनेक भागोंमें सेना भेजी।

रबीबिन जयाद हेरातमें आया। अब्दुर्रहमान समराहने शीस्तानपर आक्रमण कर विजय प्राप्त की। शीस्तानमें उसने जरंज अर्थात् जहीदनपर इसलामी झण्डा उड़ाया। वहाँसे वह जमिन्दावर आया। जमिन्दावरमें एक विशाल सूर्यमन्दिर था। यह मन्दिर जुर (सूर्य ?) या जुन्नमें था। यहाँपर बहुत बड़ी सुवर्णकी सूर्यप्रतिमा थी। उसके नेत्र पद्मराग मणिके थे। इस मन्दिर और प्रतिमाको सन् ६५३ में उसने ध्वंस किया।

अब्दुल्लाबिन अमीरको मोआवियाहने खुरासानका राज्यपाल नियुक्त किया। उसने हेरात तथा बलखपर अधिकार किया। बलखके प्रसिद्ध देवस्थान नवविहारके विध्वंसकी आज्ञा दी गयी। बौद्ध और आर्य संस्कृतिने बाह्लीक अथवा बलखके नवविहारकी लड़खड़ाती-गिरती ईंटोंके साथ अपने जीवनका एक अध्याय बन्द कर लिया। भारतीय संस्कृति और सभ्यताका वहाँसे सर्वदाके

लिए लोप हो गया।

अरब लेखक कजवीनी दसवीं शताब्दीमें इस मन्दिरका बड़ा ही सुन्दर वर्णन लिखता है—वह विशाल मन्दिर था। विश्वके मन्दिरोंमें सर्वश्रेष्ठ था। मन्दिरमें मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित थीं। मन्दिर रत्नों तथा रेशमी वस्त्रोंसे सुसज्जित किया जाता था। ईरानी तथा तुर्क जनता मन्दिरमें बहुत श्रद्धाभक्ति रखती थी। विशाल जन-समूह दर्शन एवं तीर्थयात्रा निमित्त आता था। पूजा करते थे। चढ़ावा चढ़ाते थे भारतीय तथा चीनी राजा दर्शन निमित्त आते थे। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक पूजा तथा नमन करते थे।

इस मन्दिरकी विशालता इसीसे समझी जा सकती है कि इसमें ३६० पुजारी थे। उनके लिए अलग कमरे बने थे। भारत, चीन तथा आर्यानाके राजा यहाँ आकर इसके उत्तुङ्ग भवनोंपर पताका फहराते थे। झण्डे इतने विशाल हो जाते थे कि बलखसे उड़कर तिलमिजमें जाकर गिरते थे।

अफगानिस्तानमें नव विहारका यह मन्दिर तथा बलखनगर भारतीय संस्कृति तथा सभ्यताका केन्द्र था। वहाँ चीन, यूरोप, मध्यपूर्व एशिया और मिस्रके लोग आकर मिलते थे। संस्कृतियों-का संगम था। विचारविनिमय होता था। एक स्थानकी सभ्यता-का ज्ञान दूसरे स्थानोंको होता था। वह स्थान संस्कृतियोंका गुलिस्ताँ था। प्रत्येक प्रकारके, प्रत्येक रंगके, विभिन्न सुगन्धियों-के फूल उसमें खिलते थे। उनमें मानव अपने विकासयोग्य मार्ग ढूँढ़ लेता था। एक सुगन्धिसे थककर दूसरी लेता था। एककी शीतल छायासे दूसरे पादपके नीचे बैठकर चिन्तन करता था। इसलाम आया। यह गुलिस्ताँ उजड़ा। वह रह गया एक ही फूलका खेत अथवा एक ही वृक्षकी बारी। वह उद्यान न रह गया था।

पुरातन अफगानिस्तानके इतिहासका पटाक्षेप होता है। मुसलिम विजेता कुतैबाने मर्वमें प्रवेश किया। उसने जनताको

मूर्तिपूजकोंके विरुद्ध जेहाद करनेके लिए उभाड़ा। वह चीनी तुर्किस्तानकी सीमातक सन् ७०६ में पहुँच गया। सन् ७०९ में बदघिशके राजा निजकने विद्रोह किया। उसने सभी सरदारों तथा सामन्तोंको संघटित होकर सामना करनेके लिए आवाहन किया। विद्रोह सफल न हुआ। निजकने सन्धि की। सन्धिके पश्चात् भी उसे कत्ल कर दिया गया। उसके रक्तके सूखते-सूखते अफगानिस्तान अपने पुराने गौरवशाली अध्यायको शनैः-शनैः बन्द कर लेता है।

प्राचीन कालसे ग्यारहवीं शताब्दीतक अफगानिस्तान तथा भारतका इतिहास एक ही पुस्तकके दो अध्यायतुल्य है। नेपोलियन-ने कहा था मिस्र एशियाकी कुंजी है। मिस्रपर शासन करनेवाला एशियापर शासन करेगा। यही बात अफगानिस्तानके विषयमें कही जायगी। जिसके हाथमें अफगानिस्तान था उसने भारतपर अपना हाथ रखा। अफगानिस्तान मिस्रके समान या स्विट्ज़र-लैण्डके समान विश्वकी संस्कृतियों, जातियों तथा धर्मोंका संगम था। वह संगम लोगोंको अनुप्राणित करता रहा। इस संगमका लोप हुआ। परन्तु राजनीतिक जगतमें अफगानिस्तानने अपना पूर्ववत् स्थान बनाये रखा। छोटा देश होते हुए भी ३५ करोड़ जनताका भाग्य उलटता-पलटता रहा। इसका अध्ययन हमारे लिए अत्यन्त आवश्यक है।

काबुल-बलख-हेरात

काबुलसे बामियानकी उपत्यका १५३ मील उत्तर-पश्चिम है। अफगानिस्तानमें रेलवे लाइन नहीं है। यात्राका साधन टैक्सी, बस, हवाई-जहाज, घोड़े, ऊँट और गदहे हैं। सड़कें कम हैं, केवल १०० मील सड़क पूरे अफगानिस्तानमें अलकतरेकी होगी, शेष सड़कें गिट्टीकी हैं। सड़कें उखड़ी-सी हैं, समथर नहीं हैं,

सुन्दर कारके लिए जहरका काम करेंगी। कंकड़ भी पीटे नहीं जाते, उन्हें बिछा दिया जाता है। कुछ दुरमिशसे पीट दिये जाते हैं। मोटर चलनेसे मिट्टी उड़ जाती है। कँटीले कंकड़ ऊपर उठ जाते हैं। देश पर्वतीय है, भूमि ही यातायातके कारण सड़कका रूप ले लेती है। इस समय कुछ सड़कोंपर रोलर भी चलते दिखाई दिये।

काबुलसे बामियान जानेवाली पुरानी सड़क नयी बन रही है। रूसकी सहायतासे उसे चौड़ी तथा आधुनिकतम बनानेका प्रयास हो रहा है। बामियान-काबुल-मार्ग अफगानिस्तानके ग्रामीण जीवनका बड़ा ही अच्छा दृश्य उपस्थित करता है। उस सड़कका नाम मजारे-शरीफ काबुल है। काबुलसे मजारे-शरीफ प्रदेशमें प्रवेश करती है। शिकरी दर्रेसे एक शाखा बामियान तथा दूसरी मजारे-शरीफ जाती है। मजारे-शरीफ शहर इसी नामके प्रदेशकी राजधानी है। कहा जाता है कि मजारे-शरीफमें चौथे खलीफा हजरत अलीकी मजार है। हजरत अली पैगम्बर मुहम्मद साहबके दामाद थे। इमाम हसन तथा हुसेनके पिता और बीबी फातिमाके पति थे। शीया लोगोंका कहना है कि हजरत अली नजफमें गाड़े गये हैं, वहीं उनकी वास्तविक मजार है। मैं इस विवादमें नहीं पड़ना चाहता।

दक्षिणी रेशमी मार्गके मध्यमें बामियान कारवाँ सड़कपर स्थित था। पेशावर तथा बलखको यह मार्ग मिलाता था। यह मार्ग शक विजेताओं तथा भारतके कुशान साम्राज्यको जोड़ता था। शिबर दर्रेतक मार्ग घोरबन्ध नदीके किनारे-किनारे चरिकरसे चलता है। चरिकरतक सड़कें काबुलसे ठीक उत्तर चलती हैं। कपिसा अर्थात् बैग्राम चरिकरसे २० या २५ मील होगा। वहाँ पंजशीर नदीमें घोरबन्ध नदी मिलती है। शिबर दर्रेसे एक मार्ग बामियान तथा दूसरा दोशी, पुल-ए-खुमरी,

हैबक, तरकुरगन खुल्म, मजार-ए-शरीफ, बलख, अकछो, शिबरघन, अकखुई, मेमना, वल मुर्धब होता हुआ अफगानिस्तान-के दूसरे प्रदेश हेरातकी राजधानी हेरात शहरमें काबुल-हेरात राजपथमें मिल जाता है।

चारिकर एक कस्बा है, काबुलसे ४० मील है। काबुलसे ४ मील पर खैरखाना दर्रा समाप्त करने पर सिम्तए-शुमालीकी अत्यन्त सुन्दर उपत्यका मिलती है। सड़क समथर भूमिसे होकर गुजरती है, दोनों ओर हरियाली मिलती है। दाहिनी ओर तो बहुत दूरतक विस्तृत पादपाच्छादित उपत्यकाका दर्शन होता है। खैरखाना दर्रासे चरिकरतक सड़क ढालू होती गयी है। यह सड़क इस समय रूसके विशेषज्ञोंके तत्वावधानमें बन रही थी। चरिकरके फल काबुलकी अपेक्षा जल्दी पक जाते हैं। यहाँसे दाहिनी तरफ एक सड़क हिन्दूकुशके चरणोंमें १० मील दूर स्थित गुलबहारकी सुन्दर उपत्यकामें जाती है। दूसरी शाखापर पागमान पर्वतमालाके समानान्तर चलती पुल-ए-मटकका पुल पार करती है। यहाँसे लगभग आधा मीलपर सड़ककी एक शाखा जबल-उससिराज एक अत्यन्त हृदयग्राही उपत्यकामें प्रवेश करती है। पुल-ए-मटकसे यह स्थान ४ मीलपर स्थित है। जलविद्युत उत्पादन स्थान है। यहाँसे बिजली काबुल तथा सरकारी कपड़ेकी मिलको जाती है। दूसरा मार्ग बायीं ओर जाता है। घोरबन्ध उपत्यकामें प्रवेश करता है। यह उपत्यका ६० मील लम्बी तथा एक मीलसे १० मीलतक फैली है। दोनों ओर सूखी, पादपहीन पर्वतमाला सड़कके समानान्तर चलती है। सड़क घारबन्ध नदीके समानान्तर चलती है। कहीं-कहीं पर्वतीय स्थानमें चढ़ाई और उतराई कठिन हो जाती है।

सारी उपत्यका हरीभरी है। घोरबन्ध नदीको स्थान-स्थानपर बाँधकर पनचक्की बनायी गयी है। पानीको ऊपर उठाकर खेतोंमें

सिंचाई होती है। बादाम और सेवके वृक्ष मिलते हैं। सड़कके किनारोंपर कृषक खेतोंमें काम करते दिखाई पड़ते हैं। यहाँका दृश्य बड़ा ही मोहक है। मालूम होता है जैसे किसी भारतीय ग्रामसे गुजर रहे हैं। इस मौसममें गेहूँ कट जाता है। चारों ओर दौंरी लगी थी। बैल गेहूँकी बालें कुचल रहे थे। भारतमें जिस प्रकार गेहूँ तथा भूसा अलग किया जाता है ठीक वही प्रकार यहाँ भी है। इस उपत्यकामें आनेपर यह नहीं मालूम होता कि अफगानिस्तानका २।३ भाग रेगिस्तान है।

शिवर दर्रेसे १० मील पश्चिम शिकारी दर्रा है। सामने ऊँचा पर्वत खड़ा मिलता है। यहाँसे दो मार्ग हो जाते हैं। एक बामियान जाता है, दूसरा मजार-ए-शरीफ। यहाँसे २५० मील दूर है। बामियान १५ मील है। बामियान नदीके किनारे-किनारे यह मार्ग चलता है।

शिकारी दर्रेमें मजार-ए शरीफ तथा बलखकी सड़क, जिसे मुख्य सड़क कहते हैं, चलती है। नवें मीलतक सड़क अत्यन्त दुरूह रास्तेसे जाती है। पहाड़ी अत्यन्त दुरूह है। अनेक रंगोंकी पर्वतमालाएँ मिलती हैं। तत्पश्चात् ८० मीलका मार्ग मिट्टीकी पहाड़ियोंसे गुजरता है। पहाड़ियोंपर कहीं-कहीं झाड़ियाँ दिखाई पड़ जाती हैं। इस मार्गके दोनों ओर प्राचीन नगरोंके ध्वंसावशेष तथा स्तूपोंकी शृंखला मिलेगी। यह भूभाग खनन कार्योंके लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। बौद्ध तथा वैदिक साहित्यके ज्ञाता तथा इतिहासज्ञोंके लिए यह स्थान गवेषणार्थ आदर्श माना जा सकता है। अभीतक अछूता है।

सरखुश्क तथा सुककन आदि प्राचीन नगरोंके ध्वंसावशेष बिखरे पड़े हैं। दर्रेके अन्तमें—सेरव-ए-जरिम है। यहाँ पेट्रोल पम्प है। सरकारी होटल है। यह स्थान काबुलसे १३२ मीलपर है। यहाँपर सैघन कमर्द नदी बामियान नदीमें मिलती है। स्थान

दोआब कहा जाता है, दो नदियाँ मिलती हैं। अतएव मध्यवर्ती भूमि दोआब कही जाती है। दोनों नदियोंका जल कल-कल करता तोला तथा बरककी ओर चलता है यहाँ कोयलेकी खान है। आगे सड़कपर बढ़ते ही लाल, हरी, पीली, तथा काली पर्वतमालाएँ मिलती हैं पहाड़ियाँ नुकीली तथा ऊँची हैं।

दोशी पहुँचनेपर इन्द्राब (इन्द नदी) शिकारीमें मिलती है। दोशी काबुलसे २२४ मील दूर है। बुलए खुमरीके पास सड़ककी दो शाखाएँ हो जाती हैं। एक खानाबादको जाती है। खानाबाद यहाँसे ६९ मील है। खानाबादसे सड़क कुण्डज, तालिकम, शिरकमिश, नहरिपानको जाती है। सड़क नदीके किनारे खुमरी पुलके बाद नहीं जाती। सुर्खाब नदी कुण्डज भूखण्डको सींचती आमू नदीमें मिल जाती है। बायाँ मुख्य मार्ग तबककी ओर चलता है। पर्वतमाला पिस्ताचिओ वृक्षोंसे ढकी है। इस भूखण्डमें पास आनेपर ऐतिहासिक नगर ऐबक मिलता है। कुतुबुद्दीन ऐबक भारतका प्रथम मुसलिम सम्राट् यहींका था।

ऐबकका प्राचीन जिला विशाल प्राचीन ध्वंसावशेष है। समस्त भूखण्ड स्तूप, दुर्ग, देवस्थानोंसे भरा पड़ा है। बौद्ध एवं हिन्दू कालमें अत्यन्त समृद्धिशाली था। यह नगर जैसे पुरातत्त्ववेत्ताओंको निमन्त्रण देता रहता है। ऐबकका भूखण्ड उपजाऊ है। खुल्म नदी इसे सींचती है। शहरमें होटल है। यहाँपर प्राचीनकालमें बामियान सैवन, कमर्दके प्राचीन राजपथ मिलते थे।

मजार-ए-शरीफ ऐबकसे ९० मील है। हजरत सुलतान तथा सबदके मैदान मिलते हैं। उसके पश्चात् तरकुरघानकी सुन्दर उपत्यका मिलती है। जहरांनुमा (विश्वदर्पण) उद्यान यहीं है। उद्यान सुन्दर है। तरकुरघान काबुलसे ३५१ मील है। प्राचीन-कालके प्राचीननगर शहरनालूके ध्वंसावशेष यहाँ दिखाई देते

हैं। खाने-पीनेका सामान खूब मिलता है। शहरबानूका प्राचीन नाम क्या था, गवेषणाका विषय है। सम्भव है कि बान शब्दका ही अपभ्रंश बानू हो गया है। भारतीय वाङ्मयमें बासा गंगा आदिका नाम आता है। यहाँसे एक सड़क मीर आलम तथा कुडुज होती खानाबाद जाती है। दूसरा मुख्य काबुल मजार-ए-शरीफका मार्ग पश्चिमीकी ओर मुड़ता है। तश्करगाहसे अन्धखुईतक सड़क आमू दरयासे लगभग सौ मील समानान्तर पूर्वसे पश्चिम जाती है। आमू दरया रूस तथा अफगानिस्तानकी सीमा है। रूसी सीमामें करकोसे आमू दरयाके किनारे रूसी रेलवे लाइन चलती है। सड़क गोरमर होती मजार-ए-शरीफ नगरमें प्रवेश करती है।

मजार-ए-शरीफका शाब्दिक अर्थ है पवित्र समाधि। मुसलमानोंका जियारत अर्थात् तीर्थस्थान है। यह समाधि अर्थात् मजार लगभग ५०० वर्ष पहले बनी थी। गाथा है कि चौथे खलीफा हजरत अलीकी यह मजार है। शीया लोग नजफको हजरत अलीकी मजार मानते हैं। हजरत अलीकी दो सन्तानें इमाम हसन तथा हुसेन थे। इमाम हसन तथा हुसेनके आधारपर ही शीया-सुन्नी—मुसलमानोंकी दो शाखाएँ चलीं। कुछ लोगोंका कहना था कि पैगम्बर साहबके पश्चात् उत्तराधिकार उनके दोनों नातियोंको मिलना चाहिये था कुछ लोग कहते थे कि इसलाममें उत्तराधिकारका प्रश्न नहीं उत्पन्न होता। इसलामका आधार लोकतन्त्र है। अतएव निर्वाचित खलीफा होना चाहिये। पैगम्बर साहबके पश्चात् निर्वाचित खलीफा हजरत अबू बकर, उमर तथा उसमान हुए थे। यह लोग सहाबा कहे जाते हैं। सुन्नी लोग इनकी शानमें श्रद्धा तथा भक्तिपूर्ण वचनोंका प्रयोग करते हैं। उसे ही मदहे सहाबा कहा जाता है। शीया लोग उक्त तीनों खलीफाओं-की वैधानिकताको नहीं मानते। उनकी शानमें कुछ ऐसे वचनोंका

प्रयोग करते हैं जो अच्छा नहीं समझा जाता। इसीको 'बच्चा'
कहा जाता है।

मजारमें दो ऊँचे विशाल गुम्बद अथवा प्रासादशीर्ष हैं
इसमें पच्चीकारीका काम इतना सुन्दर बना है कि मानों उसकी
पूर्णता कर दी गयी है। भूस्तरसे लेकर शीर्षस्थानतक दीवाल
तथा एक-एक इंच स्थान पच्चीकारीके कामसे भरा पड़ा है। मनुष्य
ने अपनी पूरी कला तथा बुद्धि इसमें लगा दी है। भारतमें
मुसलिम-कालीन कलाकारोंने इसके आधारपर पच्चीकारीका काम
किया। किन्तु इतना पूर्ण शायद नहीं हो पाया है।

मजार-ए-शरीफ उत्तरी अफगानिस्तानका प्रसिद्ध व्यापारिक
नगर है। शेष अफगानिस्तानकी अपेक्षा अत्यन्त उर्वर तथा
धनी प्रदेश है। यहाँका खरबूजा तथा तरबूज विश्वप्रसिद्ध होता
है। खरबूजाका वर्णन यथास्थान कर चुका हूँ। चरागाह तथा
भेड़ोंके चरने योग्य भूखण्ड खूब हैं बकरी, भेड़, दुम्बे तथा घोड़े
खूब होते हैं। उनके व्यवसायका एक प्रकारसे केन्द्र है।

वसन्तकालमें मजार-ए-शरीफ रंगबिरंगे पुष्पोंसे फूल उठता
है। वहाँकी बहार देखने लायक होती है। उस समय वहाँ एक
मेला-ए-गुलसुर्ख लगता है। पुरानी दिल्लीमें महरौलीमें भी मेला-
ए-गुलसुर्ख एक सरोवरके किनारे लगता था। इसी मेलेके आधार
पर पठान बादशाहोंने दिल्लीमें आरम्भ किया था। यह मेला
दिल्लीमें बन्द हो गया था। कुछ दिन पूर्व पण्डित जवाहरलाल
नेहरूने इस मेलेका शुभारम्भ किया था। भारतमें उसे जीवित
करनेका प्रयास किया जा रहा है।

हेरात तथा कन्धारके समकक्ष ही मजार-ए-शरीफ नगर है।
उसका महत्त्व अफगानिस्तानके किसी शहरसे कम नहीं है। बलख
अत्यन्त प्राचीन समृद्धिशाली नगर मजार-ए-शरीफसे १२ मील
पश्चिम है। बलख हिन्दू तथा बौद्ध संस्कृतियों तथा धर्मका केन्द्र

था। इसलामके उद्भवके पश्चात् धार्मिक तथा सांस्कृतिक महत्त्व बलखका समाप्त हो गया। जब कोई हिन्दू या बौद्ध नहीं रह गया तो वहाँ दीपक कौन जलाता। बलखके महत्त्वको और कम कर देने तथा मुसलमानोंका ध्यान एक नये तीर्थस्थानकी ओर आकर्षित करनेके लिए ही मजार-ए-शरीफकी परिकल्पना की गयी होगी। यह कल्पना अपने कार्यमें सफल रही, यह मानना ही पड़ेगा। बलख अनेक आक्रामकोंका सामना कर बच गया था। आनेवालोंको अपने रंगमें रँग लिया था। परन्तु इसलाम उसके लिए सख्त इस्पात साबित हुआ। बलख अपने रंगमें रँगना कौन कहे स्वयं समाप्त हो गया। वहाँ जो लोग आबाद थे, जो लोग बौद्ध तथा हिन्दू देवताओंकी पूजा करते थे, उनका मुख फिर गया मजार-ए-शरीफकी तरफ। मजार-ए-शरीफ आबाद हुआ, बलख उजड़ गया।

बलखकी भूमि हरी है। भूभाग अत्यन्त उपजाऊ है। प्राचीन नगर २० मीलकी सीमामें फैला था। बलख अर्थात् वाह्लीक भग्नावशेषोंकी श्मशानभूमि है। प्राचीनकालकी कोई इमारत नहीं खड़ी है। चारों ओर उजड़े, बिखरे, गिरते, अपनी लीला समाप्त करते अनेक खंडहर मिलेंगे। वहाँ अभी भी खोदनेपर मुद्राएँ तथा मूर्तियाँ प्राप्त होती हैं। इस समय कुछ थोड़ेसे मकान रह गये हैं। इस नगरको अरब लेखक उमा-उल-बलद अर्थात् नगरोंकी माँ कहते थे।

अतीत कालके इस महान् नगरको देखकर अनायास आँखोंमें आँसू आ जाते हैं। जिसकी गौरव गाथा गाते, शक, हूण, कुशान, आर्य, बौद्ध, हिन्दू, पारसी, असुर, सुमेर, पार्थियन, चीनी, भारतीय, अरब नहीं थकते थे, वहाँ आज कोई चिराग जलानेवाला भी नहीं है।

उसके महान् प्राचीर (दीवाल)के, जिसके विषयमें प्रत्येक पर्यटक, प्रत्येक इतिहासकारने लिखा है कि वह नगरको घेरे

गर्वीला खड़ा था, बिखरे अस्थिकणस्वरूप कुछ यत्र-तत्र ऊँचे दूहे ही रह गये हैं। वह भी प्रकृतिके थपेड़ोंमें लोटते अपने अस्तित्वलोपकी तैयारीमें जैसे शीघ्रता कर रहा है। उसका समस्त उत्तरी भाग खण्डहरोंका रूप है। वह मलबे तथा मिट्टीके दूहोंसे भरा है। पश्चिममें ऊँचे मेहराब खड़े कभीके जामे मसजिदकी याद दिलाते हैं दो तोरणद्वारोंके अवशेष भी वहाँ दिखाई पड़ेंगे। पुरातत्ववेत्ताओं तथा इतिहासज्ञोंके लिए बलख भरी आँखोंसे देख रहा है। कोई आये। उसके उजड़े खण्डहरोंमें बैठकर कुछ सुने। क्या भारतीय इतिहासज्ञ तथा पुरातत्ववेत्ता इस ओर ध्यान देंगे?

इस मार्गपर बलखसे नसरताबाद ४०, अकच्छा ५६, शिबरघन ९३, ख्वाजा डकोह १०१ तथा अन्धखुई १२३ मील है। बलखसे कुछ मीलतक सड़क चौरस है। अकच्छाके पश्चात् सड़क बलुई है।

अन्धखुईमें एक किला है। यहाँ रूस तथा बुखारासे बहुत ही अच्छा व्यवसाय होता है। रूसकी सीमाके समीप है। एक सड़क रूसकी सीमातक जाती है। अन्धखुईसे सड़क सीधी दक्षिणकी ओर जाती है। अन्धखुई अफगानिस्तानके उत्तरी-पश्चिमी सीमापर स्थित है।

मैमनह दक्षिण हेरात सड़कपर ८५ मील दक्षिण है। लगभग ५२ मीलतक मैदान है। उसके बाद छोटी-छोटी पहाड़ियोंके बीच मैदानसे सड़क जाती है। मैमनह सूबेका नाम है। नगर भी इसी नामका है। बहुत छोटा व्यापारिक नगर है। यहाँके फल प्रसिद्ध होते हैं।

मैमनहसे सड़क पश्चिम-दक्षिणकी ओर मुड़ती है। यहाँसे एक सड़क गुरजिवान जाती है। मैमनहसे मुख्य राजपथ वाला मरघबकी ओर बढ़ता है। यह स्थान १०७ मील मैमनहसे दूर है।

रेगिस्तानसे मार्ग जाता है। मार्गमें इस्मर, कैसर, कुरमच, बुकिज तथा मसचक पड़ते हैं। कैसरसे मार्ग ठीक पश्चिमकी ओर जाकर बाला मरघब जाता है। मरघबसे एक मार्ग मसचक नगर जाता है। अफगानिस्तानकी सीमापर स्थित है। मरघबसे मार्ग पुनः दक्षिणकी ओर चलता है। किलाए नवपर मिलता है। महत्त्वपूर्ण व्यापारिक शहर है। यहाँसे सड़क पुनः पश्चिम-दक्षिणकी ओर बढ़ती है। ९९ मील दूर हेरात शहरमें जाकर मिल जाती है।

किलाए नवसे ३० मील बढ़ते ही पेरापेरमिसस पर्वतमाला मिलती है। एक दर्रेसे सड़क चलती है। दर्रेकी लम्बाई लगभग ९ मील है। इस दर्रेका नाम चश्म-ए-सब्ज है। समुद्रकी सतहसे ३४०० फुट ऊँचा है। आसपासके भूखण्डसे केवल एक हजार फुट ऊँचा होगा। दर्रेके पश्चात् हेरातका सुहावना भूप्रदेश मिलता है। हरीसद (हरिह्रद ?) नदी इस भूखण्डको सींचती है।

दूसरी सड़क हेरातमें काबुल-कन्धारसे आकर मिलती है। यह सड़क काबुल, गजनी, कन्धार, गिरिश्क, फरह, सब्जवार होती हेरात आती है। तीसरी सड़क काबुल, दौलतपार, ओबेह होती हेरातमें मिलती है। यह सड़क पहले हेलमन्द नदीके साथ चलती है। दौलतपारके समीप हरीसदके साथ कहीं-कहीं दूर होते हेरातमें मिल जाती है। हेरातसे पुनः हरीसदके समानान्तर बढ़ती इसलाम किला पहुँचती है। इसलाम किला खुरासान-अफगानिस्तानकी सीमापर अन्तिम शहर है। हरीसद इसलाम किलासे खुरासान तथा अफगानिस्तानकी सीमा निर्धारण करती हुई अफगानिस्तानके दूसरे सीमान्त शहर जुल्फिकारका स्पर्श करती अफगानिस्तानसे बाहर निकल जाती है। यह सड़क अफगानिस्तानके मध्यसे जाती है। अटक, पेशावर, जलालाबाद, निमला, जगदलक, काबुल, दौलतपार, ओबेर, हेरात होती यह

सड़क इसलाम किला शहरमें समाप्त होती है। अफगानिस्तानकी ये ही तीन मुख्य सड़कें हैं। उत्तरी काबुल, बलख, हेरात, दक्षिणी काबुल, कन्धार, हेरात तथा तीसरी मध्यवर्ती काबुल दौलतयार तथा हेरात है।

बामियान

हेरातकी सड़क त्यागकर बामियानकी सड़कपर हमारी गाड़ी चली। दर्रेमें घुसते ही अजीब दृश्य मिला। बामियान नदीकी उलटी धाराकी ओर सड़कसे हम चले। दोनों ओर बहुत ऊँचे पहाड़ थे। कहीं भी जीवजन्तु, मनुष्य, पशु-पक्षीका नामानिशान नहीं था। अत्यन्त रोमांचकारी दृश्य था।

हमारी पतली सड़क, पतली बामियान नदीके किनारे पतले दर्रेसे ऊँचे पहाड़ोंके बीच चली जा रही थी। सूखे, पादप-दूर्वाहीन पर्वत चुपचाप खड़े थे। उनके मूलमें बहती बामियान नदी जैसे अनन्त कालसे अनवरत बहती हुई भी उनकी प्यास न बुझा सकी थी। सरिताकी आर्द्रता देखकर जैसे ईर्ष्यासे जल गये थे। मालूम होता था हम लोगोंकी ओर पर्वतमालाएँ जैसे आँख फाड़कर देख रही थीं। प्रकृतिका इतना गम्भीर एवं एकाकी दृश्य विश्वमें शायद ही कहीं देखनेको प्राप्त होगा।

श्मशानकी स्तब्धताका बोध होता था। दृश्य डरावना था। दिलकी धड़कन बन्द होने लगती थी। पर्वतकी चोटियोंके बीचसे आकाशका संकुचित एवं सीमित दर्शन होता था। मिट्टीका पहाड़ हमपर गिरकर हमारी वहीं कब्र बना सकता है, सोचकर रगोंकी हरकत बन्द होने लगती थी। दोनों ओरकी पर्वतचोटियाँ समीप थीं। बोध होने लगता था कि कहीं तूफानमें वे आपसमें टकराकर टूट न जायँ।

स्थान-स्थानपर दर्रोंमें किलेबन्दी मिली। किलेबन्दी तथा छोटे-

छोटे दुर्ग मिट्टीके थे। वे भी जनहीन थे। उदास, अपनी लीला प्रकृतिके थपेड़ोंमें लीन करनेके लिए ही जैसे खड़े थे। प्राणिशून्य स्थान देखकर मन काँप उठा। दृश्यकी भयंकरतामें प्रकृतिकी सुन्दरता प्रकृति-प्रेमियोंको मिलेगी।

वे पर्वत अनन्त कालसे खड़े थे खड़े रहेंगे। उनके बीचसे कितने ही कारवाँ गुजर चुके होंगे। इसी मार्गसे सिकन्दर गया था। चँगेज खाँ गया था। बगलमें त्रिपिटक दबाये भिक्षु गये थे। झण्डा फहराते हिन्दू गये थे। इसलामी जेहादके नारेके साथ महमूद गजनवी गया था। तैमूरलंग अपनी खूनी कहानीके साथ गया था। विपन्न बाबर हिन्दुस्तानमें राज्य जमानेकी कल्पनासे गया था। अन्तमें बिगुल बजाते अँग्रेज आये थे। यह मार्ग था भारत तथा एशियाके मध्य सेतुतुल्य सूखे पर्वत उन जानेवालों-को देख चुके थे। उनकी कहानी याद कर चुके थे। वे हमें देख रहे थे। आनेवालोंको देखते रहेंगे। वे यों ही खड़े रहेंगे। शताब्दियाँ बीत जायँगी। उनके लिए यह सब कुछ था एक खिलवाड़मात्र।

लगभग ५ मीलके पश्चात् शर-ए जोटा मिलता है। बामियान नदीमें छोटी स्रोतस्विनी कलौ मिलती है। एक किला टूटा, त्यागा खड़ा है। प्रकृतिने इसे स्वतः घाटीकी सुरक्षाके निमित्त जैसे बनाया है। सन् १२१२ ईसवीमें यहाँके निवासियोंने चँगेजके उत्तराधिकारियोंके विरुद्ध विद्रोह किया था। उसके पुत्र मुतजिन-की हत्या विद्रोहमें हुई थी।

शिकारी दर्रेसे लगभग ६ मीलके पश्चात् बामियान उपत्यका मिली। दाहिनी ओर बामियान नदी और बायीं ओर पर्वतमाला थी। उसके पश्चात् हरी-भरी सुन्दर बामियानकी उपत्यका थी। ऊँची पहाड़ीपर एक पुराने किलेका ध्वंसावशेष था। इसे जुहक-ए-मीरान शहर कहते थे।

मैं विचार कर रहा था यहाँ बौद्ध किंवा हिन्दू लोग क्यों आये ? इतने दुरूह मार्गका उन्हें पता कैसे मालूम हुआ ? वह कौन-सी बात थी जो उन्हें यहाँतक खींचे लायी ?

जिस पहाड़ी क्षेत्रसे हमारी कार चुपचाप चली जा रही थी उसे देखकर चकित हो रहा था कि किस प्रकार इस स्थानका पता बौद्धोंने लगाया। हिन्दुओंने लगाया। लगभग ६ मीलतक हमारा मुख जैसे किसीने सी दिया था। कलेजा धक-धक कर रहा था। पहिये तथा इञ्जनकी आवाज सुनाई पड़ रही थी। बायीं ओर बामियान नदी कल-कल करती बहती चली जा रही थी। हम स्वयं इस दृश्यावलीमें मूक हो गये थे। पर्वतोंको देखते। आँखें नीची करते, फिर देखते और फिर सोचने लगते थे। भय मालूम होता था कि कहीं कोई चोटी खिसक न जाय। हम यहीं दबकर रह जायँगे। शायद कुछ दिन बाद कोई यात्री खबर दे पायेगा।

आगे बढ़नेपर उपत्यका चौड़ी होती गयी। दृश्य सुन्दर मिलने लगा। सूखे पर्वतोंके बीच लम्बी यात्राके पश्चात् हरी-भरी उपत्यका देखकर मन हरा हो उठा। मरुस्थलके आतपके पश्चात् जैसे छाया मिली। प्यासके बाद जैसे पानी मिला। गर्मीके बाद जैसे ठण्ढक मिली। ग्रीष्म ऋतुके बाद जैसे शिशिर ऋतु आयी। कुछ आबादी मिलने लगी। ग्राम पाँच-सात घरोंके समूहमात्र थे। भेड़ें घाटियोंमें चर रही थीं। लोग खेतोंमें काम कर रहे थे। बैलकी दौरी नधी थी। बादामसे लदी शाखें झुकी थीं। हमारे प्रश्नका एक उत्तर मिला। सूखेके पश्चात हरियाली मिली होगी। उन महान् बौद्ध यात्रियोंने इसे एक मंजिल समझा होगा। वहाँ पानी था, वहाँ खेत थे, वहाँ उपज थी, वहाँ फूलोंसे झुके पादप थे। किसी भी जनस्थानके लिए इससे अधिक और किस वस्तुकी आवश्यकता हो सकती थी।

हमारी गाड़ी बढ़ती गयी। रफ्तार तेज थी। सायंकालकी हल्की अँधियारी आकाशसे उतर रही थी। अफगान कृषक ढोरोंके साथ लौट रहे थे। कोई खेतोंकी मेंड़पर नमाज पढ़ रहा था। कोई चुप-चाप चला जा रहा था, हम कुछ चढ़ाईपर चढ़ रहे थे। बामियान नदीकी उलटी धाराकी ओर बढ़ते जा रहे थे।

आँखें उठीं, आश्चर्यचकित देखा बायीं ओर। शहरे गल गोला। महान् बौद्धनगर। विशाल मिट्टीका दुर्ग। दूसरी ओर हजारों गुफाएँ थीं। सीधे खड़े पर्वतमें जैसे मधुमक्खीने छत्ता लगा दिया था। भूरे पर्वतमें गुफाओंकी भीतरी अँधियारी मुखपर खड़ी थी, अपने अन्धकारमय जीवनके साथ। एक गाँव पड़ा, गाँवके कुछ लोग पहाड़ोंमें बनी गुफाओंमें बसे थे। उनके ढोर बँधे थे। उनका खलिहान रखा था। हम घरोंमें रहनेवाले, हम गाँवोंमें रहनेवाले, हम शहरोंमें रहनेवाले, सुनते थे योगी गुफाओं-में रहते हैं। फकीर गुफाओंमें रहते हैं। दरवेश गुफाओंमें रहते हैं। साधु गिरि-कन्दराओंमें रहते हैं और वहाँ एक समाज गुफाओंमें मुस्कराता था। गृहस्थ गुफाओंमें अपनी गृहस्थी जमाये थे। हम गिरिगुहा नगरमें थे। शीत बढ़ रही थी। बामियान समुद्रकी सतहसे ८,४०० फुट ऊँचा है। भगवान् बुद्धकी मूर्ति दिखाई दी।

हम थे ऐतिहासिक गिरिगुहा नगरमें। दो हजार गुफाएँ अपने अस्तित्वको अक्षुण्ण रखे हुए हैं। इन गुफाओंमें कोई रहता नहीं। एक छोटा कस्बा है। हमारी सड़क कस्बेमें चली। सड़कके दोनों ओर सुन्दर वृक्षोंकी पंक्तियाँ हैं। कश्मीर भी उनके आगे मात है। कस्बेसे सड़क आगे चली गयी है। उसकी एक शाखा बामियान होटलकी ओर चली।

बामियान होटल बुद्ध मूर्तिके ठीक सामने दूसरी पहाड़ीपर है। होटल जानेवाले सड़कके दोनों किनारे सफेदेके सुन्दर वृक्ष

लगे हैं। वृक्ष ऊपर जाकर मिल गये हैं। बीचसे सड़क जाती है। सूर्यकी किरणें बहुत ही कम छनकर सड़कपर आती हैं।

बामियान नदी पारकर होटलमें पहुँचे। पूरे ८॥ घण्टेमें काबुलसे यहाँ पहुँचे। प्रातःकाल १० बजे काबुलसे यात्रा आरम्भ की थी। चलते ही आये, ठीक ६॥ बजे होटलमें पहुँचे।

होटल अत्यन्त रमणीक स्थानमें बना है। होटलमें सोने, नहाने तथा ठहरनेका प्रबन्ध है। सरकारी होटल है। वहाँ खानेके लिए नान (रोटी) और गोश्तके अतिरिक्त और कुछ न मिलेगा। काबुलसे आनेवाले लोग भोजनका सामान लेकर आते हैं। होटलमें कुछ यूरोपियन पहलेसे ही ठहरे थे। वे जीपसे आये थे। हम लोगोंको कुछ भूख लगी थी। होटलवाला खानेका प्रबन्ध कर देता है। हिन्दुस्तानी भाषा सब समझ लेते हैं। जीपका ड्राइवर गयामें रह चुका था। खूब हिन्दी जानता था। हम लोग अण्डा या गोश्त नहीं खाते, सुनकर लोगोंको आश्चर्य हुआ। किसी प्रकार निश्चय हुआ कि बाजारसे कुछ साग-सब्जी लायी जाय। बाजारमें केवल नान और कुछ आलू-प्याज मिल सका। आलू उबाला गया। नमक डालकर तरकारी बनायी गयी। चावल भी मिल गया था। चावलका पुलाव बनाना यहाँका मामूली रिवाज है। उसमें भेड़का घी या चरबी डालते हैं। छीक आती है। शाकाहारी लोगोंको सर्वदा चावल, उबली तरकारी और नान खाना चाहिये। नान सर्वत्र गाँवमें मिल जाती है, वही प्रधान भोज्यसामग्री है।

होटलके पीछे ऊँचा पहाड़ है। कोह बाबा कहते हैं। उसपर बर्फ पड़ी थी। दिसम्बरमें समस्त उपत्यका तुषाराच्छादित हो जाती है। कोह बाबापर बर्फ बारहों मास जमी रहती है। होटलसे प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त सुहावना लगता है। नीचे उथली बामि-यान नदी बहती चली जाती है। उसके दोनों ओर खेत लहलहा

रहे थे। नीचे एक गाँव है। खेतोंमें खलिहान लगा था। बैल दौंरीपर नधे थे। किसान खेतोंमें काम कर रहे थे। किसी-किसी घरसे धूमिल पतला धुआँ ऊपर उठ रहा था। सामने लगभग २ हजार गुफाएँ सीधे-ऊँचे मिट्टीके पर्वतमें बनी थीं। भगवान् बुद्धकी विशाल उत्तुंग भग्न मूर्ति खड़ी थी। बंगलेके सामनेवाले सहनमें बैठकर प्रकृति-सुषमा देखते-देखते दिन बीत सकता है। मन न थकेगा। प्रकृतिकी इस गोदमें, उसकी इस सुषमाने भारतीयोंको आकर्षित कर वहाँ बाँध रखा हो तो इसमें आश्चर्य क्या?

बामियान नाम क्यों पड़ा? हम इसपर दिनभर सोचते रहे। यह शब्द न तो पश्तो है, न परशियन है और न अरबी। इसका
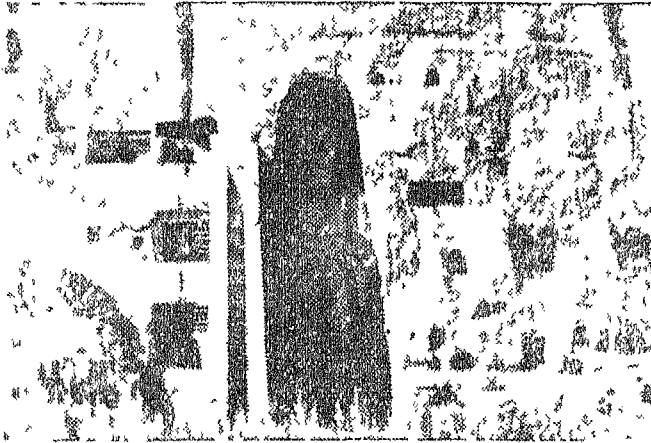
बामियानमें भगवान् बुद्धकी छोटी मूर्ति

प्रस्तुत रूप निश्चय ही किसी मूल शब्दका अपभ्रंश है। बामियान 'बौद्धयान' हो सकता है। बामियान 'बुद्धस्थान' भी हो सकता है। हीनयान, महायान या वज्रयानका यह अपभ्रंश नहीं है।

वज्रयानका अपभ्रंश किसी अंशमें हो सकता है। परन्तु यहाँ वज्रयान सम्बन्धी कोई छाप नहीं दिखाई दी।

मैं होटलकी पहाड़ीपर बैठा हूँ। दृश्य अत्यन्त मनोरम है। सामने भगवान् बुद्धकी दो महाकाय मूर्तियाँ हैं। वे विश्वकी आश्चर्यजनक मानवकृतियोंमें हैं। मिट्टीके पहाड़ोंको काटकर बनायी गयी हैं। पहाड़में खुदी खड़ी हैं जैसे ताखमें किसीने उन्हें रख दिया है। उनके दोनों ओर गुफाओंकी श्रृंखलाएँ हैं। उनमें सहस्रों भिक्षु रहते थे। भूरे पहाड़की पृष्ठभूमिमें काषाय वस्त्रधारी भिक्षुओंकी चलती-फिरती काया भूमिपर चलती वीरबहूटीतुल्य लगती रही होगी। घण्टाध्वनिसे कभी घाटी गूँज उठती रही होगी। आरतीमें, सुगन्धित धूपदानमें, मंगलध्वनिमें उपत्यका प्रतिदिन श्रद्धाभक्तिमें उमड़ते हृदयोंका दर्शन करती रही होगी।

महान् भारतीय आत्माओंने अपनी कला यहाँ प्रदर्शित की थी, इन मिट्टीके पर्वतोंपर। उनकी तूलिकाने प्रत्येक गुफाको, प्रत्येक देवस्थानको अजन्ता और एलोराको मात करनेवाली चित्रकारीसे सजाया था। भारतसे सहस्रों कोस दूर इस उपत्यकाको विश्वका एक प्रधान आध्यात्मिक मिलनमन्दिर बनानेकी महान् कल्पना कितनी महान् रही होगी यह भगवान्की महान् मूर्तिको देखकर जाना जा सकता है। प्रकृतिके अंकमें बैठकर सौन्दर्यप्रिय हृदयने कितनी सुन्दरतासे अपने हृदयका सौन्दर्य प्रकृतिके सौन्दर्यसे मिलानेका सुन्दर प्रयास किया था, यहाँ आनेपर ही समझा जा सकता है।

चुपचाप बैठ जाइये। चिमनीके कण्ठसे उगलता काला धुआँ दिखाई न देगा। विशाल यन्त्रोंके घूमनेकी खड़खड़ाहट सुनाई न पड़ेगी। चिल्लाती मोटर, ट्राम, रेलोंकी मृत्युसे बचनेका प्रयास करते मानव दिखाई न देंगे। कृत्रिमतामें लिपटा आर्त मानव सुखोंकी लालसामें उलझा दिखाई न देगा। ईर्ष्यामें भुनते नर-

नारी मुरझाते दिखाई न देंगे। मायाकी गोदमें खेलता मानव परेशान न दिखाई देगा। प्रकृति लुभायेगी। विस्मृत करा देगी, दुःख-सुखकी घड़ियाँ।

उपत्यकाकी सुषमामें शरीरकी कोमल वृत्तियाँ मरुत्‌की हल्की-हल्की लहरियोंमें लहरा उठेगीं। उनसे उठेगी सुन्दर भावनाएँ। उनसे उठेगी मनकी वह ध्वनि जिसमें मनुष्य भूल जाता है शरीर। वह हो जाता है आत्मलीन। उस आत्मलीनतामें यहाँकी आध्यात्मिक दृश्यावली निश्चय पहुँचायेगी, जहाँ मानव केवल मानव रह जाता है।

पादपहीन, दूर्वाहीन पर्वतमालाओंके बीच हरीभरी उपत्यका, मरुस्थलमें जलाशयतुल्य, महार्णवमें द्वीपतुल्य, मुसकरा रही थी। सफेदेके घने कुंजोंके बीच श्वेतरेखातुल्य सड़क निराशामें आशातुल्य पड़ी थी। मैंने अनेक देशोंमें भ्रमण किया है। अनेक स्थानोंमें प्रकृतिकी सुषमामें अनेक दिन चुपचाप बिता दिये हैं। किन्तु इतनी उत्तम सघन वृक्षोंकी छायामें सड़क नहीं देखी है। उन्हें देखते ही, उनमें प्रवेश करते ही प्यासेको जैसे शीतल जलसे प्रसन्नता होती है उसी प्रकार मन अनायास प्रफुल्लित हो उठता है। पर्वतसे वह हरित वृक्षावली मानव जीवनका हरित रेखा-तुल्य प्रकट होती थी।

विस्तृत घाटीमें स्थान-स्थानपर चुपचाप पड़े कहीं बादाम, कहीं अखरोट, कहीं अनार, कहीं सेवोंके पादपोंके झुरमुट दुःखी मानवके बीच जैसे सुखद मंजिल प्रतीत होते थे। खेतोंकी फसल काटी जा चुकी थी। खलिहानमें रखे गोलाकार गेहूँके बांझे भूरी भूमिमें मानवकी शुष्क भावनातुल्य केन्द्रित थे। चरती काली गायें हरित सरोवरकी लहरियोंपर किसी कामिनीके कोमल काले केशके तुल्य हिलती प्रतीत हो रही थीं।

उपत्यकामें वृक्षोंके बीच छोटे-छोटे चौकोर मकान यज्ञवेदी-

तुल्य थे। उनसे उठती श्वेत व्योमरेखा नील गगनमें श्रद्धाधारा-तुल्य चली जा रही थी। घरोंके आँगनमें बैठी माँ शिशुओंको दूध पिलाती जगत्के स्नेहकी कहानी सुना रही थीं। किसान गेहूँको बालोंको फैला रहा था। परिश्रमको साकार देखता सोचता था, इन अनाजोंमें कितना पर्जन्य है। उनमें अस्थि-मांसमय शरीरके लिए कितनी शक्ति है। बेलचों जैसे लकड़ीके पात्रसे किसान अनाज ओसा रहा था। अपने और अपने चिरसखा बैलोंके पारिश्रमिकको चुपचाप अलग कर रहा था।

बामियान नदीकी लोल-लहरियोंका चुम्बन लेती प्राणवायु उपत्यकाकी अभिरम्यतामें अंगड़ाई ले रही थी, लहरिया गा उठी थी। युगोंसे उपत्यकाको मधुर गान सुनाती आयी है। उनके इस गानेका कितनी सभ्यताएँ सुनकर सो चुकीं। कितनी संस्कृतियाँ पुलकित होकर मुरझा चुकीं। कितनी ही जातियाँ आयीं। राग सुनकर अपना पुराना राग भूल गयीं। उन्होंने भी गाया यहाँकी लहरियोंका गाना। वे मिल गयीं यहाँके लोगोंमें, यहाँकी भूमिमें, यहाँकी प्रकृतिमें। कितने धर्म एकके बाद दूसरे आये। लहरियोंका गान सुने। अपना गान सुनाकर लोप हो गये। किन्तु धारा अब भी अपने चिरपरिचित रागमें गाना गाती बहती चली जा रही थी।

उपत्यका क्षुधार्तोंको न जाने कबसे अनाज खिलाती है। न जाने कबसे श्रान्त पथिकोंको वृक्षोंने अपनी छायामें विश्रान्ति दी है। न जाने कबसे यहाँके पवित्र जलने तप्तहृदय शीतल किया है। न जाने कबसे यहाँके जलमें मृत्तिका सनती रही है। प्रतिमाएँ बनती रही हैं। विसर्जित होती रही हैं। उनमेंसे कुछ प्रतिमाएँ बची थीं। हम उन्हें देखने आये थे।

उनके साननेवालोंकी कहानी सुनना चाहते थे। साननेवाले न थे। उनके हाथोंसे सनी मिट्टीकी प्रतिमा खड़ी थी। मिट्टी एक

मिट्टीको क्या कहानी सुनाती। उनकी कहानी भी है लेकिन प्रकृति ही उसे कह रही थी। कितने लोग आ चुके हैं, कितने लोग जा चुके हैं। कितने आयेंगे, कितने जायँगे। यह क्रम आने-जानेका जारी रहेगा। लेकिन उपत्यका यों ही मुस्कराती रहेगी। मिट्टी यों ही अनाज उपजाती रहेगी। मिट्टीमें मिट्टी यो ही मिलती चली जायगी। मिट्टीका यह खेल चलता रहेगा।

उपत्यकामें पठान भाई घूम रहे थे। उनका लम्बा पुछल्लेदार साफा था। लम्बा कुरता था। अपने मलिन वस्त्रोंमें क्या कभी वे सोचते होंगे अपने पुरखोंके लम्बे इतिहासको? उस महाप्रयासको जिसका फल बामियानकी गौरवगाथा है। क्या वे इन महाकाय मूर्तियोंमें गर्वका अनुभव करते होंगे जिन्हें उनके पूर्वजोंने बनाया था। उनके लिए आज वे महत्त्वहीन थीं? हमारे लिए? हम दूरसे आये थे। उनमें महत्त्व ही महत्त्व भरा पड़ा था। कितना अन्तर था दो मानवोंके दृष्टिकोणमें। उनके लिए वे निर्जीव थीं। केवल शक्तिहीन बुत थीं। मिट्टीका पिण्ड थीं और हम उनमें देख रहे थे मानवीय कलाका उत्कृष्ट नमूना। हम देख रहे थे उनके निर्माताओंके उस दर्शनको जो मूर्तिकी करुणासे उद्भुत हो रहा था।

उनके पूर्वजोंने उनका निर्माण किया। उन्होंने ही उन्हें खण्डित किया। उन्होंने ही उनकी पूजा गर्वसे की थी। उन्होंने हो उसे अपूजनीय बनाया। एक-एक विचार, एक धार्मिक भावना मानव जीवनको कितना बदल देती है। उन्हें क्यासे क्या बना देनेकी ताकत रखती है। मृत्यु और जीवन भी जिसे बदल नहीं सकता उसे विचार अनायास बदल देता है। वह यहाँ आनेपर जैसे स्पष्ट हो गया। जिस उत्साहसे उन्होंने उसे बनाया था उसी उल्लास एवं उत्साहसे उन्होंने उसे तोड़ा भी था।

किन्तु प्रकृति बदली न जा सकी। कितने ही दर्शन, कितने ही विचार, कितने ही धर्म बामियानकी सुन्दर प्रकृतिको बदल न

सके। प्रकृति देती है, वह लेती नहीं। देनेवाला नहीं बदलता। हाथ फैलानेवाला बदलता है, लेनेवाला बदलता है। कायर, व्यसनी, संस्कार बन्धनमें लीन प्रकृतिसे दूर चला जाता है। अपने आपको खो देता है। खोनेपर फिर उसके पास देनेके लिए क्या शेष रह जायगा?

बामियानका उज्ज्वल स्वच्छ सूर्य आज भी उसी प्रकार शुभ्र है। धूलविहीन गगन आज भी निर्मल है। बामियानका जल उसी प्रकार निर्मल है। कोह बाबापर उसी प्रकार बर्फ जमी है। प्राणप्रद वायु उसी तरह जीवनदान कर रही है। पहाड़ियोंपर छिटका सौंदर्य उसी प्रकार मुस्करा रहा है। यदि कोई उसी प्रकार इस घाटीमें नहीं है तो वह स्वयं वहाँका मानव था।

उपत्यकाका धर्म बदलता रहा। भाषा बदलती रही, जाति बदलती रही, साम्राज्य बदलते रहे, राज्य बदलते रहे। शताब्दियाँ न जाने कितने इतिहासोंके पन्नोंको बन्द करती रहीं। लेकिन कोई २५०० वर्षोंमें नहीं बदली तो यह सबको कुछ-न-कुछ देनेवाली उपत्यका थी। वह आज भी वैसी ही है। उस समय भी वैसी ही थी, जब भारतीयोंका कारवाँ उसके किनारे उतरा था।

हम भारतीय वहाँ उतरे हैं। बैठे हैं। कल्पना कर रहे हैं अतीतकी। कल्पना कर रहे हैं भविष्यकी और कल्पना कर रहे हैं हम कभीके अपने ही घरमें अनजानसे बैठनेकी। अपने घरमें ही मेहमान बननेकी।

जहाँ दृष्टि जाती है वहीं अटक जाती है। एक-एक कण, एक-एक कोना अपनी अभिरम्यतामें लिपटा पड़ा है। कम्बुजका एंगकोर वाट यदि अपनी भव्यताके लिए गौरव कर सकता है तो यहाँकी भव्यता भी पीछे नहीं है।

ताजमहल मृत समाधि है। समाधिपर श्वेत कफन जैसे फैला है। परन्तु बामियान जीवित है। उसकी कलामें

आध्यात्मिकता है। उसकी कलामें अपने-आपको उत्सर्ग कर देनेकी कला है। ताजमहल उज्ज्वल चाँदीका दूसरा नाम है। सुवर्ण तथा सम्राट्की शक्तिका प्रतीक है। बामियान मानवीय श्रद्धाका जाग्रत रूप। ताजमहल कब्रिस्तान, भक्तिका आवास है। ताजमहल मानवकी चिरनिद्राका एक रूप है। बामियान चिरनिद्राके पश्चात् चिन्तनकी उज्ज्वल दिशा है। ताजमहल सम्राट्की कल्पना है। बामियान मानवके उत्सर्गकी कहानी है।

मेरी आँखें जैसे ढपने लगीं। घण्टेकी गम्भीर ध्वनिसे जैसे उपत्यका गूँज उठी। सहस्रों गुफाओंसे पीतचीवरधारी भिक्षुपंक्ति धीरे-धीरे निकल रही है। उनमें भारतीय थे। आर्यानाके लोग थे। चीनके लोग थे। यह था पश्चिम-पूर्वका अनेक जातियोंका मिलनमन्दिर।

बामियान शक तथा कुशानकालमें भारतीय राज्यका एक भाग था। प्राचीन तथा मध्ययुगमें वह व्यवसाय तथा वाणिज्यका केन्द्र था। कनिष्कके समयमें बौद्ध संस्थाएँ खूब विकसित हुई थीं। कनिष्कके वंशधरोंके संरक्षणमें बामियान अत्यन्त समृद्धशाली धर्म एवं क्षेत्रीय राज्यकी राजधानी हो गया था। केवल २ हजार गुफाओंमें ही कमसे कम २० हजार भिक्षु रहते रहे होंगे। गृहस्थों तथा अन्य लोगोंकी आबादी २० हजार भिक्षुओंके भरण-पोषण, रक्षादि निमित्त रही होगी। उनकी भी संख्या २० या ३० हजारसे कम न होगी। बामियानकी जनसंख्या उस प्राचीन युगमें ५० हजार होना असम्भव नहीं प्रतीत होता। इतनी आबादीकी गणना प्राचीनकालमें बड़े शहरोंमें होती थी।

बामियानके स्थानीय राजा 'शीर' (श्री ?) कहलाते थे। वे कनिष्कके वंशधर थे। उनका शासन ९वीं शताब्दीतक बामियानपर था। हिन्दू राजा आजसे १ हजार वर्ष पूर्व बामियानमें राज्य करते थे। यह एक ऐतिहासिक सत्य है, इसे मानना ही होगा।

इसलामका उदय हुआ। सफरी जातिने इसलामका सर्व-प्रचार प्रथम बामियानमें किया। महमूद गजनीके राज्यकालमें बामियानके सभी हिन्दू और बौद्ध मुसलमान हो गये। इस समय यहाँ न तो एक हिन्दू है न बौद्ध।

हुएनसांग चीनी पर्यटकने बामियानकी यात्रा सन् ६३२ में की थी। उसके समयमें जनता बौद्धधर्मानुयायी थी। दससे अधिक विहार थे। सहस्रों भिक्षु रहते थे। भगवान् बुद्धकी दोनों महाकाय मूर्तियाँ अपनी पूर्ण गरिमामें वर्तमान थीं। बामियान राजधानी थी।

कोरियाका भिक्षु पर्यटक होई चाओ सन् ७२८में अर्थात् लगभग १०० वर्ष हुएनसांगके पश्चात् बामियान आया था। उसने नगरको अत्यन्त समृद्धिशाली पाया था। विहार जीवनमय थे। हजारों भिक्षु बामियानकी उपत्यकामें पिण्डपात करते विचरते थे। राजा स्वतन्त्र था। किसी भी सम्राट् या बड़े राजाके अन्तर्गत अथवा संरक्षणमें नहीं था। उसकी अश्वारोही और पैदल सेना शक्तिशाली थी।

चीन तथा कोरियाके यात्रियोंने यहाँ १ हजार फुट लम्बी महापरिनिर्वाण मुद्रामें भगवान् बुद्धकी मूर्ति देखी थी। विश्वमें इतनी लम्बी मूर्ति आजतक नहीं बन पायी है। वह मूर्ति कहाँ थी कहना कठिन है। कुछ लोगोंका मत है कि होटलके दक्षिण पार्श्वमें स्थित चोटी जिसे शहर गोलगोला कहते हैं वहीं भगवान्‌की यह विशाल मूर्ति थी। यह पहाड़ी होटलके ४०० मीटर पूर्व होगी।

शहर गोलगोला

यह पहाड़ी होटलके दक्षिण-पार्श्वमें बुद्धमूर्तिवाली पहाड़ीके सम्मुख है। इस उपत्यकाको गोलगोलाकी उपत्यका भी कहते

हैं। इसी नामसे शहर भी था। पहाड़ीपर जनश्रुतिके अनुसार भगवान् बुद्धकी हजार फुट लम्बी महापरिनिर्वाण मुद्रामें मूर्ति बनी थी। पहाड़ीसे दृश्य उपत्यकाका अत्यन्त सुन्दर मिलता है। विशाल नगरका ध्वंसावशेष चोटीपर बिखरा पड़ा है। पुराने दुर्गकी दीवारें अभी तक कहीं-कहीं खड़ी हैं। उनमें तीर तथा गोली चलानेके लिए मुक्के बने हैं। बुर्जियाँ कहीं-कहीं खड़ी हैं। इस समय स्थान जनशून्य है।

मुसलिम कालमें यह स्थान ध्वंस किया गया था। मूर्तियाँ तोड़ी गयी थीं। गाथा है कि जीतेजी सहस्रों हिन्दू और बौद्ध गाड़ दिये गये थे। यहाँ एक प्रकारकी आवाज उठती है। लोगोंका मत है कि बामियान नदीकी कल-कलकी प्रतिध्वनि है। ग्रामीण कहते हैं कि जीतेजी गड़ते हुए मनुष्योंके कण्ठसे निःसृत करुण ध्वनि ही आजतक सुनाई पड़ती है। आवाज गलगलका होती है। अतएव शहरका नाम शहर गलगला या गोलगाला रखा गया है। प्राचीनकालमें बामियान राजाका दुर्ग था। महापरिनिर्वाणशायी भगवान्‌का तीर्थस्थान था।

मुसलमानोंके प्रथम आक्रमण और यहाँके लोगोंके इस्लाम धर्ममें प्रविष्ट होनेके पश्चात् घोरवंशकी एक शाखा शंसबनी राजवंश स्थापित हुआ था। नगर पूर्णतया मुसलिम हो गया था। सन् १२२२ ईसवीमें चंगेज खाँने नगरका आमूल नाश किया था। प्रत्येक नर-नारी कत्ल कर दिये गये थे। यहाँ तक कि एक जानवर भी कत्लेआमसे नहीं बच सका था।

उस समयसे नगर उजाड़ डरावना-सा पड़ा है। इस पहाड़ीकी शृङ्खला बामियान नदीके उतरावतक गयी है। दो-तीन चोटियोंके पश्चात् इन पहाड़ियोंका सम्बन्ध अन्य निकटवर्ती पहाड़ियोंसे टूट जाता है। पहाड़ियाँ भूमिस्तरसे सीधी खड़ी हैं। सुरक्षाकी दृष्टिसे प्राचीनयुगीन नगर दुर्ग बनानेके अनुकूल ही

था। आज सब कुछ उजाड़ पड़ा है। अपनी यात्रामें केवल इसी पहाड़ीपर कुछ वृक्ष मिले, केवल एक पहाड़ीपर कुछ घर नजर आये। इन स्थानोंको देखनेसे दुःख होता है। उपत्यकाका दृश्य एक ओर आकर्षित करता है तो दूसरी ओर अतीतकी स्मृति ताजी करनेसे यह पहाड़ियाँ नहीं चूकतीं। पर्यटक यहाँ स्वयं गम्भीर एवं मूक हो जाता है।

भगवान् बुद्धकी मूर्ति तथा गुफाएँ होटलके सम्मुखवाले पर्वतमें बनी हैं। पर्वत खड़ा है। मिट्टीका है। पथरीला नहीं है। अफगानिस्तानके पर्वत विन्ध्याचल अथवा हिमालयके समान पक्के नहीं हैं। अधिकतर तो पर्वत गोले-गोले पत्थरोंके ढोके और मिट्टीके हैं। बहुतसे केवल पतली चट्टानोंके हैं। आसानीसे खिसक जाते हैं। पहाड़ोंसे पटिया अथवा ओट नहीं निकल सकते। अतएव अजन्ताकी तरह गुफाएँ नहीं बनायी जा सकती थीं, एलोराके मन्दिरोंतुल्य यहाँ भवन अथवा मन्दिर नहीं बनाये जा सकते थे। स्थान तथा पर्वतमाला यद्यपि मिट्टीकी है परन्तु खोदकर मूर्ति, गुफा तथा विहार बनाना यहाँ सम्भव था। यही एक और कारण है कि यह स्थान इस विशाल तथा महान् कार्यके लिए चुना गया होगा।

पहाड़ सख्त मिट्टियोंका है। पानी नगण्य बरसता है। मिट्टीके खसकने या गलकर बहनेका विशेष खतरा नहीं था। दो हजार वर्षोंकी मिट्टीकी दीवालें शहर गोलगोला तथा अन्य स्थानोंपर उतनी ही मजबूत खड़ी मिलेंगी जैसे मालूम होता है कि वे कल ही बनायी गयी हैं।

पश्चिमसे गुफाओंको देखनेका कार्यक्रम बनाना चाहिये। बामियान कस्बेकी पिछली सड़क पकड़कर चढ़ाई चढ़ना चाहिये। देखते हुए पूर्वकी ओर बढ़नेमें सभी स्थान अनायास देखे जा सकते हैं। सभी गुफाएँ तथा मूर्तियाँ एक ही पंक्तिमें बनी हैं।

पश्चिम ओरसे चढ़ाई मिलती है। जीप पहली गुफाके मूलतक आ सकती है। बड़ी कार अथवा बस पहाड़ीके मूलमें ही रुक जायगी, पैदल ऊपर चढ़ना होगा। साथमें एक गाइड ले लेना अच्छा है। यहाँके अफगानी ग्रामीण ही गाइडका काम करते हैं। हिन्दुस्तानी समझते हैं। कुछ उलटा-सीधा समझा देते हैं। केवल दोनों बड़े बुद्धोंको ही दिखाना अपना कर्तव्य समझते हैं लेकिन प्रत्येक गुफा तथा स्थान देखना अच्छा होगा।

चढ़ते ही पाँच चार गुफाओंपर नजर पड़ती है। गुफाओंके सम्मुख पहले पहाड़ी भूभाग अथवा पहाड़ ही खड़ा मिलेगा। गुफाएँ लम्बी होंगी। एक गुफासे अन्य गुफामें जानेका मार्ग बना होगा। यदि उनमें जानेका मार्ग न होता तो आदमी कैसे उनमें जाते और निवास करते? मैं समझता हूँ कि पहाड़का अगला भाग मिट्टीका होनेके कारण कालान्तरमें खिसककर गिर गया। इस समय हमें जो रूप गुफाओंका मिलता है, वह केवल पिछले भागका ही है। पहाड़ोंके इस प्रकार गिरनेका संकेत अभी भी मिलता है। बहुत-सी गुफाओंमें जाया ही नहीं जा सकता। वे ऊँची चोटीपर कबूतरके पंखेकी तरह टँगी हैं।

पहली गुफा अत्यन्त ऊँचेपर है। उसमें मन्दिर बना था। इस मन्दिरकी शैली भारतीय है। गुफा खोदकर खम्भे तथा शिखर बना दिये गये हैं। देखकर अनायास भारतीय छोटे मन्दिरकी स्मृति ताजी हो जाती है। गुफामें जाया नहीं जा सकता। उसके सामनेकी मिट्टी खिसककर गिर चुकी है। मन्दिर टँगा-सा प्रतीत होता है। इसके पश्चात् बुद्ध-गुफाएँ देखी जा सकती हैं। उनकी शैली अजन्ताकी है। पर्वत खोदकर मेहराबदार बनायी गयी है। चौड़ीकी अपेक्षा लम्बी अधिक है। पृष्ठभागमें सिंहासन बना है। बौद्ध गुफाओंकी शैलीकी यही विशेषता रही है। वे लम्बी अधिक और चौड़ी कम होती थीं। पृष्ठभागमें चैत्य अथवा बुद्ध मूर्ति

रहती थी। दीवालमें ताखे दीपक रखनेके लिये बने रहते थे। गगनगामिनी बामियानका यक्षीका चित्रण इतना सुन्दर है कि सिगरियाकी अप्सरा, अजन्तामें चित्रित यक्षिणी एवं नारी-मूर्ति फीकी मालूम पड़ती है। उनके नेत्रोंकी बनावट, केशोंका मस्तकके स्पर्शसे अल्हड़पनके साथ उड़ना, बरौनियोंकी भावभंगी, पलकोंकी मुड़ान, भृकुटीकी शोभा, हाथों एवं पैरोंका उड़ता भाव इतना मनमोहक है कि मनुष्य अपनेको भूल जाता है। अपने मूल रूपमें मानव-हृदयपर वे क्या प्रभाव डालती रही होंगी, कल्पना करनेमें ही एक असीम आनन्दका अनुभव होता है।

गुफाओंमें चित्रकारी मुख्यतः भगवान् बुद्धकी मुद्राओं और उनकी जीवन सम्बन्धी कथा चित्रित करनेकी थी। पत्थरोंकी गुफामें पलस्तर करनेके पश्चात् चित्रकारी करना सरल था। अजन्ता और एलोरामें पत्थरोंपर पलस्तर कर चित्र बनाये गये हैं। यहाँकी गुफाएँ मिट्टीकी हैं। मिट्टीका हवा या पानीसे गिरना अथवा झरना साधारण बात है। उनसे रक्षा निमित्त बड़ा अच्छा ढंग निकाला गया था। लाह अथवा लाख जैसे पदार्थोंका लेपन किया गया है। यह लेपन २ इंच मोटा तक है। इसीके ऊपर चित्रकारी की गयी है।

बामियानमें बरफ लगभग चार महीने पड़ती है। गुफासे एक लाभ है। बरफ गुफामें आ नहीं सकती। गुफा गरम रहती है। बरफ हटानेका प्रश्न उत्पन्न नहीं होता। मकानके छाजनकी समस्या भी परेशान नहीं करती। एक बार गुफा बन जानेपर हजारों वर्ष चलती है। गुफाकी मरम्मत क्या होगी। फर्श खराब हो सकता था। उसकी मरम्मतमें दिक्कत नहीं होती।

आगे बढ़नेपर कई गुफाएँ मिलती हैं। एक मार्ग भगवान् बुद्धकी विशालकाय मूर्तिके शिरोभागकी ओर जाता है। अफगान सरकार पुरातत्त्व सम्बन्धी स्थानोंकी रक्षाका प्रबन्ध कर रही है।

पर्वतपर चढ़ते ही बड़ा ही सुन्दर प्राकृतिक दृश्य मिलता है। वहाँ बैठकर समय बिताना बड़ा अच्छा लगेगा। सामने नीचे छोटा-सा गाँव है। गाँवके पश्चात् पादपाच्छादित उपत्यका है। चारों ओर भूरी पर्वतमाला है। कोह बाबा पर्वत शिखर अनादि कालसे हिमकिरीट धारण किये खड़ा है। कोह बाबा किंचित् लौह वर्ण है। दक्षिण पार्श्वके पर्वतमें अजीब धारियाँ पड़ी दिखाई देंगी। उसका रंग भूरा है। मानव जीवनके मानसिक एवं शारीरिक विकास निमित्त सभी साधन वहाँ उपस्थित हैं। इतने अपूर्व स्थानको यदि लोग उपासनाके लिए न चुनते तो उन्हें और कौन सुगम, सुन्दर स्थान अफगानिस्तानमें मिलता ?

१७५ फुट ऊँची मिट्टीकी बुद्ध-प्रतिमा

भगवान् बुद्धकी चार मूर्तियाँ बच गयी हैं। दो मूर्तियाँ भीमकाय हैं। उन्हींके कारण बामियानकी प्रसिद्धि है। पहली मूर्ति १७५ फुट अर्थात् ५३ मीटर ऊँची है। पश्चिम ओरसे चढ़नेपर वहाँका मार्ग मिलता है। कुछ समय पहले मूर्तितक पहुँचा न जा सकता था। पहाड़ीका अगला भूभाग समयके थपेड़ोंमें खसककर गिर गया है। मिट्टीके गलने अथवा गिर जानेसे इसके पूर्व तथा वर्तमान रूपमें बहुत अन्तर हो गया है। अफगान सरकारने टिन तथा तख्तासे मूर्तिके शिरोभागतक पहुँचनेके लिए मार्ग बना दिया है। पूर्वकालमें मूर्तितक पहुँचनेके लिए पहाड़ काटकर सीढ़ियाँ बनी थीं। वे अब नष्ट हो गयी हैं।

पर्वतमें लगभग २३० फुट ऊँचा विशाल ताखा खोदा गया है। इसी ताखेमें १७५ फुट ऊँची मूर्ति खड़ी है। ताखेके कारण मूर्तिकी धूप, बरसात, बर्फ तथा तूफानसे रक्षा होती है। विश्वमें इतने बड़े ताखेकी कल्पना शायद ही किसीने की होगी। इस
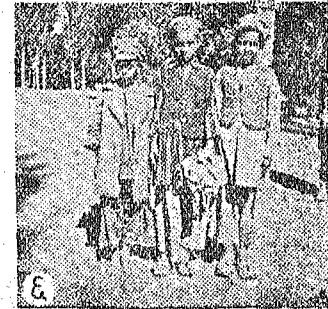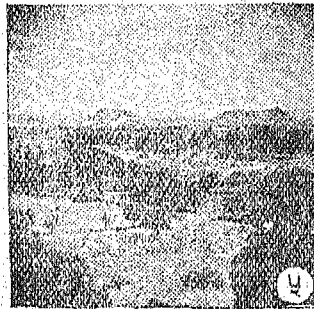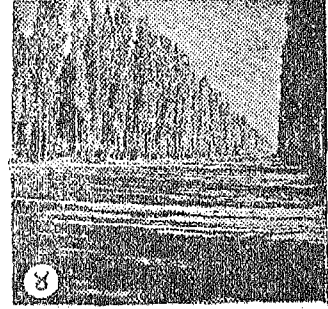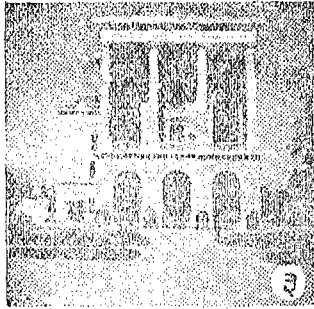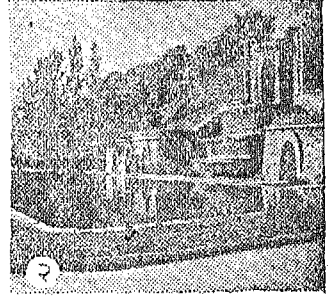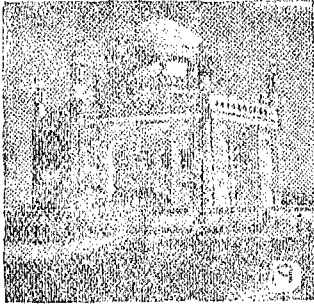
(१) कन्धारमें अहमदशाह अब्दालीका मकबरा, (२) काबुलसे १० मील दूर, पगमान बागका एक तालाब, (३) काबुलमें अमानुल्लाका महल, (४) नये काबुलकी पापलर पंक्तिबद्ध वृक्षोंसे युक्त एक सड़क, (५) काबुलकी घाटीका एक नयनाभिराम दृश्य, (६) तीन अफगान बालक।

प्रकारकी जहाँ कहीं भी मूर्तियाँ हैं, चाहे वे अमेरिका, जापान, भारतमें कहीं भी हों, खुले आसमानके नीचे ही बनी हैं। विश्वकी विशाल मूर्तियाँ पत्थरोंकी ही अधिकतर हैं। परन्तु यह मूर्ति मिट्टीवाले पर्वतकी है। यदि वह ताखेमें न होती तो अबतक नष्ट हो गयी होती। दोनों विशाल मूर्तियोंके बीच १३०० फुटका फासला है। दूसरी बुद्धकी मूर्ति ३५ मीटर अर्थात् १०० फुट ऊँची है।

कहा जाता है कि छोटी मूर्ति बड़ीसे पुरानी है। उसका निर्माण प्रथम शताब्दीमें कुशानराज कनिष्कके समय हुआ था। बड़ी मूर्ति अधिक कलापूर्ण तथा परिष्कृत है। उसके विषयमें कहा जाता है कि पहलीके लगभग २ शताब्दी पश्चात् बनी थी। इसमें सन्देह नहीं कि बड़ी मूर्ति भारतीय है। मुख एवं शरीरका आकार और रूप आर्य-पुरुषका है। छोटीके आकारमें मंगोलियन भाव एवं रूप है। दोनों ही मूर्तियोंके शिरोभागतक पहुँचनेके लिए सीढ़ियाँ बनी थीं। छोटी मूर्तिके ऊपरतक पहुँचनेके लिए बनी सिढ़ियोंका अस्तित्व अभीतक बाकी है। परन्तु इनके भी नष्ट होनेमें अधिक विलम्ब न होगा। पहाड़ोंमें दरार पड़ गये हैं।

बड़ी मूर्तिकी मुद्रा अभय-मुद्रा थी। पश्चिम ओरसे चढ़कर मूर्तिके शिरोभागतक पहुँच जाता है। मस्तकके तीनों ओर ताखेमें गोलाकार मार्ग भीतर ही भीतर सुरंगतुल्य बना है। इस गोलाकार मार्गसे पश्चिमसे पूर्वतक जाया जा सकता है। ताखेके एक कोनेसे दूसरे कोनेतक दर्शक पहुँच सकता है। इस गोलाकार मार्गमें झरोखे बने हैं। मुझे जहाँतक याद है, १७ झरोखे हैं। सात बायें, सात दाहिने तथा तीन पृष्ठभागमें हैं।

इन झरोखोंसे ताखेकी छतमें बनी चित्रकारियोंको अभी भी देखा जा सकता है। वे धूमिल हो गयी हैं। उनमें पशु-पक्षी, भगवान्‌की अनेक मूर्तियाँ चित्रित हैं। बहुतसे लेखकोंने नारी-

मूर्तियोंको अप्सराकी संज्ञा दी है। मैं उनसे सहमत नहीं हूँ। धार्मिक स्थानमें मुख्यतः जहाँ निवर्तक भावनाको प्रश्रय दिया गया हो, अप्सराके अंकनकी कल्पना असम्भव है। उन्हें पशु एवं पक्षी कहना ही उचित है।

उस समय अजन्ता तथा बाघकी गुफाओंके समान मध्यएशिया तथा आर्यानामें भी गुफाओंकी भित्ति छतमें बनानेकी प्रथा प्रचलित थी। चोतूछो, बाजाक्लिक, तूरकान, चोरत्छुक, काइजल, फोन्दुकिस्तान आदि मध्येशियामें भगवान्‌के जीवन तथा जातकोंके आधारपर दीवालों तथा छतोंमें भगवान्‌की जीवन-घटना सम्बन्धी चित्रकारियाँ मिली हैं। अफगानिस्तानमें जहाँ भी खनन-कार्य हुआ है, देवस्थानोंमें चित्रकारियाँ प्राप्त हुई हैं। उनकी शैली एक-सी है। यह शैली विश्वके समस्त बौद्ध स्थापत्य, वास्तु एवं चित्रकलाओंमें अविच्छिन्न रूपसे पायी जाती है। उनकी मानव आकृतियोंमें देश, काल तथा स्थानीय प्रभावोंके कारण स्पष्ट अन्तर प्रतीत होगा। विश्वकी मानव आकृतियाँ रंग-रूपमें एक ही हैं। यही बात बौद्धकलाके विषयमें कही जायगी। उसकी आत्मा एक है। शरीरका रंग-रूप चाहे भिन्न क्यों न प्रतीत हो।

भगवान्‌के जीवन सम्बन्धी कुछ घटनाओंके चित्र शेष रह गये हैं। उन्हें देखते ही मानवकी कलाकृतिपर मानव ही मुग्ध हो जाता है। अजन्तासे अधिक उत्कृष्ट तथा भव्य हैं। आकारोंके रंगरूप एवं भावभंगीका इतना कलापूर्ण चित्रण किया गया है कि चित्रकारके लिए उसकी तूलिकाके लिए अनायास मुखसे प्रशंसा निकल पड़ती है। मैंने अजन्ता भी देखा है। अजन्ताकी मुखमुद्रा, शरीर-रचनाकी अपेक्षा यहाँकी चित्र-रचना हमें अधिक अच्छी मालूम पड़ी। यहाँकी शरीर-रचना शुद्ध आर्य है। उसमें द्राविड़ मुख, शरीर, रंग, रूप, आकार-रचना अथवा शैलीका लेशमात्र भी स्पर्श नहीं होने पाया है। यूनानी मूर्तिकलाका प्रभाव हो

सकता है। वे इतनी उत्कृष्ट एवं सुन्दर इस समय भी हैं कि देखते बनता है। रचनाकारकी आत्मा भारतीय थी, उसने सुन्दर आकर्षक नारी-मूर्तिमें आध्यात्मिकता भर दी है। उसने भारतीय शैलीको भारतसे हजारों मील दूर बड़ी सुन्दरतासे चित्रित किया है।

पृष्ठभागके मध्यवर्ती झरोखेसे हम भगवान्‌के ऊर्णपर बैठ गये। इस मूर्तिकी विशालताकी कल्पना इसीसे की जा सकती है कि भगवान्‌के मस्तकके बाल अर्थात् ऊर्णपर १५ व्यक्ति अच्छी तरह बैठ सकते हैं। चार आदमी सो सकते हैं। मूर्तिपर वहाँके लोग जूता पहनकर चले आते हैं। हम लोगोंने जूता उतार दिया था। नीचे देखना खतरेसे खाली नहीं है। झाँई आती है। किंचित् असावधानीसे आदमी नीचे टपक सकता है। इस ऊर्णपर बैठ जानेके पश्चात् चित्रकारीका पूर्ण दृश्य मिलता है।

ऊर्णपर बैठ जानेके पश्चात् चित्रकारी तथा किन वस्तुओंसे मूर्ति-रचना की गयी है, पता चलता है। ऊर्णपर पलस्तर शेष नहीं रह गया है। मूर्ति पर्वत काटकर बनायी गयी है। परन्तु उसका अलंकार आदि कंकरीट तथा मिट्टीके मिश्रणके पलस्तरसे बनाया गया है।

बैठ जानेपर दाहिनी ओरकी चित्रकारीपर दृष्टि पड़ती है। चित्रकारीमें पीला, हरा, लाल, श्वेत, काला आदि विभिन्न रंगोंका प्रयोग किया गया है। अफगानिस्तानमें पीपलका पेड़ नहीं होता। चित्रोंमें हमें पीपल अर्थात् बोधि वृक्षके पत्ते, कमल, उड़ते मेघ तथा भगवान्‌की मूर्तियाँ बनी मिलीं। उनके नेत्र अर्ध-स्फुटित हैं। उनसे करुणा निखरती है। यक्षिणी किंवा नारियोंकी कलाइयोंमें कंकण हैं। चूड़ियाँ हैं। वे साड़ी पहने हैं, उनका दुपट्टा उड़ता दिखाया गया है। कण्ठमें मोतियोंकी माला अथवा कण्ठहार है। कानोंमें कुण्डल हैं। केश काले लम्बे हैं। उँगलियाँ

पतली तथा अजन्ता शैलीकी आध्यात्मिकता अथवा मुद्राएँ प्रकट करती हैं। कटि पतली है। दो रमणियाँ स्पष्ट दिखाई पड़ती हैं। उनके स्तन उत्तुङ्ग हैं। मैं चित्रकार नहीं हूँ। उनकी बारीकियोंको समझ नहीं सकता। वस्तुतः मन उन्हें देखकर कह उठा—भारत कितना समीप है, भारतसे दूर रहनेपर भी।

पुरुषोंकी आकृतियाँ कम आकर्षक नहीं हैं। वे प्राचीन शैलीकी द्योतक हैं। उत्तरीय स्कन्ध प्रदेशपर उड़ती दिखायी गयी है। कटिमें सुन्दर महीन धाता एवं मेखला है। अलंकृत हैं। कलाइयोंमें कंकण, हाथोंमें भुजबन्ध तथा कण्ठमें सुन्दर माला है। वे भगवान् बुद्धको मेघमालाओंमें उड़ते पुष्प चढ़ाने आ रहे हैं। उनमें तथा अजन्ताके पुरुषोंकी वेश-भूषामें इतना साम्य है कि अनायास मन कह उठता है कि दोनोंका चित्रकार एक ही था।

बायें पार्श्वमें भी चित्रकारी है। इस ओर बुद्धकी चार मूर्तियाँ भित्तिपर बनी हैं। उनकी मुद्रा धर्मचक्रप्रवर्तन है। चार तो अभी भी अपनी पूर्णतामें वर्तमान हैं। इस ओर भी पीपलके पत्ते, नर-नारी, पशु-पक्षी चित्रित थे। भगवान्के शिरोभागपर बैठ जानेपर सामनेका दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई पड़ता है। सामने होटल, बामियान नदी, सूखा कोह बाबा तथा उसके पीछे बरफका पर्वत दिखाई देता है। नीचे गाँवोंकी आबादी है।

हम लोग जिस मार्गसे आये थे, उसीसे लौट चले। पर्वतसे उतरकर नीचे आये। इस पर्वतके नीचे बड़े बुद्धसे छोटेतक जानेके लिए सड़क बनी है। मोटर जा सकती है। हम पैदल ही बड़ी मूर्तिके प्रशस्त प्रांगणमें आ गये। इस महान् मूर्तिकी तुलनामें हम चींटीतुल्य छोटे थे। सम्मुख खड़े होकर उसे निरखनेमें एक प्रकारका रोमांच हो उठता है। दूरसे वह इतनी भव्य नहीं मालूम होती जितनी नजदीकसे।

विशाल मूर्ति सीधी खड़ी है। दोनों पैरोंके नीचेसे भरी ट्रक

निकल जायगी। पाँवकी एक उँगलीपर एक आदमी अच्छी तरह बैठ और सो सकता है। मूर्ति भग्न करनेकी एक मुसलमानी प्रथा थी। वे मूर्तियोंके हाथ-पैर तथा नाक-कान तोड़ देते थे। मूर्तियोंको इसलिए तोड़ते थे कि जनतापर प्रभाव पड़ जाय कि वे जिस देवकी पूजा करते हैं उनमें कोई शक्ति नहीं है। मूर्तियाँ निर्जीव पाषाण किंवा मृत्तिका हैं। इसी भावनासे प्रेरित होकर इस्लामके प्रचारकोंने अत्यन्त उल्लाससे मूर्तियोंको खण्डित किया था। यह उनके धार्मिक कृत्यका एक अंग मानी जाती थी। इस विशाल मूर्तिके ऊपरी ओष्ठसे मस्तकतकका भाग तोड़ दिया गया है। नाक, आँख एवं मस्तक गायब है। मालूम होता है जैसे किसीने आधा मुख कानोंतक छील दिया है। दाहिना पैर ठिहुनीतक तथा बायाँ पैर कटितक क्षत है। बायाँ और दाहिना, दोनों हाथ केहुनीतक टूटा है। जो कुछ भी अवशेष है उससे मूर्तिकी सुन्दरताकी कल्पना की जा सकती है।

मूर्तिकी मुद्रा क्या थी?

मैंने मूर्तिका अध्ययन किया। मैं इसी निष्कर्षपर पहुँचा हूँ कि मूर्तिकी मुद्रा अभय-मुद्रा है। बायाँ हाथ बायें पैरकी सीधमें लटका है। दाहिना हाथ किहुनीसे उठा अभय-मुद्रामें था। दाहिनी ओरके चीवरकी लटकन अभी वर्तमान है। पैरोंके बीचमें चीवरकी धारी है। चीवर कण्ठप्रदेशसे आरम्भ होकर घुटनेके नीचेतक गया है। उसके ऊपर हाथ घूमकर आनेका कोई चिह्न नहीं है। समस्त कटिके ऊपरका भाग चीवरकी धारियोंसे भरा है। रानपरतक वस्त्रकी धारी अभी शेष है। वामस्कन्धपरसे चीवरकी धारी चलती दाहिने स्कन्धपर गयी है। दाहिना हाथ वस्त्रहीन अथवा खुला नहीं था जैसा कि भिक्षुओंका देखा जाता है। धारियाँ अत्यन्त सुन्दर बनी हैं जिनसे महीन काषाय वस्त्र

ओढ़नेका ज्ञान होता है। इन धारियोंको सीमेण्टकी बनानेके लिए आज लोहेका छड़का प्रयोग किया जाता है। छड़पर सीमेण्ट-का कार्य कर धारी बना दी जाती है। यहाँ मोटी डोरीका प्रयोग मिट्टीको पकड़ रखनेके लिए किया गया था। कुछ धारियाँ टूट गयी हैं। उनसे डोरियाँ लटकती दिखाई देती हैं। पर्वत काटकर मूर्तिका जैसे स्तर बनाया गया था। तत्पश्चात् मिट्टीके पलस्तर आदिके प्रयोगसे ही वस्त्र, अंग-प्रत्यंग, भावभंगी प्रदर्शित किये गये थे। बायें हाथके बनानेमें इसी शैलीका प्रयोग किया गया था। उनमें चौकोर दो वर्ग फुटके मुक्के हैं। उनकी तायदाद पचासोंकी होगी। उनमें मोटी लकड़ियाँ लोहेके गाटरके स्थानपर लगाकर बायाँ हाथ ऊपरसे नीचे लाया गया था ताकि मूल मूर्ति-से हाथ अलग न हो सके।

दाहिने हाथकी अवस्था भिन्न है। वह अभय-मुद्रामें उठा था। अतएव हाथकी केहुनीके समीप बहुत बड़ा मुक्का है। उसीमें लकड़ीपर, जो कमसे कम चार वर्ग फुटकी रही होगी, मिट्टी छोपकर हाथ ऊपर उठाया गया होगा। दाहिने पैरकी दाहिनी ओर चार-पाँच मुक्के एक वर्गफुटके मिलेंगे। इसीपर दाहिने हाथकी झूलती चीवर झुलायी गयी थी। यदि कन्धेपर चादर पड़ी हो और हाथ अभय-मुद्रामें उठाया जाय तो वस्त्रके दो स्तर झूलेंगे। इसी प्रकार इस मूर्तिमें भी है। दाहिना झूल वर्तमान है। बायाँ झूल टूट गया है।

बड़ी मूर्तिकी तुलना भारतीय संग्रहालय, राष्ट्रपति भवन, दिल्लीके दरबार हालके सिंहासनके पीछे रखी मथुराकी बुद्धमूर्तिसे की जा सकती है। यह मूर्ति मथुरा संग्रहालयमें थी। वहाँसे इस समय भारतीय संग्रहालयमें रखी गयी है। अन्तर केवल यह है कि इस मूर्तिमें अलंकृत प्रभामण्डल है। बामियानकी बड़ी मूर्तिमें अलंकृत प्रभामण्डल नहीं है। इन दोनों मूर्तियोंको

देखकर कोई भी कह सकता है कि एक-दूसरेकी नकल है। नालन्दामें प्राप्त बुद्धकी अभय-मुद्रा प्रतिमा (राष्ट्रीय संग्रहालय, दिल्ली) बामियानसे मिलती है परन्तु उतनी नहीं जितनी मथुराकी। सुलतानगंज, बिहारमें प्राप्त कांस्य मूर्तिकी शैलीसे भी मिलती है। यह प्रतिमा इस समय बरमिंघम संग्रहालयमें है लेकिन बहुत कम। नालन्दा तथा अमरावतीमें प्राप्त प्रतिमायें, जिसमें राहुल अपना दाय माँग रहे हैं। भगवान्‌के रूपसे बामियानको मिलानेका प्रयास करना ठीक नहीं होगा। बामियानकी मूर्तिके समीप कहीं भी राहुलकी मूर्ति होनेका प्रमाण अथवा चिह्न नहीं मिलता। इस मुद्रा तथा अभय-मुद्रामें बहुत ही कम अन्तर है अतएव भ्रम उत्पन्न हो सकता है। जहाँ भी कहीं इस प्रकारकी मूर्ति पायी गयी है वहाँ राहुल माता यशोधराके साथ दिखाया गया है। नालन्दाका राहुल-प्रतिमाके साथ भगवान्‌का बायाँ हाथ उठा है और अमरावतीका दाहिना। बामियानमें दाहिना हाथ ही उठा दिखाया गया था। अभय-मुद्रा केवल दाहिने हाथसे ही प्रकट की जा सकती है। मथुराकी मूर्तिमें जैसी पैर तथा वस्त्रोंकी धारियाँ दिखायी गयी हैं ठीक उसी प्रकार बामियानमें भी दिखायी गयी हैं। अन्तर केवल इतना है कि मथुराकी मूर्तिमें ऊर्मि कुछ ऊँची है। बामियानमें वह अधिक सन्तुलित है। मध्यएशियाके करसाई स्थानमें भी बुद्धकी एक मूर्ति अभय-मुद्रामें मिली है। वह भी बामियानसे मिलती है। बामियानकी मूर्ति अधिक परिष्कृत तथा सुन्दर है। करसाईकी कुछ भद्दी तथा मंगोलियन आकृतिसे मिलती है। मथुराकी मूर्ति पाँचवीं शताब्दीके लगभगकी है। बामियानकी यह मूर्ति कमसे कम माननेपर भी कुशान कालसे आगे नहीं आती। अतएव बामियानकी मूर्ति मथुराकी गुप्तकालीन मूर्तिसे लगभग ५ शताब्दी पुरानी होगी। मथुरा मूर्तिके कलाकारने बामियानकी मूर्तिसे प्रेरणा ली

होगी । बामियानकी मूर्ति प्रभामण्डलविहीन है । मथुरामें प्रभामण्डल लगाना ही यह सिद्ध करता है कि बामियानकी मूर्तिपर ही और अधिक कार्य कर उसे परिष्कृत तथा सुन्दर बनाया गया है ।

पथके पीछे गुफाएँ हैं । तीन गुफाएँ ठीक पीछे बनी हैं । पूर्वी तथा दक्षिणी दीवाल और पैरके नीचे एक-एक गुफा हैं । दोनों पैरके नीचेसे मध्यकी गुफा होगी । मूर्तिके बायें भागमें ३ और दायें भागमें ३ गुफाएँ हैं । और भी गुफाएँ रही होंगी परन्तु सामनेका पर्वत खिसकने या मिट्टी गिर जानेके कारण उनका लोप हो गया है । वाम भागकी अन्तिम चौकोर और दो गोल हैं । पृष्ठभागमें बरामदा है और उसके पश्चात् ३ गुफाएँ हैं । गुफाएँ सुन्दर हैं । ३० या ४० मनुष्योंके बैठने लायक सुन्दर बनी हैं । निर्माणकालमें यहाँकी समस्त गुफाएँ तथा विशाल ताखेकी दीवाल २०० फुट ऊँची होगी । दीवाल तथा छत सभी चित्रोंसे चित्रित थीं । उस समय यह स्थान कितना सुन्दर एवं जीवनमय रहा होगा और अब क्या है, सोचकर हृदय भर आता है ।

दाहिने पाँवका पुरत पाँव बिलकुल छिन्न-भिन्न हो गया है । बायें पैरका ऊपरी भाग अभी शेष है । उँगलियाँ प्रायः नष्ट हो गयी हैं । उनका केवल आकार बाकी है । मूर्तिकी मिट्टी भूरी है । पलस्तर भी भूरा है । मूर्ति सादी, केवल मिट्टीकी थी । अलंकृत नहीं थी । किसी प्रकारका रंग नहीं चढ़ाया गया था । बौद्ध स्थापत्यकलाकी यह विशेषता रही है कि मूर्तिपर रंग आदि नहीं लगाते थे । मालूम होता है कि इसका यहाँ कठोरतापूर्वक पालन किया गया था ।

छोटी बुद्धमूर्ति

हम लोग आगे बढ़े । सड़क पर्वतके समानान्तर जाती है । गुफाओंकी पंक्तियाँ समाप्त नहीं होतीं । गुफाओंकी तीन या चार

पंक्तियाँ खड़े पर्वतमें खुदी हैं। उनमें पहुँचा भी नहीं जा सकता। पहले मार्ग अथवा उनके सम्मुख पर्वतीय छोटा मैदान रहा होगा। एक गुफामें चित्रकारी नीचेसे दिखाई दे रही थी। आगे बढ़नेपर एक गुफामें बुद्धके अनुरूप दूसरी छोटी मूर्ति मिलेगी। इसमें भी कुछ चित्रकारी बनी है। कुछ और आगे बढ़नेपर ध्यानी बुद्धकी बैठी मूर्ति मिली। यहाँकी गुफाओंके चित्र अन्य गुफाओंकी अपेक्षा अधिक स्पष्ट थे। वे चित्र सभी ध्यानी बुद्धके पद्मासीन मुद्रामें थे। चित्रित मूर्तियोंके वामस्कन्धपर चीवर थे। बायाँ हाथ चीवरके नीचे था। दाहिना हाथ खुला था। गुफामें पलस्तर करनेके पश्चात् उसकी दीवारोंपर चित्रकारी की गयी थी।

आगे बढ़नेपर पद्मासीन बुद्धकी मूर्ति एक गुफामें मिली। मूर्तिका शिरोभाग ही स्पष्ट था। नीचे कई पंक्तियाँ गुफाओंकी थीं। उसके पश्चात् पुनः ध्यानी बुद्ध मिले। पद्मासीन थे। केवल आकारमात्र शेष रह गया है। यहाँपर ६ पंक्तियाँ गुफाओंकी हैं। मूर्ति भग्नावस्थामें है। गुफामें चित्रकारी है। मालूम होता है कि इस स्थानपर कमसे कम २० फुट चौड़ा पहाड़ सामने रहा होगा। वह गिर गया है, एकत्र मिट्टीका ढूहा इसका स्पष्ट प्रमाण था। इस मूर्तिके ऊपर प्रतिमाएँ चित्रित हैं। बायाँ हाथ चीवरके नीचे तथा दाहिना खुला है। मस्तकके पीछे प्रभामण्डल बना है। गुफाके द्वारपर पानी, बर्फ आदिके गिरने और खसकनेका चिह्न स्पष्ट लक्षित होता है।

बुद्धकी दूसरी विशाल मूर्ति ३५ मीटर ऊँची है। मूर्ति तथा पर्वतमें दरारें पड़ गयी हैं। पहाड़को गिरनेसे बचानेके लिए अन्तरराष्ट्रीय पुरातत्त्व विभागकी सहायतासे पर्वतको रोकनेका महाप्रयास किया गया है। ईंटको दोहरी दीवारसे पहाड़को रोका गया है। मूर्तिके ताखेके दोनों ओर गुफाएँ हैं। पर्वतीय गुफाएँ ६ पंक्तियोंमें होंगी। दाहिनी ओरकी गुफाएँ अधिक चौड़ी और

चौकोर हैं। मूर्तिके शिरोभागपर पहुँचनेके लिए पर्वतके भीतरसे ही सीढ़ियाँ ऊपर गयी हैं। सीढ़ी पर्वतको काटकर बनायी गयी है। सीढ़ियाँ आसपासकी गुफाओंमें जानेके लिए भी मार्गका काम करती हैं। इन सीढ़ियोंपर चढ़ना खतरेसे खाली नहीं है। वे ऊँची हैं। स्थान-स्थानपर कट गयी हैं। कहीं टूटी हैं। उनकी मरम्मत की गयी है। भय मालूम होता है उनकी दरारोंको देखकर। पर्वत ही जैसे भीतरसे चकनाचूर हो गया है। कमजोर हृदयके लिए उसपर चढ़ना ठीक न होगा।

सीढ़ियोंसे ऊपर पहुँचते हैं। पहली मूर्तिके ढंगसे इसमें भी पृष्ठ-भागमें अर्ध-चन्द्राकार सुरंग-सी बनी है। उसमें झरोखे हैं। उनसे मूर्तिका शिरोभाग तथा छत और दीवारोंपर बनी चित्रकला देखी जा सकती है। पृष्ठभागके मध्यवर्ती झरोखेसे जाकर ऊर्मिपर बैठा जा सकता है। ऊर्मिपर दस व्यक्ति आसानीसे बैठ सकते हैं। वहाँ वास्तवमें भय मालूम होता है। न जाने कब पहाड़ टूटकर गिर जाय। अत्यन्त जीर्ण मूर्ति ही कहीं न टूट जाय। पलस्तर बिलकूल टूट गया है। दरारें पड़ गयी हैं। यह मूर्ति शायद ही ५० या १०० वर्षसे अधिक टिक सके। उसे सुरक्षित रखनेका प्रयास अफगान सरकार कर रही है। वहाँ कुछ असभ्य पण्डित लोग देखने आये थे। ये दीवारोंपर उसी प्रकार अपना नाम-ग्राम लिख गये हैं जैसा भारतमें प्रायः इमारतोंपर लिखा देखा जाता है।

मूर्तिके पैरतक जीप आ सकती है। मूर्तिके पाँवके पास लम्बी दीवार बनाकर ताखेके दोनों भागोंको खड़ा रखनेके लिए प्रयास किया गया है जिससे भीतरकी ओर झुककर गिर न सके। वह दीवार मूर्तिके पैरकी ठेहुनीके कुछ नीचेतक बनी है। मूर्ति खड़ी है। मस्तकसे ऊपरी ओष्ठतकका भाग काटकर गिरा दिया गया है। पहली मूर्तिके समान ही मालूम होती है। दोनोंको

खण्डित करनेकी एक ही शैलीकी योजना जैसे बनायी गयी थी।

वस्त्र या चीवरकी धारी पैरकी ठेहुनीसे ग्रीवातक है। सारा शरीर चीवरसे ढका है। इस मूर्तिकी अभय-मुद्रा नहीं है। दोनों ही हाथ उठे हैं। वे मिले नहीं थे। इस प्रकारकी बहुत मूर्तियाँ थाईलैण्ड (श्याम), कम्बोडिया तथा बर्मामें मिलेंगी। एंगकोर थाम (कम्बुज) तथा बंकाक संग्रहालयमें हमने उन्हें देखा है।

दोनों हाथ कटिके पाससे आगे निकले थे। दोनों हाथोंकी केहुनीकी मुड़ानसे चीवरकी दो धारियाँ मिट्टीकी बनी पैरकी ठेहुनीके नीचेतक आयी हैं। दाहिनी ओरकी दोनों धारियोंकी गिरान अक्षुण्ण है। पैरके पासवाला बायें हाथका चीवर भी सुरक्षित है। शरीरपर तथा रानोंपर वस्त्रके सिकुड़नकी धारियाँ बड़े ही कलापूर्ण ढंगसे बनायी गयी हैं।

पाद-पृष्ठ प्रदेशमें तीन गुफाएँ बनी हैं। वे सुन्दर हैं। उनमें कुछ आलंकारिक कार्य नाममात्रके लिए बचा है। बायीं ओर दाहिनी ओरकी दीवारोंमें भी गुफाएँ थीं। कुछके अवशेषमात्र बाकी हैं। कुछ पहाड़के गिरनेके साथ ही लोप हो गयी हैं। यह मूर्ति भी पर्वत काटकर बनायी गयी है। स्तर तथा अलंकारका काम मिट्टी तथा डोरी लगाकर पहली मूर्तिकी तरह किया है।

इस मूर्तिमें मंगोलियन आकार एवं भावभंगिमा प्रकट होती है। पहली मूर्ति परिष्कृत है। अत्यन्त सुन्दर है। यह मूर्ति कहा जाता है कि कुशानकालके समय प्रथम शताब्दीमें बनी थी। छत तथा दीवारोंकी चित्रकारी देखकर कहा जा सकता है कि उनमें भारतीयताकी उतनी पूर्णता नहीं है जितनी पहली मूर्तिमें है। यहाँकी चित्रित शकलोंमें दाढ़ी, रोमन टोपोधारी व्यक्ति भी चित्रित किये गये हैं। यहाँसे हम लोग गुफाओंकी पंक्तियाँ देखने पूर्वकी ओर चले। अन्तिम गुफाओंमें कृषक अपने जानवर बाँधते हैं। भूसा रखते हैं। सम्भव है कि अधिक बर्फ पड़नेपर वहाँ

शरण भी लेते हों।

हम नीचे उतरे। वहाँ कुछ घरोंकी आबादी है। पानी नालियोंमें बहता मिला। खेत अत्यन्त उपजाऊ हैं। हम खेतोंसे होकर चले। एक खेतमें ईंटों तथा पत्थरोंका गोलाकार ऊँचा ढेर मिला। वह प्राचीन स्तूप था। उसका महत्त्व वहाँवालोंके लिए ईंटों तथा पत्थरोंके ढेरके अतिरिक्त और कुछ न था। सारनाथ-का भी धर्मराजिक स्तूप ईंटोंकी खदान माना जाता था। गाथा है कि काशीराजके कुछ वंशधर उस स्तूपकी समस्त ईंटोंको खोदवाकर उठवा ले गये, पत्थर भी ले गये। स्तूपमेंसे मंजूषामें भग्नावशेष मिले थे। उनका गंगामें प्रवाह कर दिया गया था। स्तूपोंके मूल देश भारतमें स्तूपोंकी यह दुरवस्था कुछ समय पूर्व थी। यदि बामियानके किसान यहाँकी कहानी, यहाँके स्थानोंका महत्त्व भूल गये हों तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं कही जा सकती।

बामियानकी उपत्यकासे ३ मील दक्षिण-पूर्व करक है। वहाँ भगवान् बुद्धकी १५ मीटर ऊँची मूर्ति है। यह मूर्ति पर्वत काटकर बनायी गयी है। काबुल संग्रहालयमें बुद्धकालीन चित्रकारी दीवारोंके पलस्तर सहित उखाड़कर संगृहीत की गयी है। वह बामियान कक्षमें रखी गयी है। वह अधिकतर यहींकी है। वहाँ हम लोग सड़क न होनेके कारण नहीं जा सके। केवल घोड़ों अथवा गदहोंपर जाया जा सकता है। मूर्ति बुद्धकी है। मूर्तिके हाथ-पैर और मुख टूटे हैं, यह नालके आकारकी गुफामें खड़ी है।

बामियानसे ५ मील पश्चिम ४०० मीटर लम्बी एक पहाड़ी है। यहाँ घोड़े या गधेपर जाया जा सकता है। गाथा है कि पैगम्बर मुहम्मद साहबके दामाद हजरत अलीने यहाँ अजदहा मारा था। हजरतका तीर्थस्थान है। इस स्थानपर भी हम नहीं पहुँच सके।

बामियानसे ४७ मील पश्चिम बन्द-ए-अमीरकी झील है। इस झीलमें जल १० मील दूर कपरूकके स्रोतसे आता है। पानी नीला तथा गहरा है। झील पहाड़ोंसे घिरी है। स्थान प्राकृतिक अभिरम्यताके लिए प्रसिद्ध है।

बामियानकी उपत्यकामें बौद्ध कलाकृतियाँ, स्तूप एवं पुरातत्त्व ध्वंसावशेष बिखरे पड़े हैं। क्या ही अच्छा होता, कोई भारतीय विश्वविद्यालय पुरातत्त्व सम्बन्धी अन्वेषण करनेमें हाथ लगाता।

महमूद गजनीसे नादिरशाहतक

आर्यानाका इतिहास इसलामके उत्कर्षके पश्चात् उथल-पथल कर रहा है। सोमनाथके ध्वंस करने तथा भारतमें दूरतक मुसलिम झण्डा फहरानेवाले महमूद गजनीने गजनी शहरको समृद्धिशाली राजधानीका रूप दिया। अफगानिस्तानके उत्तरी भागमें अपनी स्थिति सुदृढ़ की।

इल्काखाँनके नेतृत्वमें ऊइघर, तुर्कोंने अन्तिम समनी राजाओंको परास्त कर आमू नदीके दक्षिण अंचलमें राज स्थापित किया था। महमूदने उन्हें पराजित किया। अपनी स्थिति अफगानिस्तानमें सुदृढ़ करनेके पश्चात् भारतकी ओर चला। भारतपर उसने लगभग १२ बार आक्रमण किया। भारतीय धनसे उसने गजनीको सुन्दर नगरमें परिणत कर दिया।

सोमनाथ मन्दिरका फाटक महमूद गजनी उठा ले गया था। कहा जाता है कि यह फाटक उसकी मजारमें लगा था। प्रथम अफगान युद्धमें सन् १८४२ में लार्ड एलेनबराने अफगान-विजय की। उसकी आज्ञासे वह फाटक भारत लाया गया। आगरेके किलेमें दरबार था। कुछ लोगोंका कहना है कि यह फाटक सोमनाथके मन्दिरका नहीं था। गजनीके कारीगरोंने ही उसे बनाया था। इस फाटकके विषयमें सोमनाथके फाटककी स्थानीय जनश्रुति

होनेके कारण ही भारतमें उसका लाया जाना ठीक मालूम होता है। अन्यथा अंग्रेजोंको उसे भारत लानेकी क्या पड़ी थी। अंग्रेजोंने भारतीय धन तथा भारतीय सैनिकों द्वारा अफगान-विजय प्राप्त की। उसे भारतीय सम्पत्ति समझकर भारतीय भावनाके सम्मानार्थ ही भारत वापस लाये थे।

भारतीय धनसे महमूद गजनीने गजनीमें मकतब खोले। मसजिदें बनवायीं। नगरको तत्कालीन कल्पनानुसार नव रूप दिया। अपनी विजय-यात्राकी स्मृतिमें उसने 'बिहिस्तकी दुलहिन' नामकी मसजिद बनवायी। सोचा था कि जमीनसे आसमान पहुँचनेमें यह मसजिद सेतुका काम देगी। उसने विजयस्तम्भ भी बनवाया। यह स्तम्भ काफी ऊँचा है। आज भी अकेला भग्नावस्थामें खड़ा है। सम्भव है कि इसी स्तम्भसे प्रेरित होकर कुतुबुद्दीन ऐबकने भारतमें इस्लामी सल्तनत कायम हो जानेपर कुतुबमीनार बनवाया हो। कुतुबमीनार विष्णुपद पर्वतपर बनी। विष्णुका यहाँ मन्दिर था। चन्द्रगुप्तके लौहस्तम्भसे सिद्ध होता है। मन्दिरको तोड़कर जो मसजिद बनायी गयी उसका नाम कूवते इस्लाम रखा गया था।

महमूदकी सेवाओंकी प्रशंसा तत्कालीन खलीफाने भी की थी। उसका राज्य पंजाब, अफगानिस्तान तथा आमू दरयाके पारतक विस्तृत था। सन् १०३० में उसकी मृत्यु हो गयी। महमूदका स्थापित राज्य अधिक समयतक स्थायी न रहा। उत्तरमें टुक्यू अर्थात् तुर्क मजबूत होने लगे। पश्चिममें अरबोंके उद्भवके पश्चात् बढ़नेका मौका न था। तुर्क इस्लामके झण्डेके नीचे मुसलमान हो गये। ऊइघर जातिको हराकर सेलजुक लोगोंने अपना आधिपत्य स्थापित किया। यह तुर्क जाति थी। कालान्तरमें तुर्कोंने यूरोपपर आक्रमण किया। तुर्क साम्राज्य स्थापित किया। उनका राज्य मध्य एशियाके तुर्किस्तानसे भूमध्यसागरतक फैल

गया। सन् १०३८ में तुर्कोंने गजनीकी सुरक्षापंक्तिको भंग कर दिया। गजनीके सुलतान मसूद प्रथमने भारतकी ओर ही मुख मोड़ा। शायद वहाँ विजय प्राप्त कर राज्य कायम करना सरल था।

गोरी वंश हिन्दूकुश पर्वतके पश्चिमी भागके पठारोंमें डटने लगा। गोरी वंशीय सुलतान अलाउद्दीनने सन् ११४० में गजनीपर आक्रमण किया। विजय प्राप्त की। शहर जला दिया। उजाड़ दिया। उसका नाम ही 'जहान सुज' अर्थात् पृथ्वी भस्मक पड़ गया। सन् ११८६ में पश्चिमी भारतमें गजनवी वंश जिसे गजनी-का थामिनी वंश कहा जाता है, नष्ट हो गया। कुतुबुद्दीन ऐबक भारतमें मुहम्मद गोरीके उत्तराधिकारीस्वरूप बादशाह हुआ। शीघ्र ही अफगानिस्तान तुर्कोंके प्रभावमें चला गया। गोरी वंश पनप न सका।

चंगेज खाँ

गोबीके रेगिस्तानमें एक नयी शक्ति उदय हो रही थी। उसने सिकन्दरसे भी बड़ी विजय-यात्रा की। उसका नाम चंगेज खाँ था। वह मुसलमान नहीं था। खाँ पद गौरवमात्र है। अपनी विजय-यात्रा करता सीर दरया और फारसके बीच आ गया। उसने केवल विजय ही नहीं की बल्कि नगरोंको बरबाद और लोगोंको उद्वासित करता बढ़ा।

पाश्चात्य इतिहासकार दावा करते हैं कि एशियाने सिकन्दर, हनीबाल, सीजर तथा नैपालियन जैसी महान् सामरिक विभूतियोंको नहीं उत्पन्न किया है। मैं बड़ी विनम्रताके साथ कहना चाहता हूँ कि आधुनिक इतिहासकार पाश्चात्य विद्वान हैं। लेखक भी अधिकतया वे ही हैं। एशियाई लेखकोंने इस ओर कम कलम उठायी है। एशिया अभी उठ रहा है। उसे मालूम भी नहीं कि उसकी भूमिमें कितनी महान् विभूतियाँ जन्म ले चुकी हैं।

परशियाके राजा दारा महान्‌ने यूरोप तथा अफ्रीकामें आधिपत्य अपने सैन्यबलसे स्थापित किया था। मिस्र और यूनान उससे कितनी ही बार मुँहकी खा चुके थे। चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त तथा शशांक, नरेन्द्रगुप्त उच्चकोटिके सेनानी थे। भारतीय परम्परानुसार उन्होंने किसी देशको पराधीन नहीं बनाया अन्यथा वे भी भूमध्यसागरकी नीली शान्त लहरोंके साथ खेलते दिखाई देते। महमूद गजनी, बाबर, शेरशाह, तैमूर और नादिर आदि महान् सेनानी उत्पन्न करनेके लिए एशिया गर्व कर सकता है।

एशियाने एक विभूति चंगेज खाँके रूपमें उत्पन्न की है। उसने, सिकन्दर, सीजर तथा नेपोलियनसे भी अधिक विजय की थी। वह प्रशान्तमहासागरके तटमें यूरोपके हृदयस्थान आस्ट्रियाकी राजधानी, वियेनातक पहुँच गया था। समस्त एशिया, भारतके अतिरिक्त, उसकी सत्ताको स्वीकार कर चुका था। जिन्होंने नहीं स्वीकार किया, उनका स्थान इतिहासमें नगण्य-सा है।

वह आँधीकी तरह उठा। तूफानकी तरह चला। धूमकेतु-तुल्य देशोंपर गिरा। उसकी सैन्य-चातुरीने, उसकी महान् वीरताने किसीको बिना परास्त किये नहीं छोड़ा। वह अपने जीवनमें कभी किसी युद्धमें पराजित नहीं हुआ था। वह सिकन्दर, सीजर, हनीबाल और नेपोलियनसे महान था। उसे पाश्चात्य लेखकोंने शिवाजीके समान डाकू, दाहक, लुटेरेके रूपमें चित्रित करनेका प्रयास किया है। इतिहासपर जितना ही प्रकाश पड़ता जाता है चंगेज खाँ एक महान् योद्धाके रूपमें हमारे सामने आता है। उसने भारतमें आकर भी भारतको लूटा नहीं। बरबाद नहीं किया। वह अपने शत्रु जलालुद्दीनका पीछा करता भारत आया और लौट गया। उसके जैसा महान् सेनानी जगतने आजतक उत्पन्न नहीं किया। नेपोलियन, सीजर और सिकन्दरके साम्राज्योंको मिलाकर जितना भूखण्ड था उससे अधिकपर उसने अकेले अपना

प्रभुत्व स्थापित किया था।

इस समय अफगानिस्तानसे सिन्धु नदीतकका राज्य ख्वारिज़म शाह महमूदके अन्तर्गत था। राज्यके लोग उसे दूसरा सिकन्दर कहते थे। चंगेजके एक कुलने उसे परास्त किया। वह आमू दरयाके पार भागता फारस चला गया। वहीं उसकी मृत्यु हो गयी।

सन् १२२० तक चंगेज खाँ आमू दरयातक पहुँच गया। उसने अपनी एक सेना बदखशान फतह करनेके लिए भेजी। स्वयं बलखपर आक्रमण किया। बलख सुरक्षित नहीं था। आत्मसमर्पण कर दिया। बलखमें उस समय शायद उतनी ही अगणित मसजिदें थीं जितने पहले विहार, चैत्य तथा संघाराम थे। उसने सब मसजिदोंको शहीद कर दिया। राजकीय भवनोंको जमींदोज किया। प्रत्येक नर-नारी मार डाला गया।

बुखारा मुसलिम सभ्यता-संस्कृति एवं धर्मका केन्द्र हो गया था। बीस हजार तुर्क तथा इरानी शहरकी रक्षाके लिए नियुक्त थे। शहरकी शहर-पनाह १२ लीग (३६ मील) के घेरेमें थी। दीवार इतनी मजबूत थी कि उसे तोड़ना कठिन था। चंगेज़ खाँने पूछनेपर कहा—शहर-पनाहकी ताकत उसकी मजबूती नहीं बल्कि उसके अन्दर रहनेवालोंके साहस और शक्तिपर निर्भर रहती है। बुखाराके लोग सामना न कर सके। रातमें वहाँकी सेना पलाइतशाहसे मिलनेके लिए निकल भागी। नगरके इमाम तथा वृद्धजनोंने नगर चंगेजको समर्पित कर दिया।

बुखाराकी विशाल मसजिदके सामने वह खड़ा हो गया। उसने समझा, राजाका यही महल है। लोगोंने कहा, बुखाराकी विश्वविख्यात मसजिद यही है। वह अश्वारूढ़ मसजिदपर चढ़ गया। पेश-इमामके स्थानपर बहुत बड़ी कुरान रखी थी। मुसलिम जनता एकत्र थी। मुल्लाओंने समझा, आसमानसे

अंगारे गिरेंगे । मसजिदको अपवित्र करनेवाला खतम हो जायगा । उसपर खुदाका गजब नाजिल होगा । परन्तु वह बोल उठा—सुनो—मैं यहाँ आया हूँ कहने । अपने गोदामोंको खोलो । हमारी फौजके लिए राशन चाहिये ।

वह बुखाराके चौकमें पहुँचा । सय्यद कुरानशरीफका भाषण कर रहे थे । उसने एक वृद्ध सय्यदसे पूछा—आप कौन हैं ? वे कुछ उत्तर न दे सके । वह तुरन्त मंचपर चढ़ गया । बुखाराकी मुसलिम जनता उसके सामने थी । उसने उनके धर्मके विषयमें पूछा कि इसलाम क्या है ? जाननेपर उसने कहा—मक्काकी केवल यात्रा करना गलती है । भगवान्‌की शक्ति केवल एक जगह नहीं रहती । वह सर्वत्र और सर्वदा रहती है ।

वह बुखारामें केवल दो घण्टा रहकर समरकन्दके लिए रवाना हो गया । बादशाहने वहाँ जाकर शरण ली थी । शाह शहरके चारों ओर नवीन दीवार सुरक्षा निमित्त बनवा रहा था । दीवार पूरी होनेके पहले ही चंगेज खाँ पहुँच गया । बीस बख्तरबन्द हाथी, एक लाख बीस हजार सैनिक नगरके रक्षा-निमित्त तैनात थे । एकाध बार मंगोल सेनाके सामने वे आये परन्तु उनका साहस टूट चुका था । शहरके इमाम और काजीने शहर चंगेज खाँके सुपुर्द कर दिया । वह कभी तुर्कका विश्वास नहीं करता था ।

शाहका पीछा करनेके लिए चंगेज खाँने अपने सेनानायकोंको आज्ञा दी—उसे जिन्दा या मुर्दा, दुनियामें चाहे जहाँ हो, लाओ । यह काम मैं समझता हूँ बहुत मुश्किल न होगा । महम्मदशाह समरकन्दके दक्षिण बलख पहुँच गया था । जलालुद्दीन उत्तर अरल सागरके समीप नयी सेना एकत्र कर रहा था । चंगेज खाँ निशापुर पहुँच गया । आधुनिक तेहरानके समीप ३० हजार इरानी फौज मिली । उसे परास्त किया । शाहने अपना खजाना एक किलेमें रख

दिया। उसे एकमात्र आशा बगदादके खलीफाकी थी। बगदादके खलीफासे वह झगड़ भी चुका था। परन्तु वह चला। मार्गमें ही मंगोल पहुँच गये। उसे कोई पहचानता था न। वह कैस्पियन सागरकी ओर निकल भागा। वह परेशान हो गया।

उसने एक दिन परेशान होकर कहा—क्या विश्वमें मेरे लिए कोई स्थान नहीं है। लोगोंने उसे सलाह दी—कैस्पियन सागर पार कर वह जान बचाये। वह भेस बदलकर कुछ साथियों-के साथ भागा। परन्तु उसे अपना नाम और शाहका पद प्यारा था। मसजिदमें नमाज पढ़ने जाता था। एक मुसलमान नागरिक ने, जिसपर कभी शाहकी सल्तनतमें जुल्म हुआ था, मंगोलको खबर दे दी। मंगोल आये। शाह नावपर भागा। मंगोलका तीर उसके नावतक नहीं पहुँच सका। मंगोल पकड़ न सके। परन्तु वह एक द्वीपपर अपने ही नौकरका एक पुराना फटा कुरता पहने भूखा-प्यासा मर गया। मंगोल सेना रूस तथा यूरोपतक पहुँच गयी।

चंगेज खाँने अफगानिस्तानको पूर्णतया विजय करनेका निश्चय किया। जलालुद्दीन मंगोलोंका सामना करता रहा। वह बड़ा ही वीर था। शाहकी मृत्युके पश्चात् उसने नवीन सेना एकत्र कर ली थी।

कालान्तरमें चंगेजखाँने अफगानिस्तानका प्रसिद्ध शहर हेरात भी विजय कर लिया। जलालुद्दीनके नेतृत्वमें हेरात आदि शहरोंमें विद्रोहाग्नि भड़क उठी। उसने खुरासानी सेनाके विनाश करनेका निश्चय कर लिया। मार्गमें उसे बामियान नगर मिला। वहाँ उसने निश्चय ही भगवान् बुद्धकी खण्डित मूर्ति देखी होगी। उसका क्रोध भड़का होगा। शायद यही कारण था कि उसने नर-नारी, पशु-पक्षी—एक जीवतकको भी बामियानमें जीवित नहीं रहने दिया। समस्त नगरको उजाड़ कर आग लगा दी।

वह आजतक आबाद न हो सका।

जलालुद्दीनने ६० हजार सेना एकत्र कर ली। उसके साथ अफगान सेना भी मिल गयी। बामियानमें मोर्चा लगा। दुर्गकी दीवारपर चढ़नेके लिए ऊँचा पल्ला लकड़ीका था। वह दुर्गसे छोड़े अग्निबाणसे जलने लगे। चंगेज खाँने लकड़ीपर चमड़ा लगवाया। उसने आक्रमणकी आज्ञा दी। नगरकी दीवारके समीप उसका पौत्र मारा गया। लाशको अपने कैम्पमें लाया। शिरस्त्राण फेंक दिया। अपनी सेनाके आगे आया। बामियानपर आक्रमण हुआ शहर गलगलामें, जो वास्तवमें बामियानका दुर्ग और नगर था, घोर युद्ध हुआ। नगरका पतन हुआ।

मंगोल बामियानको 'दुःखा नगर' कहते हैं। उन्होंने भगवान् बुद्धदेवकी खण्डित प्रतिमा देखी होगी। वहाँके हत्याकाण्डका हाल सुना होगा। वे क्रोधित हुए होंगे। शायद इसीलिए बामियान नगरके नर-नारी, जीव-जन्तु सबकी हत्या की गयी। एक पक्षी, एक पशुतक नगरमें न बचा। शहरमें आग लगा दी गयी। शहर गलगोला उजड़ गया। भस्म हो गया। आज उसकी गिरती-पड़ती दीवारें चंगेज खाँका स्मरण दिलाती हैं। उसने जोहकके लाल किलेको भी फतह किया। जलालुद्दीनने गजनीमें जाकर शरण ली। जो मंगोल सिपाही उसके हाथमें पड़ गये थे, उन्हें मार डाला। उनके घोड़े अफगान तथा अपनी सेनामें बाँट लिये। किन्तु अफगानियोंसे कुछ झगड़ा हुआ। अफगान सैनिकोंने उसका साथ छोड़ दिया।

चंगेज खाँकी सेना गजनी उसका पीछा करते पहुँची। जलालुद्दीन गजनी छोड़कर भारतकी ओर भागा। उसने सिन्धुकी घाटीमें आकर शरण ली। वह चाहता था कि सिन्धु पार कर दिल्लीके सुलतानकी सहायतासे चंगेज खाँको हराया जाय। चंगेज खाँकी विजयसे मुसलिम-जगत् क्षुब्ध हो उठा था।

चंगेज खाँकी फौजसे वह ५ दिन आगे था। चंगेज खाँ जलालुद्दीन-को पकड़नेपर तुल गया था। वह बिना विश्राम किये जलालुद्दीनके इतने समीप पहुँच गया कि दोनोंके बीच केवल आधे दिनके सफरका फासला रह गया था।

जलालुद्दीन सिन्धु नदीके तटपर पहुँच गया। सेना समीप आती देख वह परेशान हो गया। सिन्धुकी धारा तेज थी। पानी गहरा था। वह एक पहाड़के करारपर आया। वहाँ नदीका मुड़ाव था। शत्रुसे रक्षा की जा सकती थी। उसने अपने साथियोंसे इसलामके नामपर मरनेके लिए कहा। नदीकी सब नावें इकट्ठा कर डुबा दी गयीं कि कोई साथी मरनेके डरसे नावपर भाग न सके।

चंगेज खाँ पहुँच गया। उसने १० हजार अश्वारोही पीछे रक्षित रखा। जलालुद्दीनने अमीर मल्लिक नायककी सेना नदीके किनारे भेजी। सेना भिड़ी। मंगोल पीछे हटकर बिखर गये। परन्तु चंगेज खाँके लड़केने पुनः व्यूह-रचना की। पहाड़के कारण जलालुद्दीन सुरक्षित था। चंगेजकी सेना मैदानमें पड़ती थी। चंगेज खाँने स्वयं १० हजार अश्वारोहियोंके साथ आक्रमण किया। जलालुद्दीनने अन्त समीप देखा। घोड़े, तीर धनुष और तलवारके साथ तेज धारमें कूद पड़ा। चंगेज उसकी वीरतापर मुग्ध हो गया। पीछा करनेकी आज्ञा न दी। वह सिन्धुके दूसरे तटपर जाकर लग गया।

सिकन्दरके पश्चात् विश्वके अद्वितीय महान् सेनानीकी सेनाने भारतकी भूमिपर पद रखा। मंगोल सेनाने मुलतान ले लिया। लाहौरतक बढ़ी। भारतकी गरमी देखकर मंगोल घबड़ा गये। चंगेज खाँ लौट पड़ा—हमारे लड़के चाहें, यहाँ रहना पसन्द करें, परन्तु मैं नहीं रह सकता। जलालुद्दीनने पुनः लड़नेका प्रयास किया किन्तु प्रयास विफल हुआ। चंगेज लौटा। सिकन्दरके

समान सिन्धुकी धारासे नहीं, पुराने कारवाँके रास्तेसे जो भारत-अफगानिस्तानके बीच सदियोंसे चलता था। लौटते समय उसने पेशावर शहर जीता। यह कुछ अजीब बात है कि विश्वके दो महान् विजेता सिकन्दर और चंगेज खाँ भारततक आकर पुनः पश्चिमी सीमान्तसे ही लौट गये। चंगेज खाँ सन् १२२० ई० में लौटा था।

लगभग एक शताब्दीतक अफगानिस्तान मंगोल राजाओंके अधीन रहा। कुछ समयतक चंगेजके पुत्र ओगताईके अधीन था। उसका नाम खाकन भी था। चंगेजके साम्राज्यका पुनः जब विभाजन हुआ तो यह हलागूके हाथोंमें आया। वह ईरानके अलखान राजवंशका स्थापक हुआ। स्थानीय रियासतें तुर्कोंके हाथोंमें थीं। भारतीय रियासतोंके समान मंगोलका आधिपत्य वे स्वीकार करते थे।

चंगेज खाँका पौत्र कुबलाखान था। वह मंगोल साम्राज्यके पूर्वीय भागका राजा था। प्रसिद्ध पर्यटक मार्को पोलोने सन् १२७१ १२७५ ई० तक उसके राज्यमें पर्यटन किया था। बलखको देखा था। तातारोंने उसका नाश कर दिया था। इस शहरके विषयमें वह कहता है कि नगर सुन्दर तथा बड़ा था। बदखशान-के राजवंशी अपनेको सिकन्दरका वंशज कहते थे। उनके हाथमें सत्ता थी। भारतसे व्यापार होता था। मैदानोंमें भेड़ें तथा घोड़े घूमते चरते थे। नदियाँ जल तथा स्वादिष्ठ मछलियोंसे पूर्ण थीं। निवासी सभी मुसलमान थे। धनुष-बाण चलानेमें प्रवीण थे। लोग गाँवोंमें रहते थे। वे यूनानी बलख कालसे ही आबाद थे। कासगर होता मार्को पोलो चीन चला गया।

सन् १३३३ ई० में इब्नबतूता भारत जाता इस ओर आया था। उसने बलखको उजड़ा और खँड़हर पाया। हेरात शहर चंगेज खाँके आक्रमणसे हुई क्षति लगभग सौ वर्ष बीत जानेपर

भी पूरी न कर पाया था। परन्तु बलख पर फिर अधिकार न कर सका। उसके अस्तित्वका एक प्रकारसे लोप हो गया।

काबुल एक छोटा गाँव रह गया था। इब्न बतूता खावक दर्रेसे गुजरा था। अन्दराब उपत्यकामें आया था। वह मंगोलोंके आक्रमण-मार्गका अनुकरण कर भारत चला। उसने जनस्थानको उजड़ा पाया। गाँव गैर-आबाद थे। खेत सूखे पड़े थे। चंगेजके आक्रमणने समस्त देशको इतना उजाड़ दिया था कि एक शताब्दी बीत जानेपर भी देश सँभल न सका था। कपिसा नगर जनशून्य था। वह कभी बड़ा ही समृद्धिशाली था। गजनी कुछ घरोंकी आबादी' शेष रह गया था। कन्धार ही एकमात्र शहर बचा था। उसे मंगोल नष्ट न कर सके थे। लोग आबाद थे। व्यापार होता था। इब्न बतूताकी यात्रा निर्विघ्न हुई थी। परन्तु काबुल और सिन्धुके बीच उसकी यात्रामें 'अफगानी' कबीलेवाले विघ्न पहुँचाते रहे। इस कबीलेके लिए परशियन जातिका प्रयोग किया गया है। अफगान शब्दका प्रयोग पहले-पहल यहाँ मिलता है।

मध्यएशिया तथा मुख्यतया आमू दरयाके दक्षिणी भागसे मंगोलोंकी सत्ता लोप होने लगी। स्थानीय सामन्त तुर्क थे। केवल उनके दो-एक उपनिवेश, जैसे हजारा आदि, रह गये थे। वे पश्चिम तथा मध्य अफगानिस्तानमें थे। उनके आक्रमणके पश्चात् समस्त अफगानिस्तान लगभग एक शताब्दीतक उजाड़ भूखण्ड रहा। चंगेज खाँ तथा हलागूके अत्याचारोंका जिक्र मुसलिम लीगके नेता भारतमें पुनरावृत्ति करनेके लिए दुहराते रहे हैं।

मंगोलोंने कभी भारत-विजयका निश्चय ही नहीं किया था। उनके लिए भारत भगवान् बुद्धका प्रदेश था। तीर्थस्थान था। गजनीपर अधिकार कर वे इधर-उधर आक्रमण करते रहे। अन्तिम बार सन् १२९९ में उन्होंने भारतके उत्तरी भागकी ओर

बढ़नेका प्रयास किया। किन्तु फिर विचार त्याग दिया गया।

मंगोलोंकी शक्ति क्षीण होनेपर ताजिक-वंशीय राजा सन् १३३२–१३७० तक हेरातमें एक प्रकारसे स्वतन्त्र हो गये थे। सन् १३३६–१४०४ तक अफगानिस्तानके अधिकांश भागपर तैमूरलंगका आधिपत्य स्थापित हो गया था। तैमूरकी राजधानी समरकन्द थी। उसका साम्राज्य इली नदीके दक्षिण तथा पश्चिम फैला था।

तैमूरलंग

तैमूर बरला तुर्कके गुरखान शाखाके वंशमें था। उसकी माता चंगेज खाँकी वंशज कही जाती है। उसने हिन्दूकुश कितनी ही बार पारकर अफगानिस्तानमें अपना आधिपत्य स्थापित किया। सन् १३९८ में उसने अफगानिस्तानके द्वारा भारतपर हमला किया। दिल्लीका बादशाह महमूद तुगलक डरकर गुजरात भाग गया। दिल्लीको खूब लूटा। उनकी हत्या करवा दी। दिल्ली पहुँचते-पहुँचते उसके पास एक लाख हिन्दू बन्दी हो गये थे। नरमुण्डोंका स्तम्भ बनाया। उसने इतनी लूट-पाट की कि महमूद गजनी भी शायद उतनी अधिक न कर सका था।

वह भारतके मुसलिम राजाओंसे नाराज था। वे मूर्तिपूजक हिन्दुओंके साथ सहिष्णुताका बर्ताव करते थे। धार्मिक भावनासे प्रेरित होकर उसने भारतपर जेहाद बोला था। अफगानिस्तानके कुफरिस्तानपर, जो हिन्दूकुशपर्वतके दक्षिणी ढालपर था, आक्रमण किया। लेकिन वहाँके मूर्तिपूजक काफिर पूर्णतया दबाये नहीं जा सके। अभी हालमें अमीर अब्दुर्रहमानके समय वहाँके लोगोंने लगभग तैमूरके आक्रमणके ५०० वर्ष पश्चात् इस्लाम धर्म पूर्णतया स्वीकार किया है।

मुहम्मद तुगलकके भाग जानेपर तैमूरने खिजर खाँ सय्यदको लाहौर-मुलतानका सूबेदार बनाया था। महमूद तुगलकके मरते

ही वह सन् १४१४ में दिल्लीका बादशाह बन गया। तुगलक वंशके लोपके पश्चात् सय्यद वंशकी उसने स्थापना की। सय्यद वंशका भी सन् १४५१ में लोप हो गया। अन्तिम बादशाह आलमशाहपर लाहौरके सूबेदार बहलोल लोदीने आक्रमण किया। शाह भागकर बदायूँ गया। वहीं उसकी मृत्यु हो गयी। बहलोल-लोदी दिल्लीके तख्तपर बैठा। राजाओंपर दया करता था। भारतके राष्ट्रीय फल आमको वह उतना पसन्द नहीं करता था जितना मजार-शरीफके खरबूजा और तरबूजको।

सन् १४०३ में हेनरी तृतीयका राजदूत समरकन्द पहुँचा था। उसने उस समय तैमूरको प्रायः अन्धा पाया। वह गद्दीपर बैठा रहता था। हिलडुल नहीं सकता था। राजदूत बलखसे होता गया था। बलखके विषयमें कहता है कि बाहरी तथा भीतरी शहर-पनाहके बीच खेती होती थी। उसमें रूई बोई जाती थी। शहरके अन्दरूनी हिस्सेमें कुछ आबादी थी। आमू दरया तुर्क तथा पारसी भाषा-भाषियोंकी एक प्रकारसे प्राकृतिक सीमा थी। आमूके दक्षिण तथा पश्चिममें चगताई गोत्रीय लोग रहते थे। वे फारसी बोलते थे। इस समय आमू दरयाकी उपत्यकाकी भाषा पूर्णतया तुर्क है। पन्द्रहवीं शताब्दीके मध्यतक अफगानिस्तान प्रायः तैमूरके पुत्र रुखके आधिपत्यमें था। हिन्दूकुशका दक्षिणी भाग उन दिनों छोटा हिन्दुस्तान कहा जाता था। रुखके समयमें इस्लामी संस्कृति, साहित्य तथा धर्मका विशेष प्रचार तथा विकास हुआ। रूसमें राष्ट्रीय जागरण, फारसमें सफवी वंशके उद्भव, शयबानी उजबेकके शक्तिशाली होनेके कारण तैमूरलंगका स्थापित किया साम्राज्य धीरे-धीरे क्षीण होने लगा। तैमूरके वंशजोंका भविष्य मध्यएशियामें अन्धकारमय हो गया।

बाबर

बाबरका पिता उमरशेख तैमूरलंगके प्रपौत्रका पौत्र

था। उसकी माँ चंगेज खाँकी १२वीं पीढ़ीकी थी। बाबरका वंश इस प्रकार बरलस तुर्क तथा चंगेज खाँके रक्तके मिश्रणका परिणाम था। चगताई वंश तथा मंगोलके मिश्रण तथा कभी-कभी एक ही नामका प्रयोग इसीलिए उसके वंशके लिए किया जाता रहा है। मुगल शब्द मंगोलका ही अपभ्रंश है। तैमूरके वंशज परस्पर संघर्षशील थे। उजबेक शैबानी खाँके नेतृत्वमें शक्तिशाली होते जा रहे थे। शैबानी चंगेजके ज्येष्ठ पुत्रका वंशज था। वही समरकन्दका राजा था।

बाबरका जीवन अत्यन्त संघर्षमय था। उसका असली नाम जहीरुद्दीन मुहम्मद था। बाबर अपने समयका सर्वश्रेष्ठ सेनानी था। वह आधुनिक पश्चिमीय अस्त्र शस्त्रोंके प्रयोगको जानता था। अपनी बगलमें दो आदमियोंको दबाकर दौड़ सकता था। कुशल अश्वारोही था। घोड़ेकी पीठपर बैठा अस्सी मील लगातार जा सकता था। उसके मार्गमें जितनी नदियाँ पड़ती थीं उन्हें तैरकर पार करता था। उसने अपनी आत्मकथा लिखी है। उसका नाम 'बाबरनामा' है। फारसी तथा तुर्की साहित्यका श्रेष्ठ ज्ञाता था। कवि था। लेखक था। समरकन्दमें उसके लिए स्थान न था। अपने कुछ साथियोंके साथ कर्घानमें चला आया। एक बार उसने समरकन्द ले भी लिया। परन्तु उजबेकोंने उसे पुनः निकाल बाहर किया। अपनी २२ वर्षकी अवस्था सन् १५०४ में उसने अपने सम्बन्धी हुसेन बेग बैकरा हेरातके राजाके यहाँ आनेका निश्चय किया।

जूनमें आमू नदी पार कर कहमर्द उपत्यकामें हिन्दूकुशके उत्तरी ढालपर आया। यहाँ हिसारके राजाके साथियोंसे उसकी मुलाकात हुई। किपचक दर्रासे वह घोरबन्ध उपत्यकामें आया। अक्तूबर सन् १५०४ में उसने काबुलपर विजय की। उस समय मंगोल इलखानके वंशज काबुलपर राज्य कर रहे थे।

भारतमें आक्रमण तथा राज्य स्थापित करनेके लिए आवश्यक था कि काबुल क्षेत्रपर आधिपत्य कायम रहे। गजनी, गोरी तथा कन्धारके लोग भारतमें पैर नहीं जमा सके। मुख्य कारण यह था कि काबुल क्षेत्रमें वे प्रबल नहीं थे। कपिसाके नाशके पश्चात काबुल ही सामारिक दृष्टिसे उत्तम स्थान था। काबुलसे मध्य-एशिया तथा भारत दोनोंपर राज्य स्थापित कर दृढ़तापूर्वक राज किया जा सकता था। काबुलके हिन्दू राजाओंने यही किया था। मौर्य तथा गुप्तोंकी भी यही नीति थी। मुगल लगभग तीन सौ वर्षोंतक भारतमें जमे रहे। उसका मुख्य कारण यही था कि भारतपर आक्रमणका द्वार काबुल था। काबुलसे जलालाबाद, खैबर और पेशावरका सीधा तथा सरल मार्ग था, उसे उन्होंने अपने हाथमें रखा। अंग्रेजोंने भी भारतमें राज्य स्थापित करनेके पश्चात् इसी नीतिका अनुकरण किया। अफगानिस्तानको नेपालतुल्य एक बफर राज्य रखा। अफगानिस्तानका वही अमीर हो सकता था जो अंग्रेजोंका समर्थक होता था।

सन् १५०६ में शैबानी खॉने तैमूरके वंशजोंसे हेरात ले लिया। सन् १५०९में फारसके सफवी राजवंशके संस्थापक शाह इस्माईल-ने हेरात ले लिया। शैबानी खाँ मारा गया। बाबरने अफगान शहर कुण्डुजसे समरकन्दपर आक्रमण किया। उसकी सहायता शाह इस्माईलने की थी। शाह इस्माईल शीया थे। बाबर सुन्नी था। उनके सन्धि तथा मेलको सुन्नियोंने नापसन्द किया। उजबेक सुन्नी लोग उसके खिलाफ उठ खड़े हुए। उसे समरकन्द छोड़कर भागना पड़ा। वह सन् १५१४में काबुल पुनः लौट आया।

शाह इस्माईलने हेरात और बलख उजबेकसे ले लिया। बदखशान बाबरके आधिपत्यमें रहा। अपने बड़े पुत्र हुमायूँको उसने वहाँका शासक नियुक्त किया। फैजाबादसे हुमायूँ शासन करने लगा। बाबरने बलखसे भी सम्बन्ध कायम रखा। वहाँ

सफवी राजाओंकी तरफसे तैमूर वंशका एक शासक था।

पन्द्रह वर्षोंतक बाबर अपनी स्थिति अफगानिस्तानमें सुदृढ़ करनेमें लगा रहा। उसने इलखानके वंशज अरफानसे कन्धार ले लिया। अफगानी रियासतोंके विरुद्ध उसका अभियान जारी था। बाबरने अपने जीवनचरित्रमें 'अफगान' उन लोगोंके लिए लिखा है जो काबुलके दक्षिण पेशावरतक आबाद थे। इस जातिसे वह मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था। उसने युसुफजाई गोत्रीय बीबी मुबारिकासे सन् १५१९ में शादी की।

सन् १५२१ में बाबर हुमायूँसे फैजाबादमें मिला। सन् १५२५ में वह बलख गया। उसके वहाँ जानेके कारण उजबेक लोगोंको साहस न हुआ कि बलखपर आक्रमण करें। अफगानिस्तानमें अपनी स्थिति सुदृढ कर उसने भारतकी ओर मुख फेरा।

अठारह अक्तूबर सन् १५२५ को उसने काबुलसे भारतकी ओर प्रयाण किया। बाघ-ए-वफाके समीप हुमायूँ बदखसानकी सेनाके साथ पितासे आ मिला। १२ दिसम्बर सन् १५२५ को केवल १२ हजारकी सेनाके साथ बाबरने सिन्धु नद नावोंसे पार किया। पंजाबमें पहुँचते ही उसे चारों ओरसे सहायताके सन्देश मिलने लगे। लाहौरके भूतपूर्व तुर्की शासकोंके वंशज उससे मिल गये। दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीके विरोधियोंका केन्द्र बाबरका शिविर हो गया। दिल्लीके बादशाह इब्राहीम लोदीके चाचाने स्वयं काबुल जाकर बाबरको सहायता देनेका वचन दिया। भारतीय जनता भी इब्राहीम लोदीके अत्याचारोंसे ऊब गयी थी। बाबरको विश्वास हो गया कि भारतमें उसका विरोध नगण्य होगा।

१३ मार्च सन् १५२६ को उसे समाचार मिला कि इब्राहीम लोदी बहुत बड़ी सेनाके साथ दिल्लीसे चल चुका है। दूसरी

अप्रैल सन् १५२६ को पानीपतके मैदानमें दोनों सेनाएँ मिलीं। बीस अप्रैलको द्वितीय पानीपतका अन्तिम युद्ध हुआ। इब्राहीम लोदी मारा गया। बाबरने हुमायूँको आगरा फतह करनेके लिए भेजा। दूसरे सेना नायकोंको दिल्लीके खजानेपर कब्जा करनेके लिए रवाना किया। कुछ दिनोंके पश्चात् वह स्वयं आगरा पहुँचा। उसे हिन्दुस्तानके साथ-ही-साथ कोहेनूर हीरा भी मिला।

बाबरके एकमात्र विरोधी राणा साँगा रह गये थे। उन्होंने देखा कि इब्राहीम लोदीके खातमेके साथ लोदी वंशका नाश तो हुआ लेकिन एक विदेशी आकर स्वयं राजा बन बैठा। भारतीयोंने समझा था कि महमूद गजनी तथा तैमूरलंगके समान बाबर भी लूट-पाट कर लौट जायगा। बात उलटी हुई। बाबर स्वयं दिल्लीके सिंहासनपर बैठ गया। शासन करने लगा। वह बिखरे राज्यको कुशल राजनीतिज्ञके समान संघटित करने लगा। पठानों और राजपूतोंकी कल्पनाको धक्का लगा। पठान पानीपतके युद्धमें परास्त हो चुके थे। वे बिखर गये थे। उन्हें संघटित करनेमें समय लगता। शेरशाह सूरीके लिए यह काम रह गया। राजपूत राणा साँगाके नेतृत्वमें थे। उनका संघटन था। उन्होंने भारतसे बाबरको निकालनेका उद्योग किया।

राणा साँगाका नाम संग्राम सिंह था। वे चित्तौड़के राजा थे। उन्होंने मालवा, गुजरात तथा दिल्लीके बादशाहतकको युद्धमें पराजित किया था। पठानोंने भी समझा था कि बाबर लूट-पाट कर चला जायगा। उसे जमता देखकर वे भी राणा साँगासे बाबरके विरुद्ध जा मिले।

भारतमें इतनी बड़ी सेना बहुत समयके पश्चात् एकत्र हुई थी। संघटन हुआ था कि विदेशियोंको निकाला जाय। हिन्दू-पठान सब मिले थे। फतहपुर सीकरीके समीप राणा साँगाने

अपनी सेनाका डेरा डाला। बाबरके सैनिकोंके छक्के छूट गये। बाबर भी इतनी तैयारी देखकर एक बार घबड़ा गया था। बाबरने खुदाकी प्रार्थना की। शराब पीना त्यागनेकी प्रतिज्ञा कर मदिरा-पात्र नष्ट किया। उसके सब सैनिकों तथा साथियोंने कुरान हाथमें लेकर शपथ खायी कि वे जिन्दे कभी रण छोड़कर नहीं भागेंगे। सन् १५२७ में खानवा में जो फतहपुर सीकरीसे १० मीलपर था, घोर युद्ध हुआ। बाबरके पास तोपें थीं। वह पाश्चात्य युद्ध-प्रणालीमें प्रवीण था। अनेक युद्धों तथा विपत्तियोंने उसे चतुर सेनानी बना दिया था। भारतीय पुरानी परम्पराके युद्धोंमें ही भूले थे। तोपोंकी मार तथा अश्वारोहियोंके आक्रमणके घेरेमें घिर गये। राणा साँगाकी पराजय हुई। भारतमें बाबरका सामना करनेवाला कोई नहीं रह गया था।

बाबर अफगानिस्तानकी तरफसे उदासीन नहीं था। वह अफगानोंकी शक्ति समझता था। स्वयं भारतको सुदृढ़ कर रहा था। दूसरे पुत्र कामरानको काबुलमें रहने दिया। कामरानके शासनमें कभी काबुलमें विद्रोह नहीं हुआ। पूर्ण शान्ति रही।

समरकन्दको बाबर भूल न सका था। उसने सन् १५२९ में हुमायूँ को बदखसान भेजा। उसे आदेश दिया कि समरकन्द लेनेका पूर्ण प्रयास करे। हुमायूँ ने प्रयास किया। असफल रहा। आगरा लौट आया। दिसम्बर सन् १५३० में मुगल साम्राज्यके जनकने अपनी लीला समाप्त की। अफगानिस्तान उसे प्रिय था। उसे वह अपनी अन्तिम अवस्थामें भी न भूला। कह गया—उसका शव काबुलमें ही चश्मेके किनारे गाड़ा जाय। अफगानिस्तानने उसे शरण दी थी। उसके साथ लड़कर भारतमें मुगल साम्राज्य स्थापित किया था। उसके इस अहसानको वह न भूला। अफगानोंके बीच ही अनन्तकालतक रहनेकी उसकी इच्छा थी। आज उनके बीच काबुलके बाबर बागमें वह अपने

एक पुत्रके साथ सो रहा है। शाहजहाँने प्रपितामहकी यादमें वहीं एक मसजिद बनवा दी है। पानीपतके इस विजेताकी कब्रके पास मुअज्जिन अजाँ देता है। बाबरकी याद हरी हो जाती है। बाबर सहिष्णु था। उसने धर्मके नामपर अत्याचार नहीं किया। अन्य मुसलिम आक्रामकोंके तुल्य मन्दिरोंको नष्ट नहीं किया। समस्त भारतवर्षका मुसलमान बनानेका स्वप्न नहीं देखा। उसकी वास्तविक कब्रपर न तो अरबीमें कुरानका आयतें लिखी हैं न पाक अल्लाह लिखा है। उसकी इसी धर्मनिरपेक्ष भावनाका अनुकरण हुमायूँ और अकबरने किया था। जहाँगीरके पश्चात् मुसलिम भावना पुनः प्रबल होने लगी। उसने औरंगजेबके कालमें अत्यन्त उग्र रूप धारण कर लिया। अपनी उग्रतामें वह मुगल साम्राज्यको ही समाप्त कर बैठी। बाबरने अपने घरसे उजड़कर सम्राट्का पद प्राप्त किया। औरंगजेबने अपने ही घरमें उसे दफना कर खुलदाबादमें खुद दफन हो गया।

हुमायूँका जीवन संघर्षमें ही बीता। शेरशाह सूरी तथा अन्य पठानोंके कारण उसे दिल्लीका सिंहासन छोड़ना पड़ा। शेरशाह उसे हराकर सन् १५४० में दिल्लीका बादशाह हुआ। हुमायूँको भारत छोड़ना पड़ा।

कामरान कन्धार तथा काबुलपर अधिकार कर स्वतन्त्र हो गया था। ईरानके बादशाहकी मददसे उसने काबुल तथा कन्धार फिर लिया। काबुल तथा अफगानिस्तानमें आते ही उसने हिन्दुस्तानपर आक्रमण किया। सन् १५५५ में वह सूरी वंशके अन्तिम बादशाहको पराजित कर दिल्लीके सिंहासनपर बैठा। सन् १५५६ में सीढ़ीसे गिरकर उसकी मृत्यु हो गयी।

अकबरने सन् १५५६ में मुगल साम्राज्य ठोस बनाया। अफगानिस्तान भारतका एक सूबा तथा सुरक्षा-चौकीके रूपमें भारतका अंग बन गया। दो सौ वर्षोंतक अफगानिस्तान भारतके

ही अन्तर्गत रहा। सन् १५५८ में ईरानने कन्धार ले लिया। लगभग सन् १५८४ में उजबेकने बदखसानपर आधिपत्य स्थापित किया। अकबरने खतरेका अनुभव किया। सन् १५८६ में राजा वीरबलके सेनापतित्वमें सेना अफगानिस्तानपर चढ़ाई करनेके लिए भेजी। राजा मानसिंह, राजा जयपालके पश्चात् दूसरे हिन्दू थे जिन्होंने अकबरकी तरफसे काबुलके राज्यपालकी हैसियतसे अफगानिस्तानपर शासन किया था। सन् १५९५ में उसने कन्धारपर आधिपत्य स्थापित कर लिया। सन् १६२२ में ईरानने पुनः कन्धारपर कब्जा कर लिया। इस समय अकबर मर चुका था। जहाँगीर बादशाह था। सन् १६०५ में शाह अब्बास ईरानने हेरातपर उजबेकको निकालकर अधिकार कर लिया। सन् १६२२ में जहाँगीरने कन्धार पुनः प्राप्त करनेका प्रयास किया। अपने पुत्र खुर्रमको कन्धार-प्राप्ति निमित्त भेजा। परन्तु कहा जाता है कि खुर्रम कन्धार नहीं गया और कन्धार ईरानियोंके हाथोंमें ही रहा। शाह अब्बासका देहान्त सन् १६२९ में हो गया। शाहजहाँने सन् १६३७ में कन्धारपर अभियान किया। सन् १६३९ में शाहजहाँने अपने पुत्र मुरादको बदखसानको पुनः प्राप्त करनेके लिए भेजा। मुरादने बदखसान, बलख तथा तरमेजपर अधिकार कर लिया। वे सन् १६४७ तक मुगलोंके अधिकारमें रहे। सन् १६६८ में भारतीय सम्राट् शाहजहाँकी सेना आमू उपत्यकासे हट गयी। मुगल काबुलको ही हाथोंमें रखकर सन्तुष्ट रहे। शाहजहाँके तीनों पुत्र—शुजा, मुराद तथा औरंगजेबने ही समय-समयपर कन्धार तथा काबुलकी लड़ाइयोंमें भाग लिया था।

मुगलोंकी सेना हटती देखकर ईरानके शाह अब्बास द्वितीयने समझा कि मुगल साम्राज्य कमजोर हो रहा है। उसने कन्धारपर सन् १६४९ में आक्रमण कर उसे ले लिया। गजनीके लिए खतरा

उत्पन्न हो गया। औरंगजेब भारतके ही संघर्षमें इतना उलझा था कि ईरानकी सेनाका सामना न कर सका। औरंगजेबका सबके प्रति अविश्वास था। धार्मिक असहिष्णुता उसे आन्तरिक तथा बाह्य, दोनों शक्तियाँ देनेमें असमर्थ रही। सन् १६५८ में अफगानिस्तानमें भारतके समान ही औरंगजेबके शासनके विरुद्ध विद्रोहाग्नि भड़क उठी।

सन् १६६६ में फारसके बादशाह अब्बास द्वितीयकी मृत्यु हो गयी। इसी समय कैदमें शाहजहाँकी भी मृत्यु हो गयी। औरंगजेब भयहीन हो गया। ईरानसे भारतपर आक्रमणका भय जाता रहा। खैबर दर्रेका समीपवर्ती अफगान कबीला मजबूत होने लगा। बगावत होने लगी। जोधपुरके राजा जसवन्त सिंहको विद्रोह शान्त करनेके लिए भेजा। सन् १६७५ में बगावत कुछ शान्त हुई। परन्तु सन् १७०७ में अन्तिम मुगल सम्राट् औरंगजेब चल बसा। भारतमें मराठे, राजपूत और सिख आदि साम्राज्यका धुरा उड़ानेके लिए कटिबद्ध थे। अफगानिस्तानकी सीमापर ईरान भी अफगान तथा भारत-विजयका स्वप्न देखने लगा।

घिलजाई जाति कन्धारके समीपवर्ती क्षेत्रोंमें आबाद थी। फारस तथा मुगल साम्राज्यकी दुर्बलताका लाभ उठाकर सत्रहवीं शताब्दीके अन्तमें शक्तिशाली होने लगी थी। सन् १७२१ में इस जातिके महमूदने देखा कि ईरानसे लोहा लिया जा सकता है। इस्फहानतक बढ़ गये। ईरानकी फौज गुलनाबादके समीप हार गयी। महमूदने इस्फहानपर घेरा डाल दिया। सात महीने संघर्षके पश्चात् इस्फहानने हथियार डाल दिया। सफवी वंशके स्थानपर घिलजाई वंशके हाथोंमें सल्तनतकी बागडोर आयी। सन् १६२५ में महमूदका खून हो गया। उसका भतीजा अशरफ बादशाह हुआ। उसने तेहरानपर आक्रमण कर ले लिया। अफगानकी सैनिक शक्ति शताब्दियोंके पश्चात् पुनः बढ़ने लगी। उनमें राष्ट्रीयता-

की भावना जाग्रत हुई। वे अपने देशमें स्वयं शासन तथा राज्य करनेका स्वप्न देखने लगे। तेहरानपर अधिकार करना सरल था। शासन करना सम्भव नहीं हो रहा था। घिलजाई सुन्नी थे। तेहरानके लोग शीया थे। फारसकी जनतासे सहायताकी कोई उम्माद अशरफको न थी। कन्धारमें महमूदका भाई हुसेन स्वयं सर्वेसर्वा बन बैठा था।

नादिरशाह

नादिरशाह खुरासानमें सन् १६८८ में पैदा हुआ था। उसका असली नाम नादिर कुली बेग था। अकसर कबीलेके किरिक्लू शाखाका था। सन् १७२६ में वह तहमस्पके साथ मिल गया। यहाँ उसने अपनी सैन्य-चातुरी दिखलायी। उसने ईरानमें पुनः सफवी वंशकी स्थापनाका विचार किया। सन् १७२९में अब्दाली हार गया। कितने ही सरदारोंको नादिरशाहकी सेनामें प्रवेश मिला। घिलजाईका अधिकार इस्फहानमें था नादिरने इस्फहानपर आक्रमण किया। घिलजाई हार गये। नादिरने तहमस्पको उसके पिताके सिंहासनपर बैठाया। सन् १७३२ में हेरातमें अब्दाली लोगोंने विद्रोह किया। नादिरने हेरातपर अधिकार कर लिया। सन् १७३६ में नादिर ईरानके बादशाह शाह अब्बास तृतीयको गद्दीसे हटाकर स्वयं बादशाह बन गया। मार्च सन् १७३८ तक कन्धार तथा बिलोचिस्तानके बहुत बड़े भागपर नादिरका आधिपत्य स्थापित हो गया। मुगलोंने अपने साम्राज्यकी सीमान्त चौकी काबुलको बनाया था। वह काबुल मुगलोंके हाथसे निकल गया। नादिरके लिए भारत जानेके लिए रास्ता साफ मिला।

मुगल राज्यपर आक्रमण करनेका नादिरशाहने एक बहाना निकाल लिया। घिलजाइयोंपर जब आक्रमण हुआ था उस समय घिलजाई शरणार्थी भारत आये थे। उन्हें दण्ड देना है। इस आड़में

वह भारतके मुगल राज्यपर चढ़ आया। मुगलोंका राज्य इस समय अत्यन्त निर्बल हो गया था। मुहम्मदशाह दिल्लीका बादशाह था। वह विलासी था। उसके योग्य मन्त्री निजामुल्मुल्कने सन् १७२४ में दिल्ली दरबार त्याग दिया। दक्षिणमें उसने हैदराबाद राज्यकी स्थापना की। हैदराबादके निजाम इसीके वंशज हैं। निजामुल्मुल्कके चले जानेके कारण शासन और शिथिल हो गया। उसे उड़ानेके लिए एक झंझावातमात्र ही पर्याप्त था। एक तूफानके साथ नादिरशाह आया।

नादिरशाह तुर्कोंपर आक्रमण करना चाहता था। सेना संघटित करनेके लिए उसे धनकी आवश्यकता थी। मुगलोंके धनकी बहुत ख्याति थी। सिकन्दर, महमूद, तैमूर, तथा चंगेजकी पंक्तिमें वह भी बैठना चाहता था। नादिरने कन्धारसे सन् १७३८के मई मासमें गजनीके लिए अभियान किया। भारतीय सीमा चश्म-ए-मुखसुर, आधुनिक सक्कर पार किया। गजनीने अवरोध नहीं किया। उसने आत्म-समर्पण कर दिया। काबुलके रईस बाहर निकल कर आये और उन्होंने उसके आगे हथियार जूनमें रख दिये। पासवाला हिसार जून मासमें उसके हाथमें आया। सितम्बरमें नादिरशाह जलालाबादकी ओर चला। गण्डमक, जलालाबाद, तथा खैबर होते उसने बिना किसी प्रतिरोधके पेशावरमें प्रवेश किया। सन् १७३९ में वह बिना किसी विरोधके करनालतक पहुँच गया। यहाँ दिल्लीके बादशाह मुहम्मदशाहकी ८० हजार सेना उसका सामना करनेके लिए आयी। एक दिनकी लड़ाईमें ही मुहम्मदशाहने नादिरशाहके सम्मुख सर झुका दिया। दोनों बादशाह दिल्लीकी ओर साथ-साथ चले।

दिल्लीमें दोनों बादशाह पहुँचे। पारसी सिपाहियों तथा दिल्लीके नागरिकोंसे अनाज खरीदनेके सम्बन्धमें कहा-सुनी हुई। किसीने उड़ा दिया कि नादिरशाह मर गया। दंगा शुरू हो गया।

वह दिल्लीके जामा मसजिदमें नंगी तलवार लेकर बैठ गया। दिल्लीका प्रसिद्ध हत्याकाण्ड नादिरशाहके आदेशसे आरम्भ हुआ। इसमें बीस हजार नागरिक बेगुनाह मारे गये। वह ९ घण्टेतक जामा मसजिदमें बैठा रहा। दिल्ली खूनसे डूब उठी। मुहम्मदशाह मसजिदमें पहुँचा। क्षमा माँगी। प्रार्थना की। अन्तमें कत्लेआम बन्द किया।

कन्धारसे निकले नादिरशाहको करीब दो साल हो रहे थे। मई मास आ गया था। यहाँकी गरमी वह बरदाश्त न कर सका। हिन्दुस्तानकी बादशाहत मुगलोंके पास रहने दी। मुगल बादशाहने स्वीकार कर लिया कि सिन्धु नदीके पश्चिम तटसे ईरानतकका भूखण्ड नादिरशाहका रहेगा। नादिरशाह भारतसे तख्तताऊस, कोहेनूर हीरा तथा ७० करोड़की धनराशि लेकर सन् १७४० में कन्धार पहुँचा। समरकन्द, बुखारा, तथा खीवातक उसका राज्य पहुँच गया। दाराके पश्चात् परशियन साम्राज्य नादिरशाहके समय सन् १७४१ ई० तक अपनी पूर्व सीमातक पहुँच गया था। उसने मेशदको अपनी राजधानी बनायी।

वृद्धावस्थामें नादिरशाहका दिमाग बिगड़ चला था। उसकी क्रूरता बढ़ गयी थी। फारसके लोग आकुल हो उठे। उसकी सेनामें बहुतसे अफगानी तथा विदेशी वैतनिक सैनिक थे। उनके भयसे क्रान्ति न हो सकी। कुर्द क्षेत्रमें एक विद्रोह दबानेके लिए वह खाबूशन अर्थात् कुचनमें डेरा डाले पड़ा था। मुहम्मद जमनशाह सरोजीका दूसरा लड़का था। तृतीय पानीपत युद्धका विजेता अहमदशाह अब्दाली नादिरशाहका अंगरक्षक था। नादिरशाहको अपने ईरानी सेनाके नायकोंपर अविश्वास हो गया था। उसने ईरानी सन्देहात्मक सेना अधिकारियोंको गिरफ्तार करनेके लिए अफगान सेनाको आदेश दिया। एक गुप्तचरने

रातोरात खबर ईरानी सेना-नायकोंको दी। उसी समय तीन ईरानी षड्यन्त्रकारी रातमें नादिरशाहके कैम्पमें घुसे। शाह सो रहा था। उन्हें देखकर चारपाईसे कूदा। सैनिक कैम्पमें गड़बड़ी हो गयी। अफगानी तथा ईरानी अंगरक्षकोंमें छिड़ गयी। नादिर-शाहको मृत जान अहमदशाह अब्दाली अपने साथियोंके साथ कन्धार चल दिया।

अब्दालीसे जहीरशाहतक

अफगानिस्तानमें राष्ट्रीयताकी भावना महमूद गजनवीके समयमें उठी थी। गजनवीके पश्चात् ही विदेशी आक्रमणोंसे देश जर्जर हो गया। तेरहवीं तथा चौदहवीं शताब्दीमें बलख, बामियान, हेरात, कपिसा तथा गजनी आदि नगर आक्रमणों द्वारा नष्ट कर दिये गये। पन्द्रहवीं शताब्दीमें हेरातकी कुछ उन्नति तैमूर वंशीय राजाओंके कारण हुई। बाबरके उदयसे अफगानिस्तान पुनः विदेशी प्रभावमें आ गया। अठारहवीं शताब्दीतक मुगलोंकी प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपसे अफगानिस्तानपर सत्ता बनी रही। गत अध्यायोंमें दिखाया जा चुका है कि दसवीं शताब्दीतक अफगानिस्तानपर हिन्दू सत्ताका प्रभाव था।

अफगानिस्तानको कभी एक इकाईमें स्वतन्त्र खड़े होनेका अवसर नहीं मिला। सर्वदा अनेक छोटे-छोटे राज्यों एवं कबीलों में बँटा रहा। इस्लामका प्रारम्भिक जोश खतम हो चुका था। आस-पासके सभी देश मुसलिम थे। एक धर्म होनेपर भी धर्म अपने हम-मजहबवालोंपर हमला करने अथवा लूटनेसे उन्हें बचा न सका।

नादिरशाहकी लाश उसके कैम्पमें पड़ी ही थी कि अहमदशाह अब्दाली या दुर्रानी अपने चार हजार अफगानी सैनिकोंके साथ कन्धार लौट आया।

अक्तूबर सन् १७४७में कबीलेवालोंका एक जिरगा (सभा)

कन्धारमें हुआ। जिरगेके सामने राजा चुननेका प्रश्न था। वाद-विवादमें कुछ निश्चय न हो सका। इसी समय सबर नामी एक दरवेश जिरगेमें आ गया। उसने अहमदशाह अब्दालीको चुनने-के लिए सुझाव दिया। लोगोंने दरवेशकी बात मान ली। उसने गेहूँकी बालियों सहित जुट्टेका मुकुट बनाया। अहमदशाहके सरपर उसीको ताजस्वरूप रखा। अफगान राष्ट्रका जन्म हुआ। आज भी अफगानी राष्ट्रीय झण्डेपर गेहूँकी बालोंका जुट्टा राष्ट्र-चिह्नस्वरूप बना है। तृतीय पानीपत युद्धका विजेता अहमदशाह अब्दाली अफगान राष्ट्रका राष्ट्रपिता हुआ। अफगानिस्तानमें अहमदशाह अब्दालीको लोग 'अहमद बाबा' कहते हैं। उसका नाम श्रद्धाके साथ बादशाहतके लिए नहीं बल्कि अफगान राष्ट्रके 'बाबा' पिताके रूपमें लिया जाता है। इस अवसरपर उसे 'दुर्रानी'की पदवी दी गयी। शब्दका अर्थ 'युगका मोती' होता है। वह अब्दाली वंशके सदोजाई शाखाका सरदार था। उसके वंशके लोग सदोजाई, अब्दाली तथा दुर्रानी तीनों नामोंसे पुकारे जाते हैं।

भारतमें मुगल साम्राज्य नाममात्रके लिए अठारहवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें रह गया था। मराठे शक्तिशाली हो गये थे। पंजाबमें सिखोंका उत्कर्ष हो रहा था। राजपूत भी प्रबल हो रहे थे। मुसलमानोंमें भावना उठने लगी कि भारतमें हिन्दू राज्य कायम हो रहा है। दिल्लीके बादशाहने जब देखा कि उसके सँभाले स्थिति नहीं सँभलती तो उसने पंजाबका सूबा अहमद-शाह अब्दालीको दे दिया। पंजाबमें सिखोंकी शक्ति बढ़ती देखकर दिल्लीके बादशाह तथा मुसलिम विचारधाराके लोग चिन्तित हो उठे थे। मुसलमानोंके हाथोंमें ही पंजाब रहे इसलिए पंजाब, विदेशी मुसलिम-शक्ति, अहमदशाहको सौंप दिया गया। मराठे, सिख तथा राजपूत सशंकित हो गये। मराठोंको यह बात बुरी लगी। उन्होंने समझ लिया कि पुराने इतिहासकी

पुनरावृत्ति होगी। अफगान फौज भारतीय मुसलिम राज्योंकी सहायतासे पुनः मुसलमानी सल्तनत भारतमें स्थापित करनेका प्रयास करेगी। मराठे राजनीति समझ गये। किसीको तैयारीका बिना मौका दिये मराठोंने पंजाबपर आक्रमण कर दिया। अटकपर भगवा झण्डा फहराने लगा। अहमदशाह अब्दाली चिढ़ गया। बिना प्रयास भारतका मिला भूखण्ड उसके हाथोंसे निकल गया।

मराठोंने अहमदशाह अब्दालीके पुत्र तैमूरशाहको सन् १७५२ में सिन्धु नदीके पश्चिमी तटतक खदेड़ दिया। अहमदशाह इस समय बलूचिस्तानमें एक विद्रोह दबानेमें व्यस्त था। भारतके पठान संघटित होने लगे। लगभग एक वर्ष पश्चात् उसने मराठोंपर आक्रमण किया। भारतीय पठानोंकी सेना अहमदशाह-से मिल गयी। वह लाहौरतक पहुँच गया। मल्हारराव होलकर पराजित हुआ। पेशवा समाचार सुनते ही सतर्क हो गया। उसने सदाशिव भाऊके नेतृत्वमें बहुत बड़ी सेना अहमदशाहका सामना करनेके लिए भेजी।

अहमदशाह अब्दालीके साथ अवधके नवाब तथा रुहेले भी मिल गये थे। भारतपर आक्रमण हो रहा था। दिल्लीके सुलतान तथा सभी मुसलिम रियासतें, नवाब और राजे निष्क्रियसे बैठे रहे। उनमें जो सक्रिय थे उन्होंने खुलकर या भीतर-ही-भीतर अब्दालीकी सहायता की। पानीपतके मैदानमें विदेशी अहमदशाह अब्दालीको अथवा विदेशी सेनाको भारतसे निकाल देनेके स्तुत्य प्रयासमें एक भी मुसलिम राजाने मराठोंकी ओरसे भाग नहीं लिया था। तृतीय पानीपतका युद्ध मालूम होता था जैसे हिन्दू और मुसलमानोंके बीच भारतमें अपनी-अपनी शक्ति स्थापित करनेका विशाल प्रयास था।

मराठों और अब्दाली दोनोंकी सेनाएँ एक-एक लाखसे कम न रही होंगी। अब्दालीके साथ भारतके सभी मुसलमानोंकी

सहानुभूति थी। वे भारतमें पुनः समाप्तप्राय मुसलिम प्रभुत्वको स्थापित करना चाहते थे। अतएव उन्होंने विदेशी सेना तथा अब्दालीका साथ दिया।

जनवरी १४ सन् १७६१ में ही पानीपतके प्रसिद्ध ऐतिहासिक मैदानमें दोनोंकी सेनाएँ डटीं। मराठोंने गलती की। वे समस्त भारतको संघटित नहीं कर सके। उन्होंने यह युद्ध जैसे अपना समझ लिया था। उन्होंने अपनी पुरानी युद्धनीति त्याग दी। व्यूह बनाकर बैठ गये। मराठोंमें दो विचारधाराएँ थीं। एक कहता था कि छापा मारकर युद्ध किया जाय। मराठे उसमें निपुण थे। दूसरा मत व्यूह बनाकर लड़नेका पक्षपाती था। पारस्परिक फूट उन्हें संयत न रख सकी। मराठोंने पृथ्वीराज और इब्राहीम लोदीकी गलतियोंको दुहराया। राणा साँगाने भी इसी गलतीको दुहराया। वे बाबरसे हार गये। मराठे यदि अपनी परम्परागत शैलीसे युद्ध करते तो निश्चय उनकी जीत होती। परन्तु पारस्परिक वैमनस्य तथा अदूरदर्शिता उनके साथ हो गयी थी। अहमदशाह अब्दालीने दूसरी ओर मराठोंकी रण-शैलीका अनुकरण किया। मराठोंको तंग करने लगा। लगभग दो मासतक मराठे अपने स्थानसे हट न सके। रसद तथा सामान मिलनातक बन्द हो गया। मराठे घबड़ा गये। बैठे-बैठे थक गये। अहमदशाह यही चाहता था। मराठोंने आक्रमण कर दिया। सदाशिवराव तथा विश्वासराव दोनों ही रणभूमिमें वीरगतिको प्राप्त हुए। मल्हारराव होल्कर तथा महादाजी सिन्धिया, दोनों घायल हुए। मराठोंकी हार हुई। पानीपतके तीनों युद्धोंमें विदेशियोंके सम्मुख भारतीय सेनाको हार खानी पड़ी है। यह हमारे लिए लज्जाकी बात है। तीनों ही बार अफगान तथा भारतीय सेनाका सीधा मुकाबला था।

पेशवा एक बहुत बड़ी सेना लेकर पानीपतके लिए रवाना

हुआ। नर्मदाके तटपर पहुँच चुका था कि पानीपतका हाल सुना। उसे बड़ा धक्का लगा। इस धक्केको बर्दाश्त न कर सका। टूटे हृदयको मृत्युने अपनी गोदमें ले लिया।

पानीपतके युद्धने मराठोंकी कमर तोड़ दी। बढ़ता साम्राज्य रुक गया। बढ़ते जोशपर पानी पड़ गया हिन्दू पद पादशाहीकी आशा जाती रही।

अब्दाली भारतमें टिक न सका। मुगल साम्राज्य भारतसे समाप्त हो चुका था। उसे पुनर्जीवित करना सम्भव न था। अब्दाली पानीपत विजयके पश्चात् भी दिल्लीके तख्तपर नहीं बैठा। मुगलोंके हाथोंमें ही दिल्लीको छोड़ दिया। अफगानिस्तान लौट गया मुसलिम सेना जीतनेपर भी भारतकी नवीन उभड़ती शक्तियोंको काबूमें करनेमें असमर्थ थी। वास्तवमें पानीपतके युद्धमें हिन्दू और मुसलमान दोनों ही पराजित हुए। विजयी हुई एक तीसरी शक्ति अंग्रेज। पानीपतके युद्धने अंग्रेजोंको भारतमें साम्राज्य स्थापित करनेका मार्ग प्रशस्त कर दिया।

सन् १७६२ ई० में लाहौरके समीप सिख सेनाको भी अहमदशाहने पराजित किया। कश्मीर अपने राजमें मिला लिया। उसका साम्राज्य तिब्बतकी सीमासे अरब सागर तथा एतरक नदीसे दिल्लीतक फैल गया था। उसने अपनी राजधानी कन्धार रखी। सन् १७६७ ई०में उसने मध्य पंजाब सिखोंको दे दिया। अफगान राज्यके अन्तर्गत उत्तरी पंजाब तथा पेशावर रखा। उसके मुखपर कैन्सर हो गया था। उसने अपने सामने ही शासनसूत्र तैमूरशाहको दे दिया। स्वयं सुलेमान पर्वतके एक किलेमें जाकर वानप्रस्थ ले लिया। वहीं उसकी सन् १७७३ में मृत्यु हो गयी। कन्धारमें उसे मिट्टी दी गयी।

तैमूरशाह अहमदशाहका दूसरा पुत्र तथा उत्तराधिकारी था। उसका भाई सुलेमान मिरजा कन्धारमें विद्रोह कर स्वयं बादशाह

बन बैठा। तैमूरशाहने विद्रोह शान्त किया। सुलेमान मिरजा भारत भाग गया। कन्धारके लोगोंके व्यवहारसे तैमूर परेशान हो गया था। उसने अपनी राजधानी कन्धारसे उठाकर काबुलमें कायम की।

उसने १२ हजार किजिलबाश जातिके लोगोंकी अंगरक्षक सेना संघटित की। उसे अफगानी सैनिकोंसे वितृष्णा हो गयी थी। वे उस की बुरी घड़ीमें जैसे काम न आये थे। सन् १७७९ में सिन्ध-में विद्रोह हुआ। स्थितिका सामना करनेमें असमर्थ सिद्ध हुआ। दो ही तीन वर्षोंके अन्दर सिन्ध पूर्ण स्वतन्त्र हो गया। स्वतन्त्र राज्य बन गया। सन् १७९१ में उसकी हत्याका षड्यन्त्र पेशावरमें किया गया। षड्यन्त्रका पता लग गया। षड्यन्त्रकारी तथा उससे सम्बन्धित लोग मार डाले गये। षडयन्त्रकारियोंमें मोहमन्द कबीलेका सरदार भी था। कहा जाता है कि सन् १७९३ में उसकी हत्या विषके द्वारा की गयी।

अहमदशाह अब्दालीका राज्य तैमूरके समयतक कश्मीर, लाहौर, मुलतान, पेशावर, समस्त अफगानिस्तान, हेरात, बलख तथा खुल्मतक था। कलात, बिलोचिस्तान, तथा ईरानी खुरासानके लोग उसका आधिपत्य स्वीकार करते थे। तैमूरको ३६ सन्तानें थीं। उनमें २३ पुत्र थे। उसने किसीको अपना उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं किया था। तैमूरके लड़के काबुल पहुँचे। किसी एक-को राजा निर्वाचित करनेकी बात थी। किन्तु उन्होंने वहाँ अपनेको एक तरहसे हिरासतमें पाया। जमनशाहको बादशाह चुननेके लिए जैसे बाध्य हो गये।

तैमूरशाहके पश्चात् उसका पाँचवाँ पुत्र जमनशाह पयन्दा खाँकी सहायतासे तख्तपर बैठा। पयन्दा खाँ बरकजाई जातिका सरदार था। उसके पिताका नाम हाजी जमाल खाँ था। उसे २१ लड़के थे। जमनशाहके दो भाई थे। हुमायूँ कन्धारका तथा महमूद

हेरातका राज्यपाल था। दोनोंने अपने भाईके विरुद्ध हथियार उठाया जमनशाहने देशमें सुरक्षाकी व्यवस्था की। भारतमें आया। इस समय ईरानका बादशाह फतेह अली शाह कजर था। महमूदने भागकर ईरानमें शरण ली थी। बादशाहने उसे कन्धार-पर आक्रमण करनेके लिए उभारा।

जमनशाह भारतमें अफगानी राज्य पुनः स्थापित करना चाहता था। इसी इरादेसे वह भारत भी आया था। लाहौरको अपनी राजधानी बनाना चाहता था। यदि जमनशाह भारतमें अपनी राजधानी बनानेमें सफल होता तो सम्भव है कि आजका भारतीय इतिहास ही कुछ दूसरी दिशामें हो गया होता। अफगानी सरदार इसके लिए तैयार नहीं हुए। जिन सिख सरदारोंने विद्रोह नहीं किया था उन्हें अपनेमेंसे एक राजा चुननेके लिए उसने कहा। निश्चय यह हुआ था कि अफगान राज्यपालके स्थानपर सिख राज्यपाल पंजाबमें बनाया जाय। राजा रणजीत-सिंहको पंजाबका राज्यपाल नियुक्त किया। उस समय रणजीत सिंह युवक थे।

महमूदकी सहायता पयन्दा खाँके पुत्र फतेहने की। कन्धारका पतन ४२ दिनोंके घेरेके पश्चात हुआ। काबुलकी ओर सेना बढ़ी। जमनशाह भारतमें था। आक्रमणका हाल सुना। तुरन्त काबुल लौटा। काबुलमें रह न सका।

कुछ स्वाभिमानी तथा विश्वासपात्र साथियोंके साथ पेशावर-की ओर चल दिया। मार्गमें वह एक साथी आशिक खाँके किलेमें ठहर गया। यह किला जिगदालिक स्थानके समीप था। आशिक खाँने महमूद तथा फतेह ख के पास काबुलमें सन्देश भेजा। शाहको नजरबन्द रखा। जमनशाहने स्थिति गम्भीर देखकर जवाहरात तथा कोहेनूर हीरा किलेकी दीवारमें छिपा दिया। फतेह खाँका छोटा भाई असद खाँ सेनाके साथ रवाना

किया गया। जमनशाहकी दोनों आँखें निकाल ली गयीं। वह काबुल लाया गया। बालाहिसारके किलेमें बन्दी कर दिया गया।

शाह महमूद सन् १८०० में अफगानिस्तानकी गद्दीपर बैठा। वह अयोग्य शासक था। वजीरोंके हाथोंकी कठपुतली हो गया। फतेह खाँ तथा दूसरे एक वजीर अकरमी खाँ अलीजाईके बीच द्वेषाग्नि भड़क उठी। चारों ओरसे विद्रोहकी आवाज आने लगी। जनताने जमनशाहके भाई शाहशुजाको गद्दी प्राप्त करनेके लिए आमन्त्रित किया। शाहशुजाने विजयीतुल्य काबुलमें प्रवेश किया। महमूद लड़ न सका। आत्मसमर्पण कर दिया। उसकी आँख न छोड़ी गयी। बालाहिसारके किलेमें सन् १८०३ में बन्दी कर दिया गया।

शाहशुजाके समय सिख अफगानिस्तानकी सीमापर आक्रमण करने लगे थे। ईरानी भी पश्चिमसे भय उत्पन्न करने लगे। बरकजाई सरदार फतेह खाँसे अच्छा सम्बन्ध स्थापित करनेमें असफल रहा।

नैपोलियन सन् १८०७ में अत्यन्त शक्तिशाली हो गया था। उसने रूसके अलेक्जेण्डर प्रथमसे तिलसितमें सन्धि कर ली। दोनों ही शक्तियाँ भारतपर आक्रमण करनेकी योजना बनाने लगीं। अंग्रेज सतर्क थे। उन्होंने भारतीय सीमान्तके कर्वालेवालों-से अच्छा सम्बन्ध स्थापित कर लिया। एलफिंस्टनके नेतृत्वमें एक शिष्टमण्डल पेशावरमें शाहशुजासे मिला। ७ जून सन् १८०९ में मित्रताके सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर हुआ। भारत तथा अफगानिस्तान, दोनोंकी सुरक्षाकी व्यवस्था की गयी।

पेशावरसे शिष्टमण्डलके प्रस्थान करते ही समाचार मिला कि फतेह खाँ तथा महमूदकी सेनाने काबुल ले लिया। गन्दोयकके समीप शाहशुजा तथा महमूदकी सेनाओंमें संघर्ष हुआ। शाहशुजा परास्त हो गया। शाहशुजाने पुनः संघर्षका

प्रयास किया, परन्तु बन्दी हो गया। पेशावरमें रखा गया। कुछ दिन बाद कश्मीरमें बन्दी कर दिया गया। सन् ८१ में वह किसी प्रकार निकल भागा। पंजाबके राजा रणजीतसिंहसे सहायता माँगी। शाहशुजाने रणजीतसिंहको कोहेनूर हीरा दिया। वहाँसे कुछ निराश होनेपर लुधियानामें अंग्रेजोंके शरण गया।

बरकजाई लोग अफगानिस्तानमें अत्यन्त शक्तिशाली हो गये थे। जिसे राजमुकुट चढ़ाया उसे बोटी-बोटी काट डालनेकी आज्ञा दी। फतेह खाँकी एक-एक बोटी काटी गयी। उसकी जबानसे उफतक न निकला। उसने शाहमहमूदसे एक बार भी छोड़ देनेतकके लिए भी नहीं कहा।

फतेह खाँकी निर्दयतापूर्ण मृत्युने बरकजाई जातिका खून उबाल दिया। उसके भाई दोस्तमुहम्मदने पेशावर होते काबुल ले लिया। शाह अपने पुत्र कामरानके साथ हेरात भाग गया। वहाँ कुछ वर्षोंतक रहा। इस अराजकतासे लाभ उठाकर बुखारा-के खाँनने बलख ले लिया। सिन्धुकी घाटीपर सिखोंका झण्डा फहरा उठा। सिन्धु तथा बिलोचिस्तान आजाद हो गये। अफगानिस्तानका बँटवारा किया गया। सन् १८२६ में दोस्त मुहम्मदके हाथोंमें गजनी, काबुल तथा जलालाबाद पड़ा। उसके अन्य पाँचों भाइयोंके हाथोंमें कन्धारका इलाका आया।

सन् १८१८ तक रणजीतसिंह बहुत शक्तिशाली हो गये थे। समस्त उत्तरी पंजाब, सिन्ध तथा सतलजके मध्यका भूभाग अफगानोंसे ले लिया। पेशावर तथा कश्मीरपर उनकी आँखें लगी थीं। पेशावरमें सुलतान मुहम्मद तथा कश्मीरमें जब्बार खाँ राज्यपाल थे। सिन्धुके पश्चिमी तटपर अपना झण्डा गाड़नेके लिए सिख आगे बढ़े। अफगान सामना न कर सके। सिखोंकी बढ़ती शक्ति रोकनेकी सामर्थ्य इनमें न था। रणजीतसिंहने

कश्मीर, मुल्तान तथा डेराजात अफगानोंसे ले लिया। पेशावरकी घाटी तथा खैबर-दर्रेके पूर्वतक पहुँच गये। अफगानियोंके साथ एक प्रकारसे सन्धि हो गयी। पेशावरका राज्यपाल सुलतान महमूद कुछ 'कर' देनेपर मान लिया गया। खैबरके पूर्वके सब भूभागपर रणजीतसिंहका स्वामित्व स्थापित हो गया।

दोस्त मुहम्मदने सन् १८२६ से १८३९ तक राज्य किया। वह अफगानिस्तानमें बरकजाई अथवा मुहम्मदजाई राजवंशका जनक है। पेशावरपर सिखोंका झण्डा लहरा रहा था। रणजीतसिंहने स्वयं पेशावरमें प्रवेश कर उसे लिया था। दोस्तमुहम्मदने जेहादका नारा बुलन्द किया। अपनेको अमीरुलमोमनीन अर्थात् मुसलमानोंका नेता घोषित किया। विशाल अफगान सेना भारतपर हमला करने चली। सिख होशियार थे। मुसलमानोंके साथ रहते तथा उनसे लड़ते-लड़ते उनकी सब नीति उन्हें मालूम हो गयी थी। दोस्तमुहम्मदका लड़का मुहम्मद अकबर और रणजीतसिंहके सेनापति हरीसिंह नहरुआका जमरूदके करीब युद्ध हुआ। हरीसिंहको वीरगति प्राप्त हुई। अफगानोंका साहस पेशावरकी ओर बढ़नेका नहीं हुआ। पेशावर रणजीतसिंहके हाथोंमें रहा। जेहादका नारा बेकार साबित हुआ।

ईरानके मुहम्मदशाहने समयका लाभ उठाकर सन् १८३७ में हेरातपर घेरा डाल दिया। रूस ईरानकी मदद कर रहा था। भारतकी रक्षासे अंग्रेज चौकन्ने हो गये। उन्होंने काबुल, हेरात तथा कन्धारके शासकोंसे निकट सम्पर्क स्थापित कर सुरक्षाकी योजना बनानी चाही।

दोस्तमुहम्मद पेशावर न भूला था। केप्टन बर्न्सके नेतृत्वमें शिष्टमण्डल आया। उसने स्वागत किया। अंग्रेजोंकी सहायता तथा सहानुभूतिसे वह सिखोंसे पेशावर लेना चाहता था। अंग्रेजों-

का सम्बन्ध सिखोंसे अच्छा था। उन्होंने सहायताका वचन नहीं दिया। रूसका दूत विकोविच इसी समय काबुलमें आया। अंग्रेजी शिष्टमण्डल असफल भारत लौट गया।

लार्ड आकलैण्ड उस समय भारतके गवर्नर जनरल थे। उन्होंने अफगानिस्तानपर आक्रमणकी योजना बनायी। सिखोंका राज्य अफगानिस्तान तथा ब्रिटिश भारतके मध्य पड़ता था। सिखोंने अपने राज्यसे अंग्रेजी फौज ले जानेकी स्वीकृति नहीं दी।

महमूदका ज्येष्ठ पुत्र कामरान था। वह फतेहखाँसे जलता था। उसका तथा उसके भाइयोंके नाशका प्रयास करने लगा। सन् १८१६ में ईरानकी फौजने हेरातपर आक्रमण किया। वहाँके राज्यपाल हाजी फिरोजुद्दीनने अपने भाई काबुलके शाह महमूदसे सहायता माँगी। फतेहखाँने हेरातके लिए प्रस्थान किया। पहुँचते ही उसने हाजी फिरोजुद्दीनको कैद कर काबुल भेज दिया। फतेह खाँका छोटा भाई दोस्तमुहम्मद हेरातका कोष तथा धन लेनेके लिए तैनात किया गया। उसने कुछ कुमार तथा रानियोंके जेवर ले लिये। हाजी फिरोजुद्दीनके लड़के कासिमकी स्त्री और महमूदके पुत्र कामरानकी बहनने अपने भाईसे अपमानका बदला लेनेके लिए कहा। वह हेरातमें मदद पहुँचानेके बहाने आया। फतेह खाँको कैद कर लिया। उसकी आँखें फोड़ दी गयीं। दोस्तमुहम्मद निकल भागा।

फतेहखाँकी हालत सुनते ही उसके लगभग २० भाइयोंने पूरे अफगानिस्तानमें विद्रोह कर दिया। शाहमहमूदने फतेहखाँसे भाइयोंको विद्रोह बन्द करनेके लिए लिखनेके लिए कहा। फतेहखाँने कहा मैं अन्धा हूँ, उन्हें खत नहीं लिख सकता।

महमूद चिढ़ गया। इसी फतेहखाँके कारण उसके मस्तकपर दो बार अंग्रेज आक्रमण करनेको तुले थे। पेशावर, खैबर,

जलालाबाद, काबुलका सीधा, सरल मार्ग था। सिखोंके कारण उसके उपयोगसे वंचित थे। अंग्रेज सेना सतलजके किनारे-किनारे सिन्धु-सतलजके संगमतक आयी। वहाँसे बोलन-दर्रेमें प्रवेश किया। कन्धारपर सन् १८३८के अन्तमें आक्रमण किया। सर कीनके नेतृत्वमें अंग्रेजी सेना थी। वह फिरोजपुरमें एकत्र होकर चली थी।

शाहशुजा भारतमें था। उसे अंग्रेजोंने सहायता दी। उसे अफगानिस्तानका बादशाह बनानेका वचन दिया गया। अप्रैल १८३९ में कन्धारका पतन हुआ। अहमदशाह अब्दालीके मकबरे-के दक्षिण पार्श्ववाली मसजिदमें शाहशुजाको ताज पहनाकर बादशाह घोषित किया गया। इक्कीस जुलाई सन् १८३९ को गजनीपर अधिकार हुआ। अगस्तमें अंग्रेजोंने काबुल ले लिया। शाहशुजा बादशाह घोषित किया गया। ६ अगस्त सन् १८३९ में शाहशुजाने ३० वर्ष निर्वासित रहनेके पश्चात् काबुलमें पुनः प्रवेश किया। दोस्तमुहम्मद बलख भाग गया। बुखाराके नसोरुल्ला खाँने उसे शरण दी।

शाहशुजा अंग्रेजी संगीनोंके भरोसे टिक न सका। उसे सन् १८४० में पेन्शन देकर अंग्रेजोंने कलकत्ते भेज दिया। समयका लाभ उठाकर दोस्तमुहम्मदने अंग्रेजोंपर आक्रमण कर दिया। जनरल स्नेलके नेतृत्वमें अंग्रेजी सेना सिम्त-ए-शुमालीकी ओर चली। परवान दर्रा नबलमिराजके पास दोनों सेनाओंका २ नवम्बर १८४० को संघर्ष हुआ। दोस्तमुहम्मदने काबुलमें अंग्रेजोंके सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया। वह अपने कुटुम्बके साथ भारत निर्वासित कर दिया गया।

विद्रोहाग्नि भड़क उठी। जनरल स्नेल गन्दोमक तथा जनरल नाट कन्धारमें थे। स्नेल स्थिति गम्भीर देखकर जलालाबाद आ गया। नाट गजनीसे आगे नहीं बढ़ सका। परिस्थिति अत्यन्त

शोचनीय हो गयी थी। काबुल स्थित अंग्रेजी सेनाने दोस्त मुहम्मद खाँके पुत्र अकबर खाँसे ११ दिसम्बर सन् १८४१ को सन्धि कर ली। शर्तें ये थीं—'अंग्रेज तुरन्त अफगानिस्तान छोड़ दें। दोस्त मुहम्मद अफगानिस्तान पुनः भेज दिये जायँ।' अफगानोंको शक हो गया कि अंग्रेज सन्धि स्वीकार न करेंगे। इस समय मेकनाटन काबुलमें पोलिटिकल एजेण्ट था। शान्तिकी शर्तोंपर बातें करनेके लिए २३ दिसम्बरको उसे एक जिरगा (कबीलेवालोंकी सभा) में बुलाया गया। वहाँ दोस्तमुहम्मदके लड़के अकबर खाँने उसे अपने हाथों कत्ल कर दिया।

लगभग १६,५०० अंग्रेजी फौज ६ जनवरीको काबुल त्याग कर भारतकी ओर बढ़ी। अफगानोंने उन्हें खुर्द काबुल दर्रेसे जानेके लिए मजबूर किया। दर्रेमें पहुँचते ही ९ जनवरी १८४१ को चारों ओरसे आक्रमण किया गया। प्रत्येक व्यक्ति मार डाला गया। केवल डाक्टर ब्राइडन अकेला नृशंस हत्याकाण्डकी खबर पहुँचाने जलालाबाद पहुँचा। लार्ड आकलैण्डके स्थानपर लार्ड एलनबरा भारतके गवर्नर जनरल हुए। नीतिमें परिवर्तन हुआ। आदेश दिया गया कि जनरल स्नेल और पोलक पेशावर लौट आवें। जनरल नाट कन्धार त्याग दें। फिरोजपुरमें लार्ड आकलैण्डने स्वयं बड़े आदरके साथ अफगानिस्तानसे लौटी सेनाका अभिनन्दन किया।

दोस्तमुहम्मद मुक्त कर दिया गया। दोस्तमुहम्मद अफगानिस्तान लौट आया। वहाँ उसने आगामी २० वर्षों—सन् १८८३ तक राज्य किया। हेरात आक्रमणके समय बीमारीसे मृत्यु हो गयी। उसने अपने तृतीय पुत्र शेरअली खाँको अपना उत्तराधिकारी बनाया था। बड़े भाई मुहम्मद अफजल खाँने विरोध किया। कुछ दिनोंतक काबुलपर कब्जा कर बादशाह बन गया। शेरअली हेरातसे लगभग दो वर्षके पश्चात् लौटा। वहाँ उसने

शरण ली थी। सन् १८६८ तक वह अपने विरोधियोंको हराकर अफगानिस्तानका बादशाह बन गया।

अफजल खाँ तथा आजम खाँ शाह शेरअली खाँके बड़े भाई थे। उनके कारण उसे पाँच वर्षतक चैन न मिला। सन् १८६८ तक उसने पुनः अपनी स्थिति शक्तिशाली कर ली। सन् १८७८ में अंग्रेजोंसे पुनः संघर्ष आरम्भ हो गया। वह युद्ध लगभग तीन वर्षोंतक चलता रहा।

भारतसे अफगानिस्तान जानेवाले तीनों दर्रोंसे ब्रिटिश फौज-ने अभियान किया। सर सेमुएल ब्राउन खैबर, मेजर जनरल राबर्ट्स कुर्रमकी ओर चले। जनरल स्टीवर्ट्के नेतृत्वमें सेना क्वेटासे बोलन-पास होती चली। दिसम्बर १८७८ के अन्तमें जनरल ब्राउन जलालाबाद पहुँच गये। जनरल राबर्ट्स सुतुर गर्दन दर्रा लेता आगे बढ़ा। जनरल स्टीवर्टने जनवरीमें कन्धार ले लिया। शाह शेरअली खाँ मजार-शरीफ चले गये। वहीं २१ फरवरी सन् १८७९ को मृत्यु हो गयी। शेरअली खाँके समय डाक विभाग देशमें खोला गया। प्रथम परशियन अखबार शमशुल-निहारका प्रकाशन आरम्भ हुआ।

मई २६ सन् १८७९ को गन्दमककी सन्धि याकूब खाँसे हुई। काबुलमें ब्रिटिश राजदूतावास स्थापित करनेका निश्चय हुआ। विदेशी नीतिमें अंग्रेजी प्रभाव स्वीकार किया गया। भारतकी सीमा सिन्धु नदी न होकर अफगानिस्तानके तीनों दर्रे माने गये। वही दोनों देशोंका सीमान्त माना गया।

प्रथम ब्रिटिश दूतने २० जुलाई सन् १८७९ को काबुलमें प्रवेश किया। किन्तु तीसरी सितम्बरको दूत तथा उसके सभी साथी बाला-हिसारमें कत्ल कर दिये गये। १२ अक्तूबरको जनरल राबर्ट्सने काबुलमें पुनः अपनी विजयी सेनाके साथ प्रवेश किया। याकूब-खाँने गद्दी त्याग दी। भारत भेज दिये गये। भारतमें ही सन्

१९२३ में उनकी मृत्यु हुई।

लार्ड रावर्ट्सको अफगानियोंने आरामसे नहीं रहने दिया। १० से २४ दिसम्बर तक उन्हें काबुल तथा बालाहिसार त्याग देना पड़ा। वे शेरपुरमें आ गये। उन्हें लगभग एक लाख कबीलेवालोंने घेर लिया। दोनों ओरसे संघर्ष होता रहा। अंग्रेजोंने अफगानिस्तानको अनेक भागोंमें बाँट देनेकी योजना बनायी। वली शेरअली बरकजाई जातिको कन्धार देनेका वादा किया। काबुलको सीधे अंग्रेजी राजमें मिलाने या शासन करनेका निश्चय किया। हेरातमें यहूब खाँके भाईका शासन था।

दोस्तमुहम्मदका प्रपौत्र अब्दुर्रहमान तुर्किस्तानमें था। सन् १८६८ से ही वहाँ निवास करता था। अब्दुर्रहमान खाँको लार्ड रिपनने काबुलका शासक स्वीकार कर लिया।

हेरातके शासक अयूब खाँने जेहादका नारा बुलन्द किया। २७ जुलाई सन् १८८० को उसने मैवन्दमें जनरल बरोजको पराजित किया। अयूब खाँ कन्धारकी ओर बढ़ा। समाचार पाते ही अंग्रेजोंने काबुल छोड़ दिया। एक लाखकी सेनाके साथ जनरल रावर्ट्स कन्धारके लिए रवाना हुआ। बाबावली स्थानपर ३१ अगस्तको अयूब खाँ पराजित हुआ। अब्दुर्रहमानको ही कन्धार-का भी शासक मान लिया गया। अप्रैल सन् १८८१ में कन्धार अब्दुर्रहमानके नियुक्त राज्यपालके हाथों सौंप दिया गया।

अयूब खाँने पुनः हेरातसे कन्धारपर आक्रमण कर उसे ले लिया। कुछ महीनोंतक कन्धार अयूब खाँके हाथोंमें रहा। अमीर अब्दुर्रहमान खाँने अपनी सेनाके साथ काबुलसे कूच किया। अयूब खाँ हार गया। ईरान भागा। हेरात भी अमीरके आधिपत्यमें आ गया। अफगानिस्तानका एक ही राजमुकुटमें एकीकरण हुआ। १३ नवम्बर सन् १८९३ में भारत तथा अफगानिस्तानका सीमान्त झगड़ेका अन्तिम निपटारा हुआ और

'डुराण्ड-लाइन' सीमा मानी गयी। सर मोर्टियर तथा अमीर अब्दुर्रहमान खाँके बीच सीमान्तकी सन्धि हुई। अमीरकी मृत्यु अक्तूबर सन् १९०१ में हो गयी। उनका पुत्र अमीर हबीबुल्ला अफगानिस्तानकी गद्दी पर बैठा।

अमीर हबीबुल्ला खाँने बड़े शान्तिपूर्वक सन् १९०१ से १९१९ तक राज्य किया। उनके समयमें साप्ताहिक समाचारपत्र 'शिराजुल अकबर' प्रकाशित हुआ। हबीबिया कालेजकी स्थापना हुई। सन् १९०७ में ब्रिटिश सरकारके अतिथि-स्वरूप भारत-यात्रा की। प्रथम विश्वयुद्धमें उन्होंने पूर्ण तटस्थताकी नीति अख्तियार की। २० फरवरी सन् १९१९ में लाघमन घाटीके कला-ए-गुश, जो जलालाबादसे बहुत दूर नहीं है, शिकारी कैम्पमें उनकी हत्या कर दी गयी। उनका छोटा भाई नसरुल्ला खाँ उनके साथ जलालाबादमें था। जलालाबादमें बादशाह बन बैठा। हबीबुल्लाके दोनों पुत्रोंने उसका समर्थन किया। किन्तु अमीर हबीबुल्ला खाँके तृतीय पुत्र अमानुल्ला खाँने २८ फरवरी सन् १९१९ को स्वयं अपनेको काबुलमें बादशाह घोषित किया। अपने चचा नसीरुल्लाको कैद कर लिया।

अमीर अमानुल्लाने ३ मार्च सन् १९१९ को अफगानिस्तानकी स्वतन्त्रताकी घोषणा की। भारतीय वाइसरायको अपने सिंहासनारोहणकी सूचना देते हुए पुरानी सन्धियोंको फिरसे देखनेकी बात उठायी। तत्कालीन भारत सरकारने सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया।

हिन्दुस्तानमें अंग्रेजोंके विरुद्ध भावना थी। खिलाफत तथा कांग्रेसका आन्दोलन जोर पकड़ रहा था। ८ मई सन् १९१९ को पेशावरमें सशस्त्र विद्रोह करनेकी तैयारी थी। बहुत बड़ी सभाएँ पेशावरमें होने लगीं। ७ मईको अंग्रेजी सरकारको खबर लग गयी। पेशावरका फाटक बन्द कर दिया गया। पानी रोक

दिया गया। मई मासमें बिना पानी शहर नहीं रह सकता था। क्रान्तिकी योजना असफल हो गयी।

अमानुल्लाने भारतकी सीमापर अफगान फौज भेज दी। आक्रमण पूरे जोश-खरोशके साथ किया गया। अहमदशाह अब्दालीके पश्चात् अर्थात् लगभग दो सौ वर्षोंके पश्चात् पुनः भारतीय सीमान्तपर अफगानी फौज खड़ी दिखाई दी। ३ मई सन् १९१९ को दोनों ओरकी फौजोंमें संघर्ष आरम्भ हुआ। लगभग एक मासतक संघर्ष चला। काबुलपर हवाई जहाजसे बम पड़ा। ३१ मईको विराम-सन्धि हुई। आठ अगस्त १९१९ को रावलपिण्डीकी सन्धिपर हस्ताक्षर हुए। अफगानिस्तानकी पूर्ण स्वतन्त्रता अंग्रेजोंने स्वीकार की। यह सन्धि काबुलमें सन् १९२२ की मैत्री-सन्धिमें पुनः स्वीकार की गयी। सन् १९२४ में खोस्त क्षेत्रमें कबीलेका विद्रोह हुआ। अमानुल्ला उसे दबानेमें समर्थ हुए। दिसम्बर सन् १९२७ को अमानुल्ला विश्व-पर्यटनके लिए निकले। जुलाई सन् १९२८ में यात्रासे लौटे। अगस्त २८ सन् १९२८ को लोई जिरगा (विशाल कबाइली सभा) किया। उन्होंने अफगानिस्तानको आधुनिक बनानेकी रूपरेखा खींची। निर्वाचित असेम्बली १५० व्यक्तियोंके संघटनकी घोषणा की। अंग्रेज अमानुल्लासे नाराज थे। अमानुल्लाकी सहानुभूति भारतीय स्वतन्त्रता संग्रामसे थी। बम्बईके सार्वजनिक स्वागतमें स्वर्गीय कस्तूरबा पहुँची तो स्वयं कुरसीसे खड़े होकर उन्हें आदर-पूर्वक स्थान देकर सत्कार किया। उनके प्रवाससे अंग्रेजोंने लाभ उठाया। उनके प्रति पहली विद्रोहाग्नि अंग्रेजों द्वारा प्रभावित खैबरपासके समीपवर्ती कबीलोंने शिनवरमें भड़कायी। दूसरा विद्रोही झण्डा कोट दामनमें बचासक्काने काबुलके समीप खड़ा किया। अमानुल्लाने अपने बड़े भाई इनायतुल्लाके हकमें राज्य त्याग दिया। कन्धारके लिए मोटरकारसे रवाना हो गये। इनायतुल्ला

भी तीन दिन पश्चात् राजत्याग कर भारत होते अपने भाईसे कन्धारमें मिल गये ।

बच्चासक्काका नाम हबीबुल्ला खाँ था। गाँव काला खाँनका एक ताजिक था। गांव काबुलसे २० मील उत्तर है। अफगान फौजमें सिपाही था। लगभग १८ मासके पश्चात् फौज छोड़कर भागा। पेशावरमें चायकी दूकान खोल ली। कुर्रमघाटीके परचिनारमें सेंध लगानेके जुर्ममें १८ मासकी सजा हुई। सन् १९२४ के खोश्त विद्रोहमें भाग लिया। लुटेरा हो गया। कोह-ए-दामन घाटीमें एक संघटन बना लिया। लूट-पाट करता था। अफगान सरकारके अधिकारी उससे परेशान थे।

१० दिसम्बरको उसने जबल-उ-सिराजका किला ले लिया। किलेके ९०० सैनिकोंने आत्म-समर्पण कर दिया। बच्चासक्का-की यही प्रथम विजय थी। १४ दिसम्बरको काबुलमें प्रवेश किया। काबुलका कोहेलूला किला ले लिया। आशामाईकी पहाड़ी-पर उसने अपना डेरा जमाया। २४ दिसम्बरको यूरोपियन नागरिक हवाई जहाजसे पेशावर आ गये।

अमानुल्लाकी फौजने बच्चासक्काका सामना किया। वह जबल-उ-सिराज चला गया। वहाँसे काबुलको जलविद्युत् आती थी। उसे काट दिया। काबुलमें अन्धेरा हो गया। ५ जनवरीको अमानुल्लाने विवादास्पद सभी सुधारोंको वापस लेनेकी घोषणा की। किन्तु १४ जनवरीतक बच्चासक्का पुनः शक्तिशाली हो गया। हवाई अड्डेपर अधिकार जमा लिया। काबुलके सभी मार्गोंपर उसका कब्जा हो गया। उसी दिन अमानुल्लाने अपने बड़े भाई इनायतुल्लाको बादशाह बनाया। जनवरीतक विद्रोहियोंकी सेना काबुलमें आ गयी। इनायतुल्लाने भी राज त्याग दिया।

बच्चासक्का हबीबुल्ला गाजीके नामसे गद्दीपर बैठा। वह पठान नहीं था। ईरानी जातिका था। उसकी जातिने २२ सौ वर्ष

पूर्व कुछ कालतक शासन किया था। घिलजाई कबीलेने उसका समर्थन अमानुल्लाको हटानेके लिए किया था।

कन्धारमें पहुँचकर अमानुल्लाने सेना एकत्र की। सन् १९२९ के अप्रैलमें वे गजनीतक आये। वहाँ सुलेमान खेल घिलजाईने उनपर आक्रमण किया। अमानुल्ला हताश होकर कलात घिलजाई लौट आये। मईमें बच्चासक्काकी फौजने कन्धारपर आक्रमण करना आरम्भ किया। २३ मई सन् १९२९ को अमानुल्लाने अपनी रानीके साथ चमनपर अफगान सीमा सर्वदाके लिए पार की।

अमानुल्लाका राजदूत मास्कोमें गुलाब नबी चरखी वंशका था। वह कुछ सेना एकत्र कर मजार-शरीफतक आया। बच्चासक्काके ताजिक साथी अब्दुर्रहमानने हेरातपर आक्रमण कर ले लिया। वहाँ उसने एक प्रकारका लोकतन्त्र स्थापित किया। अमानुल्लाके देशत्यागका समाचार सुनकर गुलाम नबी भी मजार-शरीफ छोड़कर आमू दरया पार कर रूस चला गया।

अमानुल्लाके जाते ही दूसरा प्रश्न उठ खड़ा हुआ। दक्षिण और पूर्वके पठान ताजिक वंशका राज पसन्द नहीं करते थे। अंग्रेजोंने अमानुल्लाकी मदद करनेसे इनकार कर दिया था। बच्चासक्काकी सरकारको भी स्वीकार नहीं किया।

८ मार्च १९२९ को नादिरशाह तथा उसके भाईने भारतसे अफगानिस्तानकी सीमामें प्रवेश किया। नादिरशाहको भी अँग्रेजोंसे कोई मदद नहीं मिली।

अंग्रेज हिचक रहे थे। यदि वे नादिरशाहकी मदद करते तो सम्भावना थी कि सोवियत रूस भी राजनीतिक क्षेत्रमें उतर आता। इसी नीतिसे अंग्रेज और सोवियत, दोनोंने ही अफगानियोंको अपना मामला खुद निबटा लेनेका मौका दिया।

अक्तूबर १९२९ में नादिरशाहने काबुलमें प्रवेश किया।

बच्चासक्काने मुक्तहस्त हो काबुलके खजानेका प्रयोग सेना संघटित करनेमें किया था। नादिरशाहके कुछ मित्रोंने पेशावर आदि स्थानोंसे रुपया दिया। वजीर तथा महसूदने कबीलेवालोंको अपनी सेनामें भरती करना आरम्भ किया। नादिरशाहकी सेना सितम्बरके मध्यमें लोगर घाटीमें पहुँची। १० अक्तूबर-को उसके भाई शाह वली खाँने चरशियाहके समीप बच्चासक्काकी फौजको पराजित किया। बच्चासक्का काबुल छोड़कर भाग गया। १२ अक्तूबरको नादिरशाहने काबुलमें प्रवेश किया। १६ अक्तूबरको नादिर खाँने बादशाह नादिरशाहके नामसे अफगानका राजमुकुट धारण किया।

अफगानिस्तानमें हमने लोगोंसे बात की। राजतन्त्रीय शासन-प्रणालीमें राजा तथा उसके वंशवालोंके विषयमें किसी प्रकारकी राय प्रकट करना खतरेसे खाली नहीं समझा जाता। सुलझे दिमागके लोग अमानुल्लाकी शिकायत नहीं करते। वे उसे एक उदार, आधुनिक विचारोंका बादशाह मानते हैं। उन्होंने अफगानिस्तानको आधुनिक बनानेका प्रयास किया था। अमानुल्लाने अफगानिस्तानको अंग्रेजी प्रभावसे मुक्त किया। एक स्वतन्त्र राजाकी तरह कार्य करनेका प्रयास किया। अंग्रेजी राज-नीतिके पुछल्ले बने रहनेमें उसने देशका कल्याण नहीं समझा। टर्की, मिस्र आदि सभी इस्लामी मुल्कोंमें, यहाँतककी इस्लामके सबसे बड़ा हामी पाकिस्तानमें भी परदा प्रथा उठ रही है। अमानुल्लाने यही करनेका प्रयास अपने देशमें किया। जनताने समझा नहीं। उसकी ओरसे जनताको कोई समझानेवाला भी नहीं था। पुरानी परम्परा एवं रूढ़िमें फँसे लोगोंको यह धर्म-विरुद्ध मालूम हुआ। यहाँ इसी प्रकार धर्म-विरुद्ध मालूम हुआ जैसे काशीमें हरिजनोंका मन्दिरमें प्रवेश लोगोंको आज भी धर्म-विरुद्ध लगता है। कबीले तथा अनेक छोटी-छोटी जातियाँ तथा

सामाजिक विभिन्नताओंमें बँधे लोग आनेवाले जमाने और दुनियाके बदलते रंगको न समझ सके। उन्होंने धर्मके लिए खतरा समझा। अंग्रेजी एजेण्ट पहलेसे ही सक्रिय थे। उन्होंने इन्धनमें घीका काम किया। रुपये तथा हथियारोंसे कबीलेवालों तथा विद्रोहियोंकी गुप्त रूपसे सहायता करनेका आक्षेप अंग्रेजोंपर लगाया जाता है।

नादिर खाँका जन्म देहरादून, उत्तर प्रदेशमें हुआ था। वे अपने पिताके द्वितीय पुत्र थे। वहीं वे बढ़े तथा शिक्षित हुए थे। उनका जन्म ९ अप्रैल १८८३ को हुआ था। उनके पिता मुहम्मद युसुफ खाँको अमीर अब्दुर्रहमानने अफगानिस्तानसे निर्वासित कर दिया था। वे भारतमें आये। देहरादूनमें रहने लगे। वहीं उनकी सब सन्तानें हुईं। उनके वंशका नाम मुशाहिबान था। पितृपक्षमें वे सुलतान मुहम्मद खाँके प्रपौत्र थे। सुलतान मुहम्मद खाँ दोस्त मुहम्मदके भाई थे। मातृपक्ष अहमदशाह अब्दाली वंशका था। इस प्रकार मुहम्मदजाई तथा सदोजाई दोनों वंशोंके रक्तका उनमें संगम हुआ था।

अमीर अब्दुर्रहमानके मृत्युके पश्चात् उनका कुटुम्ब अफगानिस्तान लौट गया। वे पुनः राजकी सेवा करने लगे। सन् १९१९ में कुटुम्ब हबीबुल्लाकी हत्याके सन्देहमें पकड़ा गया। परन्तु अमीर अमानुल्लाने उन्हें छोड़ दिया। नादिर खाँ अफगानिस्तान सेनाके प्रधान सेनापति हुए। तृतीय अफगान युद्धमें भाग लिया। अंग्रेजोंके सीमान्त नीतिके विरोधी थे। सन् १९२४ में नादिरशाह सेवासे मुक्त कर दिये गये। पेरिसके अफगान राजदूत बनाकर भेज दिये गये। पेरिसमें उन्होंने अपने पदसे इस्तीफा दे दिया। दक्षिणी फ्रान्स चले गये। वहाँ उनके अन्य दो भाई सरदार हाशिम खाँ तथा शाहवली खाँ भी आकर मिल गये। केवल सरदार शाह महमूद अफगानिस्तानमें रह गये। इन्हीं चारों भाइयोंने

मिलकर अफगानिस्तानकी स्थितिको सम्हाला। काबुल प्रवेशके समय उनके पास बहुतही सामान्य वस्त्र थे। कुछ भारतीय मित्रों-द्वारा दिया गया रुपया था।

शासनसूत्र पाते ही नादिरशाहने बच्चासक्काके नाम मौतका परवाना जारी किया। बच्चासक्काने बिना शर्त हथियार रख दिया। कबीलेवालोंने उसके कत्लकी माँग की। नवम्बरतक नादिरशाहका पूरा अधिकार स्थापित हो गया। दस मन्त्रियोंका मन्त्रिमण्डल स्थापित किया। प्रत्येक कबीलेसे एक प्रतिनिधि बुलाकर २८६ व्यक्तियोंकी एक सभा की। यह सभा सितम्बर १९३० में सालमखानामें मिली। उसने अमीर अमानुल्लाके राज्य-त्यागकी स्वीकृति दी। नादिरशाहको बादशाह माना। उनमेंसे १५० प्रतिनिधि नेशनल असेम्बलीके लिए चुने गये। यही सभा अफगानिस्तानकी लोकसभा है। लगभग एक वर्षके पश्चात् २७ प्रतिनिधियोंकी एक सिनेट कायम की गयी। अमानुल्ला द्वारा आरम्भ किया गया स्वतन्त्रता-दिवस पुनः मनाया जाने लगा।

नादिरशाहका राज्यकाल केवल ४ वर्षोंका था। उन्होंने अफगानिस्तानको एक सूत्रमें बाँधा। शासन-व्यवस्था कायम की। गठित ४० हजार सैनिकोंकी सेना संघटित की। दो विद्रोहोंको दबाया। जुलाई १९३२ में गुलाम नबी रूससे अफगानिस्तान लौट आये। वे अमानुल्लाके समय मास्कोमें राज-दूत थे तथा बच्चासक्काके समय मजार-शरीफपर उन्होंने अधिकार कर लिया था। दिलखुश महलमें शाह नादिरशाहसे मिले। बादशाहको उनपर शक हो गया। बादशाहने पेन्शन लेकर अफगानिस्तान छोड़ देनेके लिए कहा। गुलाम नबी बहाना करने लगे। दक्षिणी अफगानिस्तानमें विद्रोहकी कल्पना करने लगे। काबुलमें भी मुक्तहस्त हो रुपया बाटा। नवम्बरमें षड्यन्त्रका पता लग गया। ८ नवम्बरको बादशाहने उन्हें बुलाया। कागजी

सबूत उनके सामने रखा। गुलाम नबीने अनुचित शब्दोंका प्रयोग किया। उन्हें कत्ल करनेकी आज्ञा दी गयी।

दिलखुशा बागमें ८ नवम्बरको लड़कोंका पारितोषिक-वितरण उत्सव था। लोगोंने नादिरशाहको भाग लेनेसे मनाकिया। परन्तु बादशाहने नहीं माना। गुलाम नबीका एक दत्तक पुत्र वहाँ मौजूद था। वह हालमें ही हिरासतसे छूटा था। बादशाह बालकोंकी पंक्तिसे गुजर रहे थे। उसने बादशाहपर गोली छोड़ी। स्वयं आत्महत्या कर ली। गुलाम नबीके कत्लके ठीक एक वर्ष बाद शाह नादिरशाह शहीद हुए।

पिताकी मृत्युकी समय जहीरशाहकी उम्र केवल १९ वर्ष थी। वे अक्तूबर १५, सन् १९१४ में काबुलमें पैदा हुए थे। अपने पिताके साथ फ्रांस चले गये। वहीं ६ वर्षतक शिक्षा पायी। पिताकी हत्याके समय काबुलमें केवल उनके चाचा सरदार शाह महमूद ही उपस्थित थे। दूसरे भाई सरदार हाशिम उत्तरी अफगानिस्तानमें दौरा कर रहे थे। यदि दूसरा समय होता तो उत्तराधिकारके प्रश्नको लेकर खूँरेजी होती। परन्तु नादिरशाहके भाइयोंमें प्रगाढ़ प्रेम था। सरदार शाह महमूदने अपने भतीजे जहीरशाहको उसी दिन गद्दीपर बैठाया और शामको ६ बजे राजकीय सलामीमें तोपें गड़गड़ा उठीं।

काबुल-गजनी-कन्धार-हेरात

काबुलसे एक सड़क गजनी, कन्धार होती हेराततक जाती है। हवाई जहाजसे केवल कन्धार तथा हेरात जाया जा सकता है। सड़कपर पड़नेवाले अन्य स्थानोंपर मोटर, बस, ऊँट या घोड़े-से पहुँचना सम्भव है। बस चलती है। भारतसे यूरोप भूमार्गसे जानेवाले यही मार्ग पकड़ते हैं। मार्गमें अनेक ऐतिहासिक स्थान भी पर्यटकोंको दर्शनार्थ मिल जाते हैं।

काबुलसे अरघण्डी १४ मील है। सड़क अफगानिस्तानकी

सबसे उत्तम उपत्यका चहारदेहमें प्रवेश करती है। अत्यन्त उपजाऊ स्थान है। लगभग ७ मील उपत्यकाका मार्ग है। किला-ए-काजीके पश्चात् वलुए पहाड़की चढ़ाई मिलती है। अरघण्डीसे तीन मीलपर पुनः उतराई आरम्भ हो जाती है। अरघण्डी ३६२८ फुट समुद्रकी सतहसे ऊँची है। अरघण्डीके बाद मैदान १२ मील पड़ता है। यह नीचा है। चारों ओर पहाड़ी है। अत्यन्त उपजाऊ स्थान है। बहुतसे चश्मे हैं। मैदानसे मैखाबाद १७ मील है। गजनी और काबुलके मध्यमें पड़ता है। ४ मीलपर काबुल नदी पार की जाती है। यहाँसे वरदक भूखण्ड आरम्भ होता है। इसमें भी सुन्दर उपत्यका है। मैखाबादसे तकिया १६ मील है। सड़कके चढ़ाव-उतार दोनों हैं। तकियासे शीवगाँव १६ मील है। ऊँचाई ८,५०० फुट होगी। समीपवर्ती भूप्रदेश उपजाऊ है। सड़क कुछ नालोंको पारकर चढ़ाई चढ़ती है। शीवगाँवसे गजनी १७ मील है। सीधी चढ़ाई मिलती है। लगभग ९ हजार फुट ऊँचे दर्रेसे सड़क जाती है। शीतकालमें सड़क तुषारपातसे कुछ दिनोंके लिए रुक जाती है। काबुल और गजनीका सम्बन्ध छिन्न हो जाता है।

गजनीमें काबुलसे अधिक ठण्ढक पड़ती है। पर्यटकको गरम कपड़ा लेकर आना चाहिये। ऊँचाई ७,२८० फुट है। जनसंख्या २० से ३० हजारतक होगी। गजनी बहुत ही हरा-भरा स्थान है।

गजनीका ऐतिहासिक महत्त्व है। भारतका प्रत्येक बच्चा गजनी नामसे परिचित है। भारत अभीतक महमूद गजनी तथा उसके आक्रमणोंको नहीं भूला है। सोमनाथ मन्दिरके साथ महमूद गजनीका नाम इतना चिपटा है कि भूलना असम्भव है। शहरका सामरिक महत्त्व भी है। गोमल दर्रेका यह मार्ग है। काबुल-कन्धार-सड़कपर पड़ता है। तरनक उपत्यकाके ऊपर

नगर है। यहाँ पर्वतमालाएँ प्रायः समाप्त हो जाती हैं। वे पूर्व तथा पश्चिम दिशाओंमें फैली हैं। वे गजनीकी घाटीको काबुलकी घाटीसे अलग करती हैं।

गजनी एक अकेली पहाड़ीपर आबाद है। चित्तौड़की तरह पहाड़ी मैदानके बीचमें है। अन्य पहाड़ियाँ दूर हैं। किलेकी पहाड़ी प्राकृतिक है। मिट्टी कुछ पथरीली है। मैदानसे १५० फुट ऊँची है। नगरके बीचमें है। गजनीका दुर्ग अथवा कोट है। कोटसे गजनीका विहंगम दृश्य मिलता है।

नगरके चारों ओर ऊँची दीवार है। लगभग सवा मील होगी। शहर बिलकुल चौकोर नहीं है। दीवार कोटके घेरेके सुविधानुसार बनायी गयी है। दीवारकी नींव सड़कसे कुछ ऊँचाईपर है।

वर्तमान गजनीमें आकर्षक कुछ नहीं रह गया है। गलियाँ पतली हैं। मकान पुराने ढंगके हैं, मिट्टीके हैं। शहर गन्दा है। ऐतिहासिक महत्त्वके कारण ही लोग आते हैं। गजनीके बहुतसे बादशाहोंकी मजारें, जिनका सम्बन्ध भारतके भाग्यसे रहा है, कयामततकके लिए यहाँ पड़ी हैं। भारतपर आक्रमण करनेवाले सुबुक्तगीन (९७७–९९७) तथा महमूद गजनी (९९७–१०३०) की मजारें सुरक्षित हैं। इसके अतिरिक्त मसूद (१०३०–१०४०), बहरामशाह (१११७–११५३), सूफी हकीम सिनाई, अली लाला, बहलोल-ए-दाना तथा सय्यद हसनकी दर्शनीय मजारें हैं।

गजनीकी पोश्तीन मशहूर है। आसपासकी भूमि बहुत ऊपजाऊ है। अनेक बाग़, बगीचे तथा अंगूरोंके खेत है। हर प्रकारके फल तथा सब्जियाँ खूब पैदा होती हैं। काबुलमें गरमी कम पड़ती है। गजनीसे थोड़ा ही आगे बढ़नेपर रेगिस्तान आरम्भ हो जाता है। हवाई जहाजसे दृश्य बड़ा सुन्दर दिखाई देता है। मैदानमें मकान छोटे-छोटे किले जैसे पड़े दिखाई देते हैं। सड़क पतले सूत-सी प्रतीत होती है। सड़क अच्छी नहीं है।

रेगिस्तानमें यत्र-तत्र दूर-दूरपर कुछ मकानोंके समूह किलानुमा मिल जाते हैं। पहाड़ भी रेतीला, सूखा तथा पादप-दूर्वाहीन है। खजूर तथा ताड़ भी नहीं होते। गजनी उजड़ा नगर है। ऐतिहासिक जिज्ञासुओंके गवेषणा तथा पुरातत्त्व विभागोंके लिए महत्त्वपूर्ण स्थान अवश्य है।

गजनीसे कन्धार २२५ मील है। सड़क समथल है। उत्तर-पूर्वसे दक्षिण-पूर्व चलने लगती है। गजनीसे चलते ही तरनक घाटी बहुत ही संकुचित हो गयी है। कहीं-कहीं चौड़ाई केवल आधा मील है। कन्धारकी ओर सड़क ज्यों-ज्यों बढ़ती जाती है, घाटी चौड़ी होती जाती है। ३० मीलतक चौड़ी हो गयी है। गजनीसे मुकर ६८ मील है। दक्षिण सड़क मुड़ती है। मानी पड़ता है। मानीके पश्चात् सड़क चौड़े मैदानमें प्रवेश करती है। इसे दश्त-ए-शिलगर कहते हैं। भूखण्ड उजाड़ है। रेतीला है।

खेती करेज शैलीसे बने सोते द्वारा ही सम्भव है। करेज एक प्रकारका सोता होता है। जहाँ पानीकी सम्भावना होती है उसीके पास गोल गड्ढे दूर-दूरपर, जहाँ पानी ले जाना होगा, खोदते जायँगे। अन्तमें पानी निकल आता है। हवाई जहाजसे एक पंक्तिमें गोल-गोल गड्ढे भूखण्डपर छाले सदृश्य दिखाई देते हैं। मुकरमें खेती अच्छी हो जाती है। मुकरमें पेट्रोल पम्प है। सरकारी होटल है। समीपवर्ती प्रदेशमें बहुत से सोते मिलेंगे।

मुकरसे किलात-ए-गिलजाई ७३ मील है। यह ५५४० फुटकी ऊँचाईपर है। लगभग १४ मीलतक चरने लायक मैदान पड़ता है। भेड़ें खूब चरायी जाती हैं। चारों ओरका प्रदेश पठार है। छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। खेती अच्छी हो जाती है। अबोजनके पश्चात् सड़क पुनः घोर रेगिस्तानमें प्रवेश करती है। तरनक नदीके दाहिने तटपर एक मजबूत किला बना है। सरकारी होटल भी है।

किलात-ए-घिलजाईसे कन्धार ८४ मील है। ठीक पश्चिम पड़ता है। जदकस्थान किलात-ए-घिलजाईसे १४ मीलपर है। नदीके किनारेपर कहीं कुछ खेती हो जाती है। जदक रेतीली भूमिपर आबाद है। आगे बढ़नेपर नदीमें पानी पूर्णतया समाप्त हो जाता है। मार्गमें मोहमन्द पड़ता है। यहाँसे कन्धार केवल १० मील रह जाता है। सड़क नदीका किनारा छोड़कर मैदानमें चलती है। हमें गजनीके पश्चात् भूखण्ड देखकर निराशा हुई। कन्धारके समीप पहुँचनेपर भी हरी भूमि न मिलनेसे आश्चर्य हुआ। कन्धार शहरकी सीमापर पहुँचे तो कुछ हरियाली मिली। कन्धार क्वेटासे १२५ तथा पाकिस्तान रेलवे टरमिनस न्यू चमनसे ७२ मील है।

हवाई जहाज उतरते ही यहाँ दूत श्री अवतारकृष्ण बक्सी, इंजीनियर शाह तथा भारतीय व्यापारी मिले। काबुलमें हमें कटु अनुभव हुआ था। सुखद वातावरण मिला। मन प्रसन्न हो उठा। उदासीके पश्चात् मुस्कराहट प्रिय लगती है। सूखेके बाद हरियाली अच्छी लगती है। यही अवस्था हमारी थी। आज २४-८-५७ का दिन हमें बहुत ही शुभ तथा प्रिय लगा।

कन्धार ऐतिहासिक नगर है। बहुत उथल-पुथल देख चुका है। महाभारतमें गान्धार नाम आता है। वास्तु, स्थापत्य, मूर्ति आदि कलाशैलीको उसके नामसे सम्बन्धित किया गया है। कन्धार शब्द गान्धारका अपभ्रंश है। गाथा है कि धृतराष्ट्रकी धर्मपत्नी तथा दुर्योधनकी माँ गान्धारी गान्धार अर्थात् कन्धारकी थी। गान्धारकी होनेके कारण ही उसका नाम गान्धारी पड़ा था। कन्धारमें बहुत-सी स्मृतियाँ ताजी हो जाती हैं। महाभारत कालसे आजतक गान्धारने न जाने कितना परिवर्तन देखा है। उसकी उपत्यकामें न जाने कितने विजेता उसके उपवनोंकी शोभा,

मेवे तथा मीठे शीतल जलकी कहानी सुनकर आये थे। उसके लिए न जाने कितने विजेताओंने, कितने पराजितोंने, खून बहाया था। उसे रक्तार्घ्य देनेवाले चले गये। उसके लिए मरनेवाले चले गये। वह अभी भी रूपवती नारीतुल्य, सदा चिरयौवना उर्वशीतुल्य मुस्कराता खड़ा है।

हवाई अड्डा अन्तरराष्ट्रीय हवाई परिवहनका रूप लेता जा रहा है। हवाईअड्डेपर काम करनेवाले हिन्दुस्तानी मिले। कन्धारके हिन्दुस्तानी भाइयोंने बक्सीजीके आग्रहपर सवारीकी सुविधा कर दी थी। अफगान सरकारकी तरफसे भी सवारीका प्रबन्ध था। सभी स्थानोंपर समाचार पहुँच गया था। यहाँका प्रबन्ध इस यात्रामें सबसे अच्छा लगा। तनिक भी असुविधा न हुई। कन्धारमें टैक्सी नहीं मिलती। ताँगेसे सवारीका काम लिया जा सकता है। कुछ लोगोंके पास निजी कारें हैं। दूर जानेके लिए बस ही एकमात्र साधन है।

हवाई अड्डेसे चलते ही कन्धारकी सड़क मिली। इसीपर आगे चलकर भारतीय उपराजदूतका दूतावास है। सड़ककी बायीं ओर पुराना शहर है। दाहिनी ओर आधुनिक ढंगकी इमारतें बन रही हैं। महानुभावोंके बँगले, डाकघर, सरकारी इमारतें आदि हैं।

इतिहासमें कन्धारकी दीवारोंकी बातें बहुत पढ़ता रहा हूँ। नगरको लगभग ४० फुट ऊँची और २ गज चौड़ी दीवारों घेरे थी। दीवारें प्रायः टूट चुकी हैं। शहर खुलेमें बढ़ता जा रहा है। बहुतसे स्थानोंपर पुरानी दीवारें खड़ी हैं। उनपर बने तोपखानों और बुर्जियोंके निशान बचे हैं। दीवार बिलकुल मिट्टीकी बनी थी। मकान प्रायः मिट्टी अथवा कच्ची मिट्टीकी ईंटोंके हैं।

सड़कपर खूब धूल उड़ती है। मेरी जिज्ञासापर मेरे मित्र

शाहने कहा कि आधुनिक युगमें दीवार तथा दुर्ग किसी शहर अथवा मुल्ककी रक्षा नहीं कर सकते। दीवारकी कोई उपयोगिता नहीं रह गयी है। कुछ दीवारोंके अंश बचे हैं। उन्हें देखकर भय लगता है। अफगानिस्तानका इतिहास ही बड़ा उथल-पथलका रहा है। कबीलेवालोंका भय सर्वदा बना रहता था। उनसे रक्षा करनेका सुदृढ़ प्रबन्ध किया गया था, दीवारोंकी रचनासे स्पष्ट प्रतीत होता है।

कन्धार तीन ओर पहाड़ियोंसे घिरा है। पहाड़ियाँ मैदानसे सीधे ऊपर उठ जाती हैं। उनकी ऊँचाई एक हजार फुट होगी। समुद्रकी सतहसे ३,५०० फुट ऊँचा है। शहरकी जनसंख्या लगभग ६० से ८० हजार होगी। इन पहाड़ोंका नाम तीरकनी अर्थात् काला पत्थर है। कन्धारकी उपत्यका अत्यन्त हरी-भरी है। जलपूर्ण है। अनेक स्रोतस्वनियाँ हैं। मुख्य नदी अर्गन्धाब है।

अर्गन्धाब सुनते ही मुझे गन्धर्व नाम याद आ गया। शायद गान्धार गन्धर्वका अपभ्रंश हो। गन्धर्व जाति आबाद रही होगी। यदि गन्धर्व जाति अपनी सुन्दरता तथा गानके लिए भारतमें प्रसिद्ध थी तो कहना न होगा कि गान्धार अर्थात् कन्धारके लोग सुन्दरतामें किसी जातिसे पीछे नहीं हैं। उनके मुखपर श्री है। लावण्य है। वे एकदम श्वेत गोरे नहीं हैं। उनका रंग चूनेकी तरह श्वेत नहीं है। हाथी दाँतकी तरह उज्ज्वल है। हाथी दाँतकी सफेदीमें एक प्रकारकी चमक और सुन्दरता होती है। उसी प्रकारका रंग उनमें हमें मिला। मैं समझता हूँ कि गन्धर्वोंका देश यही था। मेरा मत गलत भी हो सकता है। विषय पुरातत्त्व-वेत्ताओंकी गवेषणाके लिए छोड़ देता हूँ।

हम लोग उप-राजदूतावासमें आये। बक्सीजीकी श्रीमती बहुत ही शिष्ट महिला हैं। उन्होंने अपना पूरा मकान ही जैसे

आतिथ्यके लिए खोल दिया था। शाह भी साथ थे। उन्होंने हम लोगोंके कलेवे (ब्रेकफास्ट) का प्रबन्ध मंजिल बागमें किया था।

उत्तरमें रूस अफगानी योजनामें सहायता कर रहा था। दक्षिणमें अमेरिकाका प्रभाव था। हेलमन्द तथा अर्गन्धाव नदी बाँधकर रेगिस्तानको आबाद करनेकी योजना है। मंजिल बागमें अमेरिकन लोगोंके रहनेके लिए स्थान बना है। उनका अपना सिनेमा हॉल है। अस्पताल है। भोजनालय है। सब कुछ अलग है। अमेरिकाके ही भोजनालयमें शाहने ब्रेकफास्टका प्रबन्ध किया था। एक व्यक्तिके कलेवेका पन्द्रह रुपया शायद लगा। अमेरिकाके विशेषज्ञ तथा कार्यकर्त्ता किस प्रकारका भोजन करते तथा कितने आरामसे यहाँ रहते हैं, देखकर चकित हो गया। टेबुलपर मक्खनसे लेकर पनीरतक अमेरिकन था। भारतके किसी भी बड़े अस्पतालसे यहाँका छोटा अस्पताल अच्छा था। उससे अफगानी जनताका कोई लाभ नहीं था। इस योजनामें जो लोग काम करते थे उन्हें कुछ औषधि दे दी जाती थी। अन्य लोगोंके लिए वर्जित इस दृष्टिसे था कि दवा कराना अथवा दिखाना अपना घर बेचनेके बराबर था।

अफगानिस्तानकी पंचवर्षीय योजनाका रूप देखने आये थे। सभी योजनाओंमें अमेरिकाका हाथ था। अमेरिकाके लोग अफगानियोंके लिए इतने मँहगे पड़ रहे थे कि हम लोग जिधर गये उसी तरफ लोगोंसे यही भाव टपका कि जितनी जल्दी इनसे पिण्ड छूटे, अच्छा है। जितनी आर्थिक सहायता देते थे उसकी अपेक्षा अनुपाततः अधिक अपने ही ऊपर खर्च कर जाते थे।

अर्गन्धाव नदीकी नहरके किनारे-किनारे सड़क बनी थी। हम सर्वप्रथम एक अत्यन्त सुन्दर रमणीय स्थानपर पहुँचे। सरकारी होटल था। डाकबँगला बना है। अर्गन्धाव नदीका

दृश्य बहुत ही सुन्दर मिलता है। हम चलना ही चाहते थे कि मालूम हुआ कि बाबा साहब वलीकी मजार है। यह स्थान दिल्लीके निजामुद्दीन औलियाके समान ही पवित्र माना जाता है। हम मजारपर गये। कब्र लम्बी और आसमानके नीचे है। मुझे स्थान जाग्रत मालूम पड़ा।

मेरे आश्चर्यका ठिकाना न रहा। मेरी धोती देखते ही एक सज्जन उठे। वे वहाँ बैठे माला जप रहे थे। उन्होंने शुद्ध हिन्दुस्तानीमें अपना नाम बताया। वे हिन्दू थे। हरिद्वारकी यात्रा कर चुके थे। बोले—यहाँ हिन्दू मुसलमान सभी आते हैं। पूजा करते हैं। मैंने पूछा—आप क्या जपते हैं? वे बोल उठे—मैं राम राम जपता हूँ। मुसलमान अपने अकीदेके मुताबिक काम करता है और हिन्दू अपने। हम लोग चकित हो गये।

पुराना कारवाँ-मार्ग देखा। अरब, मिस्र, ईरान, हेरातसे पुराने जमानेमें कारवाँ आते थे। स्थान फीलकोट कहा जाता है। फील हाथीको कहते हैं। पहाड़ी बिलकुल हाथीके शक्लकी है। सूँड़ तथा मस्तकतक प्रकृतिने जैसे पर्वतमें गढ़कर बना दिया था।

कन्धारमें कबरिस्तान बहुत मिलेंगे। कबरें अधिकतर पहाड़ोंकी ढालपर बनी हैं। इतने अधिक कबरिस्तान शायद ही कहीं सुरक्षित होंगे। नहर कबरिस्तानके बीचसे निकाली गयी थी। मैंने शाहसे पूछा—यह कैसे सम्भव हो सका? वह तुरन्त बोले—पैगम्बर साहबकी हदीस है—'अगर पानीकी नहर और सड़कके रास्तेमें मेरी मजार भी पड़ जाय तो उसपरसे नहर और सड़क ले जाना।' मैंने कहा—हिन्दुस्तानमें तो हिन्दू और मुसलमान दोनों ही मसजिद, मन्दिर, मजार आदिके लिए लड़ जायँगे। शाहने कहा—हमने सब कबरोंकी हड्डियाँ और लाश दूसरे जगह दफना दी। मसजिदकी जगह दूसरी मसजिद बनवा दी। लोगोंको पानी मुफ्त मिल गया। कोई क्यों

एतराज करता।

मार्गमें कन्धारका बाग पड़ा। बाग सुन्दर है। एक बँगला बना है। कन्धारी गुलाब देखे। गुलाबका एक-एक पेड़ ९ इञ्चतक मोटा था। बाग फूलोंसे भरा था। माली इन ान था। तसवीर हाथमें थी। बागमें घूम रहा था। देखते ही खुश हो गया। फूलकी तारीफ की। प्रसन्न हो गया। बोल उठा—सारा बाग आपका है। उठा ले जाओ। अनेक प्रकारके रंगीन गुलाबोंके गुच्छे दिये। प्रत्येक अर्धप्रस्फुटित कली मुस्कराती थी। प्रत्येक पुष्प कुछ कहता था। भारतमें दुर्लभ थे। उन फूलोंमें कितनी सुन्दरता थी। सुगन्ध कितनी भीनी थी। वर्णन करना कठिन है। काला, लाल, पीला, हरा, नीला, बैगनी, गुलाबी सभी रंगोंके गुलाबोंका गुच्छोंमें समावेश था। मन जानेका नहीं करता था। पंछी जैसे अपने बागमें आ गया था। अर्गन्धाबकी नहरोंका जल भीनी सुगन्धकी ओर खिंचता क्यारियोंमें दौड़ा आ रहा था। समस्त उद्यान पुष्पोंसे ढका था। वास्तवमें यह गन्धर्वोंका देश था। कन्धारमें फूलोंका शौक है। फूल पसन्द करते हैं। हमारे यहाँ फूल केवल देवताओंपर चढ़ानेकी सामग्री बन गया है। गन्धर्वोंको सुगन्धित तथा फूल जैसा कोमल और हल्का बनानेके लिए ही मानों यहाँ उत्पन्न होता है।

कन्धारके प्रसिद्ध बाग भी देखे। कन्धारका अनार मशहूर होता है। किसमिस खूब बनती है। अनार दो सेरतकका होता है। अनारकी ढेपी आमकी तरह निकाल देते हैं। उसे गुलगुलाकर पी जाते हैं। हम खाते हैं एक-एक दाना। अनारके विषयमें सुना था, खूनकी खाद दी जाती है। खूनकी खादसे अनार लाल होता है। यह सब कपोलकल्पना है। फल कन्धारमें काबुल आदि स्थानोंकी अपेक्षा अधिक होता है।

भारतीय व्यापारी बहुत हैं। वे अब अफगानी नेशनल हो

गये हैं। उनकी अंगूरकी खेती हम देखने गये। कन्धार शहरके चारों ओर अंगूरकी खेती होती है। छत्तीस प्रकारके अंगूर होते हैं। गुलाबीसे लेकर जर्द रंगतकका अंगूर हमने देखा। हमारे भारतीय मित्रका बाग शहरसे ४ मील दूर था। लगभग दस सालसे गये भी नहीं थे। बिना सूचना हम पहुँचे थे। वे बड़े स्नेहसे मिले। उनके साथ उनका छोटा बच्चा था। बागपर पहुँचे। जिस ओर फाटक पहले था वहाँ दीवार खड़ी थी। वे स्वयं परेशान हो गये। मालूम हुआ, मालियोंने रास्ता दूसरी ओर कर लिया है। हम एक ऐसे मालिकके साथ थे, जिनका सब काम नौकर करता था। बागमें गये। अजीब दृश्य था। लगभग २० बीघेमें अंगूरकी बेलें फैली थीं। उनमें मोतियोंके गुच्छे जैसे झूल रहे थे।

मेड़ोंके बीच बेलें लगायी जाती हैं। प्रत्येक मेड़ ७ से १० फुट तक ऊँची होती है। नालीमें पेड़की जड़ होती है। मेड़पर अंगूरकी बेल फैला दी जाती है। बेलकी जिन्दगी १०० वर्षकी होती है। चालीस वर्षमें बेल जवान होती है। किसमिसका घर भी देखा। एक घरमें सैकड़ों सुक्के थे। सुक्कोंके सामने लकड़ी लगी थी। उन्हींपर गुच्छे झूल रहे थे। ताजा अंगूर बड़ा ही अच्छा था। अजीब स्वाद था। गुलाबी अंगूर तो कोई ५ सेरतक खा सकता है। पेट फिर भी खाली मालूम होगा। वह इतना स्वादिष्ट था कि लिखा नहीं जा सकता।

पानीमें चूना डालकर बड़े अंगूरको उबालते हैं। सुखा लेते थे। लाल अंगूर आबजोश और काला मुनक्का होता है। अंगूरकी एक बेलमें १२ से २० सेरतक अंगूर होता है। किसमिस हरी और लाल होती है। किसमिस बाहर भेजी जाती है। लाल किसमिस बाहर भेजना सम्भव नहीं होता। एक प्रकारकी और किसमिस होती है। रंग कुछ हरा-काला मिश्रित होता है। सख्त

होती है। सूखा खानेमें परिश्रम करना पड़ेगा। बाहर भेजी जाती है। पेस्ट्री तथा पकाये हुए भोज्य-पदार्थमें व्यवहार होता है। भाप तथा पानीसे वह मुलायम हो जाती है। अनार, नासपाती, बगू-गोशा, बादाम, खुबानी, पिश्ता आदि यहाँपर खूब होते हैं। पानीका सुपास है। बर्फ नहीं पड़ती तथा अन्नकी पैदावार अच्छी होती है।

कभी अकाल नहीं पड़ता। वर्षापर जीवन निर्भर नहीं है। जीवन अर्गन्धाव नदी तथा सोतोंपर आश्रित है। बारहों मास चलते रहते हैं। उनके सूखनेका प्रश्न अबतक उत्पन्न नहीं हुआ। कन्धारके घोड़े अच्छे होते हैं। गाय भी अच्छी दिखाई दी। भारतीयोंको गायका दूध तथा घी मिल जायगा। घीको अफगानिस्तानमें घी ही कहते हैं। आदमी गन्दे कम मिलेंगे। शीत कम पड़नेके कारण तथा जलकी अधिकतासे स्वभावतः स्नान करनेमें सुविधा होती है।

अर्गन्धाब नदीके दाहिने किनारे-किनारे हम लोग अर्गन्धाव बाँध देखने चले। मार्ग बहुत सूखा नहीं मिला। सिनजरी, मनरा तथा सोजनाई मिले। नहरके तटसे भी चले। नहरोंमें भेड़े तथा जानवर पानी पीते हैं। लोग स्नान भी करते दिखायी दिये। पानी लेनेकी मनाही नहीं है। भारतके बड़े बाँधोंकी अपेक्षा छोटा मालूम होगा। नदी पहाड़ोंके बीच बाँध दी गयी है। पर्वतकी चोटीपरसे चारों ओरका दृश्य बहुत सुन्दर है। पासमें ही जल-विद्युत-शक्तिघर है। एक छोटी आबादी है। जर्मन इञ्जीनियर इन्चार्ज है। एक प्रकारसे अफगानिस्तानमें रह गये हैं। अपनी योजना दिखानेका इतना उत्साह था कि वह एक चीज भी बिना दिखाये छोड़ना नहीं चाहता था। एक छोटा-सा बँगला भी है। इसमें बुलगानिन तथा खुश्चेव ठहर चुके थे। हमारे लिए चायका प्रबन्ध था। जर्मन मित्रने इतनी

सुजनता तथा स्नेह दिखाया कि लिखना कठिन है। हम लोगों-का पेट भरा था। कुछ खा न सके। उनसे विदा होते अत्यन्त दुःख हुआ। जंगल और रेगिस्तानमें अपनी जन्मभूमिसे हजारों मील दूर अकेला पड़ा था। फिर भी प्रसन्न था। उसकी प्रसन्न मुद्रा कभी भूल न सकेंगे। कुछ समय व्यतीत कर लौट चले। प्राकृतिक दृश्य सुन्दर है। बैठकर लिखा-पढ़ा जा सकता है। लौटते वक्त अर्गन्धावके बायें तरफसे आये। मार्गमें शखछला, सरदेह, तथा ख्वाजा पड़े।

कन्धारका कार्यक्रम विस्तारके साथ बनाया गया था। काबुलमें बेकार रहकर जो आलस्य आया था वह दूर हो गया। श्री अवतारकृष्ण बक्सीके यहाँ मध्याह्नका भोजन ३ बजे किया गया। खाकर अपनी लम्बी यात्रा गिरिश्क योजना देखनेके लिए रवाना हो गये। साथमें दो सवारी थी। एकके फेल होनेपर दूसरेका प्रयोग किया जा सकता था।

मार्ग देशके भीतरी भागसे होकर जाता था। सड़क कँकरीली थी। सड़क काबुल-कन्धार-हेरातवाली थी। दोनों ओर पहाड़ोंकी श्रेणियाँ थीं। बीचमें चौड़ी घाटी थी। कहीं-कहीं आबादी मिल जाती। सड़कपर हमें कहीं सवारी न मिली। हम चले जा रहे थे। सायंकालके पहले लश्करगाह पहुँचना था।

मार्गका दृश्य रूखा था। लेकिन सम्मुख सूर्य डूब रहा था। शनैः-शनैः सूर्यकी प्रभा उज्ज्वलसे पीत और पीतसे लोहित वर्ण हो चली थी। सूर्यका डूबना हमने समुद्रमें देखा, उसे रेगिस्तानमें भी डूबते देखा। भुवनभास्करके जल एवं मरुस्थलके अवसान दृश्योंमें विभिन्न सौन्दर्य मिलेगा। सूर्यका अवसान पर्वत, समुद्र एवं लम्बे रेगिस्तानमें देखना, प्रकृतिके अनोखे दृश्यका दर्शन करना है। बादलोंपर किरणें छिटकती हैं, आसमान रंग बदलता है। उन्हें वर्षाऋतुमें देखते पर्वतोंकी

चोटियोंमें छिपता, झाँकता, उगता, प्रकाश फैलाता, लोप करता विलीन होता है। अफगानिस्तानके इस जनशून्य भूखण्डमें बादल नहीं थे। पादपमय पर्वत-मालाओंकी ऊँची-नीची चोटियाँ न थीं। यहाँ था सपाट मैदान। सूर्यप्रभा धीरे-धीरे मृत्यु छाया-तुल्य मलिन होती दिनको अपनी गोदमें ले रही थी। मानवपर मृत्यु छाया आती है। धीरे-धीरे जीवन लोप करती है। वह मलिन होता है। तापविहीन होता है। ठण्ढा हो जाता है। दिनकी भी यही कहानी थी। दिन मलीन होता जाता था। अँधियारी छोपती आ रही थी। सन्ध्या ठण्ढी हो रही थी। हमारा ड्राइवर मोटरसे उतर गया। बगलके खेतमें नमाज पढ़ने लगा। हम दिवसके अवसानकी कहानी देखने लगे।

अँधियारी गम्भीर होने लगी। कार वेगसे बढ़ती जा रही थी। कुछ भय भी मालूम हो रहा था। कभी-कभी स्मृतियाँ और कहानियाँ भी दुःख पहुँचाती हैं। कबीलेवालोंके लूट-पाट, हत्या, डाकेकी अनेक बातें सुन चुका था। वे सजीव हो गयी थीं। अपने देशमें आँखोंके आगे आने लगीं। लोग हिन्दुस्तानसे आये थे। ब्रिटिश साम्राज्यसे आजादी लड़ कर ली थी। अफगान भाई हमें देखते थे। स्नेहसे मुस्करा देते थे। मार्गमें सिआोरी हौज-ए-मदत, करेज-ए-अटा, खूमियानी पीरजादा तथा पखछल पड़ा। मीरकरेज पखछलसे सड़क हेरात जाती है। हम दूसरी शाखा सड़क सुर्खकला तथा मुखत्तर होते लश्कर पहुँचे।

कस्बों और गाँवोंमें किलेबन्दी और आबादीके चारों ओर ऊँची दीवारें तथा बुर्ज मिलते गये। रात हो गयी थी। लश्कर-गाहमें अमेरिकी योजनाका सदर दफ्तर है। एक छोटा शहर बस गया है। सभी आधुनिक प्रसाधन मिलेंगे। अफगानी नौजवान इञ्जीनियर मिले। उत्साही थे। मृदुभाषी थे। हमें पहचाननेमें दिक्कत हुई। समझा, अमेरिकन हैं। बादमें मालूम

हुआ, अफगान हैं। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उनमें कुछ हिन्दुतान रह चुके हैं। कुछकी शिक्षा भारतमें हुई थी। उनपर हिन्दुस्तानकी छाप मिली। उनके स्नेहने हमें खरीद लिया। वे परेशान थे। समाचार पहले पहुँच चुका था। मार्गमें कुछ गड़बड़ी हो गयी है। गाड़ी भेजनेका प्रयास कर रहे थे। देखते ही राहत हुई। भोजनका प्रबन्ध बड़े पैमानेपर था। खाना टेबुलपर सजा था। देखकर पेट भर गया था। मजार-ए शरीफका खरबूजा मँगाया गया था। उसका लोभ न त्याग सके। निश्चय हुआ, प्रातः ठीक ७ बजे गिरिश्कके लिए रवाना हो जायँगे। सोनेका प्रबन्ध उत्तम था। स्थान हेलमन्द नदीके तटपर था। पानी बहता चला जा रहा था। मन प्रसन्न हो गया। रातमें अच्छी नींद आयी।

आसन, प्राणायाम तथा साधनमें मुझे प्रायः प्रतिदिन २ घण्टा लगता है। मैं उसे रेल तथा हवाई जहाजतकमें कर लेता हूँ। रात्रिमें नींद आ गयी थी। कुछ देरसे उठा। मेरे कारण कुछ मिनटोंकी देर हो गयी। इसका दुःख अबतक बना है। प्रातःकी चायका प्रबन्ध राजशाही था। कुछ खाकर दो मोटरोंमें चले थे। हमारी मोटरमें महमूद और राधारमण आदि थे। दूसरीमें अकबर बैठ गये। दोनों ही व्यक्ति समझदार तथा शीलवान् थे। उनका साथ कभी भूल न सकूँगा। वे इञ्जीनियर थे।

लश्करगाहका अर्थ फौजी छावनी अथवा कॅन्टोन्मेण्ट होता है। लश्करगाहमें पुरानी फौजी छावनीके उजड़े मकान मिलेंगे। यह महमूद गजनीकी फौजकी छावनी थी। गजनीमें ठण्ढक शीतऋतुमें अधिक पड़ती है। महमूद गजनीने किला-ए-बिस्तको अपनी ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया था। किला-ए-बिस्त तथा लश्करगाहके मध्य विशाल उजड़े नगरोंका ध्वंसावशेष पड़ा है। लश्करगाहसे किला-ए-बिस्ततक जानेके लिए सड़क है।

मार्गमें मड़वाल गाँव पड़ता है। मार्गमें महमूद गजनीका महल पड़ा। पूरा भूतखाना प्रतीत होता है। किलेके सदृश चहार-दीवारीसे घिरा है। बुर्जियाँ बनी हैं। परन्तु उनमें एक भी जीव-जन्तु दिखाई न पड़ेगा। वह स्थान कन्धारसे ९० मील दूर है।

किला-ए-विस्त हेलमन्द नदीके बाँयें तटपर स्थित है। अर्गन्धाव नदीके संगमसे एक मील दूरपर है। प्रयागके किलेके समान संगमपर बना है। पहले किलेके पास ही दोनों नदियोंका जल मिलता था। महमूद गजनीने, कहा जाता है, इसे बनवाया था। उसका पुत्र और उत्तराधिकारी सुलतान मसूद राज्यपाल था।

किला एक एकाकी पहाड़ीपर है। दूरसे मिट्टीके बहुत ऊँचे दूहेपर बना मालूम होता है। लखौरिया ईंटोंका है। केवल एक बड़ा मेहराब अक्षुण्ण खड़ा है। किलेमें कोई आबादी नहीं है। लखौरिया पक्की ईंट तथा चूनेसे किला तथा इमारतें बनायी गयी हैं। चूनेमें रेतीली मिट्टी सानकर गारा बनाया गया है। वह आधुनिक सीमेण्टसे भी मजबूत है। आज भी गारा हाथसे तोड़नेसे टूटता नहीं। यही स्थापत्य-शैली भारतमें भी मुसलमानोंने अपनायी। मुसलमानी कालकी जितनी भी इमारतें मिलेंगी, सबमें लखौरिया ईंट तथा गारेके स्थानपर चूनेका प्रयोग किया गया है। बुद्ध तथा हिन्दू कालमें भारतमें बड़ी, चौड़ी और मोटी ईंटें बनती थीं। सारनाथ अथवा कहीं भी मुसलिम-पूर्ववर्ती कालकी इमारतोंमें इस प्रकारकी ईंटोंका प्रयोग मिलेगा। मुसलिम कालकी रचना है अथवा हिन्दू अथवा बौद्ध कालकी, उनका तुरन्त पता ईंटोंसे मिल जाता है। पठान और मुगलकालकी लखौरिया ईंटोंमें भी अन्तर है। विभिन्न मुसलिम कालके रचनाकालका पता लखौरिया ईंटोंके विभिन्न आकारोंसे चल जाता है।

किलेकी चोटीपर बैठ जाइये। बीसों मीलतक उजड़ा शहर दिखाई पड़ेगा। महलों, मकानों, चहारदीवारियों, परकोटोंके गिरते-पड़ते-मिटते निशान दिखाई देंगे। देखकर मन उदास हो जाता है। साथ ही उसे देखकर यहाँके गौरवकी स्मृति हरी भी हो जाती है। भारतके लूटे द्रव्यसे यह किला पूर्व किलेके स्थानपर ही बनाया गया होगा। महमूद गजनीकी कल्पनाका साकार रूप भी हो सकता है। किला ९ मीलके घेरेमें था। एक हजार वर्ष पूर्व बना था। किला बीचमें है। उसके बाद खाई है। किलेके बीचमें एक कुआँ है। उसे गहरी बावली भी कह सकते हैं। कुएँके चारों ओर बरामदे तथा कोठरियाँ बनी हैं। जमीनके नीचे पहुँचनेके लिए सीढ़ियाँ बनी हैं। कहा जाता है, कुएँका सम्बन्ध समीपवर्ती हेलमन्द नदीसे था। कुएँके अन्दर महल बना मैंने माण्डूमें देखा है। माण्डू मध्यप्रदेशमें है। माण्डूका मुसलिम निर्माता इस स्थानको अवश्य देख चुका था। माण्डूमें पठानवंशीय बादशाहोंने निर्माण कराया था। वहींसे ताजमहलकी कल्पना भी कालान्तरमें ली गयी थी। पठान अफगानवंशीय थे। अतएव माण्डव अथवा माण्डूके कूप-प्रासादकी रचना किला-ए-बिस्तके आधारपर किया जाना सम्भव प्रतीत होता है।

किले तथा दूरतक फैले महलोंके चारों ओर चौकोर ऊँची बुर्जीदार दीवारें खड़ी हैं। उनपर तीर, गोली चलानेके मुक्के बने हैं। सारा स्थान भयंकर है। उदास मालूम होता है। यहींसे बिलोचिस्तानतक पूरा रेगिस्तान मिलता है। इसके गौरवकी बात सुनकर ही चंगेज खाँकी फौजने आक्रमण किया था। जमींदोज किया। उसके बाद तैमूरलंगने भी लूटा-खसोटा। अलाउद्दीन जिसे 'जहाँशोष' अर्थात् 'दुनिया जलानेवाला' कहते हैं, यहाँ भी गया, सब कुछ जला दिया। उसने बीस मीलमें फैली इस महान् नगरीको भी फूँक दिया। अग्निदाहके पश्चात् नगर फिर आबाद

न हुआ। जले नगरकी चिताकी राख ढहती दीवारोंकी रेतके रूपमें मिलेगी।

लौटते वक्त रास्तेमें एक दूल्हा मिले। दूल्हाकी दाढ़ी लम्बी थी। अफगानिस्तानमें ९० प्रतिशत लोग दाढ़ी रखते हैं। अफगानी हिन्दू बिलकुल नहीं रखते। दूल्हा घोड़ेपर सवार था। उसके पीछे उससे भी ज्यादा उमरका व्यक्ति बन्दूक लिये बैठा था। हमारे यहाँ बारातमें घोड़ेपर दो बैठते हैं—दूल्हा और शहबाला। बेचारा घोड़ा दबा जा रहा था। पीछे तीन-चार स्त्रियाँ थीं। वे परदामें नहीं थीं। एक दरया अर्थात् डफ बजा रही थी। डफपर गाती दूल्हाके पीछे चली जा रही थी। उसके सरपर ओढ़नी थी। पैरमें पाजामा था। बदनपर लम्बा कुरता था। कानमें बालियाँ थीं। देखनेसे पंजाबी स्त्रीकी तरह थी। वे प्रसन्नतासे गाती चली जा रही थीं। उनकी प्रसन्नतामें उजड़े शहरकी उदासीसे उदास हुआ दिल अनायास खिल गया। उनके उल्लासमय गानमें हम भी उल्लसित हो उठे। लेकिन इस दूल्हेकी शादी हिन्दुस्तानमें नामुमकिन थी। कोई लम्बी दाढ़ीवाले पुराने मैले कपड़ोंमें लिपटे दूल्हेको अपनी कन्या देना पसन्द नहीं करेगा। मुश्किल तो यह थी कि सारे अफगानमें बिना दाढ़ीका दूल्हा मिलना भी कठिन था। परदा काबुलकी तरह सख्त नहीं है।

हेलमन्द नदी पार की। दाहिने तटसे धाराकी ओर चले। मार्गमें अरस, सुरकुद्ज, शामलान होते दरब-ए-शाहबाला पहुँचे। नदीके बायें तटपर किला-ए-विस्तके पश्चात् गोरागै, करमनक, हजरजुफ्त, खरकोह, दरब-ए-शाह तथा दरब-ए-शाहबाला है। दरब-ए-शाहबालासे पुनः उसी सड़कसे लौटे। शामलान आकर उत्तर पश्चिमकी ओर सड़कसे चले।

अफगानिस्तानमें महमूद गजनीके समय सिंचाईकी नहरोंका वर्णन मिलता है। तत्पश्चात् नहरें सूख गयीं। अमीर दोस्त-

मुहम्मदके समय बहुत थोड़ा जिक्र सिंचाईका आता है। दो गाँवोंमें नहरोंके पानीके लिए झगड़ा हुआ था। उन्हींसे अर्थ निकाला जाता है कि सिंचाईकी किंचित् व्यवस्था थी। अमीर अब्दुर्रहमानके समय भी कुछ विवाद हुआ था। पानीका झगड़ा इसपर निपटा था कि जो जितना कर दे, उतना पानी ले। वास्तवमें महमूद गजनीसे लेकर अमीर अमानुल्लाके समयतक देशके विकासके लिए कोई योजना नहीं बनायी गयी थी। नहरें प्रायः सूख गयी थीं। कितनी नहरोंका नाम-निशान मिट गया था। वर्तमान अफगान सरकार रेगिस्तानको जरखेज करना चाहती है। योजनाके लिए उसने अमेरिकासे सहायता ली है। अमेरिकाके टेकनीशियन तथा कर्मी इस भूभागमें नहरोंका जाल तथा बिजलीका तार बिछा रहे हैं। नहरें हम लोगोंने देखीं, उनकी योजना अच्छी है। यदि यह योजना सफल हो गयी तो अफगानिस्तानका नकशा बदल जायगा।

अफगानिस्तानकी आबादी कम है। मरुस्थलमें खून-पानी एक कर हरा-भरा बनाना एक समस्या है। अफगानिस्तानमें खानाबदोशोंकी आबादी बीस लाखके करीब होगी। वे तम्बुओंमें रहते हैं। भेड़, दुम्मे तथा ऊँट चराते हैं। ऊन तथा जानवर बेंचकर अपना जीवन-यापन करते हैं। कुछ भारतके कंजड़ टाइपके भी हैं। अफगानिस्तानसे दिल्ली और आसामतक पूरी गिरस्ती गदहों या टट्टुओंपर लादे पर्यटन किया करते हैं। अफगान सरकार उन्हें आबाद करना चाहती है। घर-गृहस्थी जमाकर खेतीकी आदत उनमें डालना चाहती है। खेत मुफ्त दिये जाते हैं। बैलकी कीमत दी जाती है। पानी मुफ्त दिया जाता है। कुछ कुटुम्ब आबाद भी हुए हैं।

नादअली पहुँचे। शामलानसे नादअलीतक घोर मरुस्थल है। मृग-मरीचिकाका अनुभव हो सकता है। नादअलीमें ६०० वर्ष

पुराना मिट्टीका किला है। गाँवमें पक्की मसजिद है। किला पहले बादशाही गोदाम था। आधुनिक शैलीके फार्म बनानेका प्रयास किया जा रहा है। नादअलीसे चाजेर आये। बिजलीका सब-पावर स्टेशन है। चाजेरसे मुहम्मदशाह और वहाँसे नादिर पहुँचे। भोजन आदिसे निबटकर गिरिश्क आ गये। गिरिश्क काबुल-कन्धार-हेरात सड़कपर प्रसिद्ध शहर है।

गिरिश्क कन्धारसे ७५ मील हेरातवाली सड़कपर है। हेलमन्द नदीका पानी छोटेसे बाँधसे घुमाकर पावर हाउसमें लाया गया। बिजली उत्पादनके पश्चात् वही पानी नहरमें जाता है। मोमेन कम्पनीके एक अमेरिकन इञ्जीनियर श्री फ़िट्ज़सिप जलविद्युत्-शक्ति घर बना रहे थे। उन्होंने ब्राजीलमें भी जल-विद्युत् योजनामें काम किया था। भारतके कुछ प्रख्यात इञ्जीनियरोंको जानते हैं। मस्त आदमी हैं। रूस द्वारा की जानेवाली योजनाका हाल सुनकर प्रसन्न नहीं हुए। प्रत्येक अमेरिकनको मैंने देखा कि वह रूसके नामसे चिढ़ जाता है। एक छोटा व्याख्यान शुरू कर देता है। उन्होंने भी छोटा-सा प्रवचन दिया। हम मुस्कराते रहे।

मुझे याद है, मैं दिल्लीसे बनारस आ रहा था। मेरे डब्बेमें एक रोमन कैथोलिक फादर थे। उनके पास तीन-चार बाइबिल थी। सबका भाष्य अलग था। बाइबिलपर बात होने लगी। अचानक रूसकी बात मैंने उठायी। उन्होंने तुरन्त बाइबिल बन्द कर दी। मुझे लगे समझाने। मैं सोने लगा। वे बोलते गये। लगभग १॥ घण्टेके पश्चात् मैंने आँख खोली। वे उसी प्रकार अपने मिशनरी जोशमें बोलते रहे। मैंने हँसकर कहा—आपकी बात समझ गया। अब सोइये। उन्होंने विश्वास कर लिया कि मैं उनके तर्कसे पूर्णतया सन्तुष्ट हो गया हूँ। वही अवस्था मैंने सर्वत्र पायी।

हम गिरिश्क देखनेके लिए आये थे। देख चुकनेपर हमारे साथी इञ्जीनियरोंने हमारी प्रतिक्रिया पूछी। मैंने कहा—विद्युत् योजना और यहाँका बाँध उतना अच्छा नहीं है। अफगानकी सरोबी योजना यदि सौ वर्षतक चलेगी तो यहाँ बीस वर्षके पश्चात् ही मरम्मतकी आवश्यकता पड़ सकती है। युवक इञ्जीनियर अकबर उदास हो गये। मुझे उनका गुलाब-सा हँसता मुख अचानक उतरता देखकर धक्का लगा। बात कह चुका था। स्पष्टवादिता कहीं-कहीं धक्का पहुँचाती है। आज अनुभव किया। मुझे इस घटनासे स्वयं दुःख हुआ। उसे आजतक भूल न सका हूँ।

भरे दिलोंसे युवक अफगानी इञ्जीनियर मित्रोंसे विदा ली। गिरिश्क शहरमें आये। वहाँ पेट्रोल पम्प है। पेट्रोल लिया। कूप जल पीया। बाजार कस्बा-सा है। साफ है। सड़कें चौड़ी हैं। किला मजबूत है। होटल है। सड़कोंके किनारों-पर छायादार वृक्ष लगे हैं। आगरेके किलेके अनुरूप है। उसे आगरेका छोटा माडल कह सकते हैं। मुगलोंने आगरेका किला यहींके माडलपर बनाया होगा। मुगल अफगानिस्तानके बादशाह थे। इस किलेको देख चुके होंगे। अतएव इसी माडलमें कुछ सुधार तथा विकासकर आगरेका किला शायद बनवाया गया है। दीवारें मिट्टीकी हैं। आगरेके समान दोहरी दिवारें हैं। उसीकी तरह बुरजी, उनपर तोप रखनेके स्थान, बन्दूक चलानेके मुक्के बने हैं।

गिरिश्कसे काबुल-कन्धार-हेरात सड़कसे चल पड़े। मार्गमें चुंगी पड़ी। हिन्दुस्तानका नाम सुनते ही फाटक खुल गया। लोग हाथ उठाकर मुस्करा उठे। हम लगभग ५ बजे कन्धार पहुँचे। मार्गमें चहाल-जीना पड़ता है। कन्धारके एक ओरकी पहाड़ीपर बना है।

चहाल-जीनापर जानेके लिए ४० सीढ़ियाँ हैं। इसे बाबरका चहाल-जीना कहते हैं। कन्धार शहरसे लगभग डेढ़ मील दक्षिण-पश्चिममें पहाड़ीपर स्थित है। इसका मार्ग एक बड़े कबरिस्तानसे होकर ऊपर जाता है। मोटर जीनाके करीबतक चली जाती है। जीनाका अर्थ सीढ़ी होता है। सीढ़ियाँ बहुत खड़ी हैं। लम्बे पठानोंके लिए ठीक हो सकती हैं। लोहेकी छड़ लगी है, जिसका सहारा लेकर ऊपरतक पहुँचा जाता है। स्थान सुरम्य है। एक बहुत बड़ा मेहराबदार बरामदा है। पहाड़का पत्थर काटकर ही सीढ़ी तथा बड़ा ताखा या बरामदा बनाया गया है। एक प्रकारकी गुफा है। इसीपर मुगलोंके फतह किये स्थानोंके नाम फारसीमें उत्कीर्ण हैं। गुफाके मध्यमें ५॥ फुटका ऊँचा ताखा है। कुछ लोगों कहना है कि यह मसजिद है। मेरे विचारसे मसजिद नहीं है। मसजिद होती तो पेश इमामकी जगह अल्लाह या कलमाके स्थानपर विजय-गाथा व्यक्तिवाचक संज्ञामें न लिखी जाती।

सम्भव है, पुरानी बौद्ध गुफा हो। बीचमें भगवान्‌की मूर्ति स्थापित रही हो। कालान्तरमें मूर्ति हटाकर उसे मसजिदका रूप दे दिया गया हो। मसजिदके रूपमें आज भी इसका व्यवहार नहीं होता। बच्चासक्काके विद्रोहकाल सन् १९२९ में गोली चली थी। गोलीके निशान अभीतक मौजूद हैं। गोलीसे बहुतसे अक्षर बिगड़ और टूट गये हैं। मुझे बहुत थोड़ी फारसी आती है। श्री राधारमणजी खूब पढ़ लेते हैं। बहुतसे अफगानी मौजूद थे। इस ऐतिहासिक शिलालेखके पढ़नेमें सहायक सिद्ध नहीं हुए। बहुतसे शहरों तथा स्थानोंके नाम गलत हैं। वह इस प्रकार है — सुनार कास, कोरा फात, शेरपुर मरवा, परीना ताजपुर, कोर तान्दा, एक महल मनकीर, बहार बहरत, हाजीपुर, पसा, दहता, दड़ीयराम, चौसा-गाजीपुर-चुनार, बनारस, जौनपुर, कड़ा मानिकपुर, कालपी, कालिंजर, इटावा, कन्नौज, लखनऊ, अवध,

बहराइच, पचनल, अमरोहा, बदायूँ, कौलजलाली, शमयशाबाद, आगरा, ग्वालियर, परोज, चन्देरी, राय वीसन, सारंगपुर, उज्जैन, मालवा, माण्डू, हिन्दिया, बरार, अमीर बरहानपुर, तरमार, व-रात-रोज, महमूदाबाद, सवातरो, भाकर नवान-करसान, कचकंकार, रततनवूर (रणथम्भोर ?) थनसनमेर, (जयसलमेर ?) चित्तौर, पन्नाह, मथुरा, देहली, पानीपत, मारम, हिसार, तानेश्वर (थानेश्वर) सरहिन्द, तिजारा, सुलतानपुर, जलन्धर, लाहौर, कलानौर, नफरकोत, रोहतास, अटक, जम्मू, जलालाबाद, डेरा, गजनी, शोर, वतनशीह फरीदा, मुलतान, दूराए, उचवफा, सहवान, उमरकोट, तत, उमीदक, अकरीयत, अथसर—अकना—, आलम, अज, ता—, सवात, नौ सद बीस दो आठ। (९३८ हिजरी)

हम लोग आज लगभग दो सौ मीलसे ऊपरकी यात्रा कर चुके थे। कुछ थके थे। सायंकाल हो गयी थी। चहाल-जीनासे कन्धारका विहंगम दृश्य मिला। हरियाली देखकर आँखें प्रसन्न हो गयीं। थकान मिटने लगी। बक्सीजीके साथ दूतावास लौटे। भोजन करीब-करीब तैयार था। हम लोग ५ व्यक्ति थे। लेकिन जहाँ इच्छा होती है वहाँ काम भी होता है। बक्सीजी स्वयं जमीनपर सोये। हम लोग भी जमीनपर ही लम्बे हो गये।

आज २७ तारीख थी। कन्धार छोड़ना था। जलपानके पश्चात् निकल पड़े। दिन शुक्रवार अर्थात् जुमाका था। हजरत पैगम्बर मुहम्मद साहबका वस्त्र जिस स्मारक भवनमें रखा था वह तथा अहमदशाह अब्दालीकी मजार देखनी थी। यही दोनों चीजें यहाँ देखनेके लिए उपयुक्त हैं। मंजिल बाग भी देखने लायक है।

अहमदशाह अब्दाली (१७४७-१७७३) की मजार बड़ी है। बीचमें गुम्बद है। अफगान राष्ट्रके राष्ट्रपिता हैं। अतएव मजार बड़े ही सुन्दरतापूर्वक सजाकर रखी गयी है। महरौलीके ऊधम

खाँके मकबरे जैसे माडलपर बनी है। कालीनें खूब बिछी हैं। एक कोनेमें कुरानशरीफ ऊँचे टेबुलपर रखी थी। उसे चूमते हैं, पैसा चढ़ाते हैं। कुछ लोग बैठे तसबीह फेरते हैं।

इसी मजारके बायीं ओर जामा मसजिद है। मसजिदके बगलमें खूब कालीन और झाड़फानूससे सजी गुम्बददार इमारत है। पृष्ठभागमें कोठरी है। कोठरीमें चाँदीके किवाड़ लगे हैं। उसीके अन्दर पैगम्बर साहबका कपड़ा रखा है। किवाड़को लोग चूमते हैं। बैठकर तसबीह फेरते हैं। गुम्बदके पृष्ठभागके मध्यमें सिंहासननुमा स्थान बना है। उसमें कुरानशरीफ रखी है। उसे भी लोग चूमते हैं। पैसा चढ़ता है। लोग बड़े आग्रहसे जियारत अर्थात् तीर्थ करने आते हैं। मसजिदके फाटकके ऊपर एक बुर्जी बनी है। उसीपरसे मुअज्जिन खड़ा होकर अजाँ देता है। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई कोई भी दोनों ही पवित्र स्थानोंमें प्रवेश पा सकता है।

हिन्दुस्तानी कपड़े तथा मेवेका व्यापार कन्धारमें करते हैं। व्यापार समृद्धिपर है। इनकम टैक्स देना पड़ता है। दोनों ही जातियोंमें मुहब्बत है। हिन्दुओंके बाग बहुत मिलेंगे। लेकिन यहाँके हिन्दू भी वही गलती कर रहे हैं जो उन्होंने बरमामें की थी। बरमाकी लगभग एक तिहाई जमीन हिन्दुस्तानियोंके हाथोंमें थी। वे जमींदार थे। खुद काम नहीं करते थे। बरमाकी क्रान्तिके पश्चात् सभी जमीनें काश्तकारोंकी हो गयीं। यहाँ भी काम करनेवाले, खेती करनेवाले सभी श्रमिक अफगानी हैं।

कन्धारके चौकके चौराहेपर शहीद-स्तम्भ बना है। स्तम्भके चबूतरेपर बहुत-सी कबरें बनी हैं। तोपें भी लगी हैं। तृतीय अफगान युद्धमें, सन् १९१९ में वीरगतिको प्राप्त हुए लोगोंकी स्मृतिमें बनाया गया है। शहरसे थोड़ी ही दूर कोकरनमें मीर वाइस खाँ घिलजाई (१७०९–१७१५) वीरकी मजार है। उत्तर

पश्चिम शहरकी तरफ कन्धार-हेरात सड़कपर मैवन्द स्मारक है। इसे तत्कालीन कन्धारके राज्यपाल मुहम्मद गुलखानने द्वितीय अफगान युद्ध (१८८०) में वीरगतिको प्राप्त हुए अफगानिस्तानियोंके स्मारक-स्वरूप बनवाया था। कन्धारमें राज्यपालका भवन भी दर्शनीय है। वसन्त ऋतु बहुत ही सुहावनी होती है। शिशिर ऋतु भी अच्छी होती है। ग्रीष्म कालमें कुछ गर्मी तथा सूखापन होता है।

हिन्दुस्तानी भाइयोंके यहाँ हमने दो-तीन जगह जलपान किया। उनकी मेहमानदारी तथा प्रेम अगाध था। दोपहरका खाना नामुमकिन था। चौबीस सितम्बरको यहाँ आये थे। कठिनतासे तीन दिन रहे। परन्तु तीनों दिन आनन्दपूर्वक जन-जीवन देखनेमें बीते। एक बजकर १५ मिनटपर हमने बाजार छोड़ा। सीधे हवाई अड्डेके लिए रवाना हो गये। मित्र श्री शाह विदा करने साथ चले।

शाहकी हम एक बात न भूलेंगे। वह जलालाबादके समीप एक छोटे गाँव सन्दूर (सिन्दूर) के निवासी थे। उनसे अफगानिस्तानके वजीरने पूछा—तुम्हें सबसे अच्छा सुन्दर स्थान कौन-सा लगता है। वह तुरन्त बोल उठे—'सिन्दूर'। सिन्दूर पहाड़ी उपत्यकामें एक छोटा गाँव है। बात-बातमें अपने गाँवके सुन्दर दृश्योंकी प्रशंसा किया करते थे। उनके जन्मभूमिके इस अगाध प्रेमसे हम बहुत प्रभावित हुए। विश्व घूम चुके थे। विश्वमें उन्हें उनका सिन्दूर ही सबसे सुन्दर लगा।

कन्धार-हेरात-मार्गके कुछ स्थानोंका वर्णन कर देना अप्रासंगिक न होगा। कन्धारसे १२ मीलतकका मार्ग तरनक नदीकी उपत्यकामें है। स्थान उपजाऊ तथा खूब आबाद है। तरनक नदी और अर्गन्धाव पार करना पड़ता है। एक दर्रा मिलता है। वह ४,१०० फुट समुद्रकी सतहसे ऊँचा है। उसे

पार करनेपर दोरीघाटी मिलती है। इसके पश्चात् खेती नहीं मिलती। नदीका पानी भी छिछला है। पैदावार नगण्य-सी है। घास भी नहीं मिलती। आबादी बहुत कम है। मार्गमें गिरिश्क पड़ता है। उसका वर्णन कर चुका हूँ। गिरिश्कसे फरह ७५ मील है। भूभाग अत्यन्त रेतीला है। कहीं पेड़-पालव या आदमीका नाम न मिलेगा। मन उकता जाता है। अजीब अन्यमनस्कता आ जाती है। मार्गमें 'दिलाराम' एक बहुत ही छोटा जनस्थान मिलता है।

गिरिश्कसे फरह ८३ मील है। वह २४६० फुट की ऊँचाईपर आबाद है। हेरातसे दक्षिणमें १७४ मीलपर है। इसके चारों ओर दीवार है। दिवारोंपर बुर्जियाँ बनी हैं। दिवारोंके पश्चात् चारों ओर गहरी और चौड़ी खाई है। यहाँ होटल तथा पेट्रोल पम्प है। शीस्तानका द्वार है। किला ध्वस्त हो रहा है। नगर विशेष उन्नत अवस्थापर नहीं है।

फरहसे सब्जवार ९४ मील है। मार्गमें तीन नदियाँ फरह, खशरूद तथा हसत पड़ती हैं। इस भूखण्डमें अधिकतर खानाबदोश अथवा कंजड़ रहते हैं। बहुतसे गाँव हैं। पहाड़ियाँ छोटी-छोटी हैं। मैदान भी बड़े नहीं हैं। शहर ३,२५० फुट ऊँचाईपर आबाद है। फरह तथा हेरातके मध्यमें है। हसत नदीके बायें किनारेपर बसा है। स्याहकोहके बाहरी छोरपर है। हसत नदीके जलसे निकटवर्ती स्थान बहुत ही उत्तमतापूर्वक सींचा जाता है। खूब उपजाऊ है। शहरके चारों ओर ऊँची दीवार है। दिवारोंमें बुर्ज तथा गोली चलानेके लिए मुक्के बने हैं। शहरमें प्रवेश निमित्त चार द्वार हैं। सब्जवारसे ८० मील उत्तर हेरात मध्येशियाका अत्यन्त उपजाऊ तथा महत्त्वपूर्ण शहर है। हरी-रुद नदीके उत्तरी ओर स्थित है।

कास्पियनके समीपवर्ती देश, मर्व, बुखारा, काबुल तथा

कन्धारकी सड़कें यहाँ मिलती हैं। पुराना शहर ऊँची मोटी दीवारसे घिरा है। सुरक्षा निमित्त एक किला भी है। हेरात भी चौकोर शहर है। शहरके चारों ओर ऊँचा उठा टीला-सा है। उसीपर दीवारें बनी हैं। किला मिट्टीका बना है। दीवारें भी मिट्टीकी हैं। हेरातमें मुख्यतया चार सड़कें हैं। वे नगरके मध्यमें गुम्बदके समीप मिलती है। गुम्बदको चारसू

फरह नगरका एक दृश्य

कहते हैं। पुराने शहरके बाहर नवीन शहर बनानेकी योजना है। किलेके ऊपरसे नगरका सुन्दर दृश्य प्राप्त होता है। उत्तर-पूर्वकी ओर जामा मसजिदकी भव्य इमारत है। दर्शनीय है। पन्द्रहवीं शताब्दीमें बनी थी। उस समय एशियाकी सर्वश्रेष्ठ मसजिद मानी जाती थी। मुसल्लाह कुछ सुन्दर इमारतोंका समूह नगरके बाहर है। गिरता जा रहा है। पूर्वीय इमारत मदरसा

था। उसके अब केवल ८० फुट ऊँचे दो मेहराब शेष रह गये हैं। उसकी चार मीनारें १५० फुट ऊँची खड़ी हैं। मदरसा और मुसल्लाहके मध्यमें एक गुम्बदीय भवन है। उसे शाह रुखकी मजार कहते हैं। उसपर पहले ऊपरसे नीचेतक कुरानशरीफ टाइलों तथा पत्थरके पच्चीदारी कामोंमें लिखी थीं। इस समय बहुत गिर गयी है।

इसलामी इतिहाससे सम्बन्धित व्यक्तियोंकी बहुत-सी मजारें मिलेंगी। मुसलमानोंके लिए पवित्र तीर्थस्थान हो गया है। उनमें प्रसिद्ध पैगम्बर मुहम्मद साहबके चाचाके पौत्र अबू तालिबके पुत्रके पुत्र अब्दुल्लाकी मजार है। उसके अतिरिक्त मौलाना अब्दुर्रहमान, जामी, जियारत-ए-शाहजादा काशिम, अमीर दोस्त मुहम्मदखान, अब्दुल वालिद तथा ख्वाजा अब्दुल्ला अन्सारकी भी मजार शहरके ४ मील उत्तर गुजरगाहमें है।

हेरातके घोड़े उत्तम होते हैं। कमसे कम पचास तरहके अंगूर होते हैं। लाल अंगूर सबसे अच्छा होता है। यहाँके उद्यान अफगानिस्तानमें श्रेष्ठ कहे जाते हैं। उनमें तख्त-ए-सफर, बाग-ए-शाही, बाग-ए-कर्ता, बाग-ए-सब्ज रुवती चोरियन, बाग-ए-मौलाना जामी तथा बाग-ए-कलीचा प्रसिद्ध हैं। शिकार खेलने-वालोंके लिए भी स्थान आकर्षक होगा। मुख्य सड़कके ६ मील दक्षिण किमिनिजकी उपत्यका है। हरीरुदका जल इस उपत्यका-को हरा-भरा बनाता है। किमिनिज सुन्दर प्राकृतिक स्थान है। ऐतिहासिक सामग्री भी प्राप्त होगी। कुछ मीनारें तथा ध्वंसावशेष अन्वेषकोंके लिए उत्तम सामग्री है। अन्य दर्शनीय स्थान दार-ए-सख्त, ओवार, तथा सियाहोसन आदि है।

दिनमें २ बजे आर्याना हवाई जहाजसे कन्धार हवाई अड्डेसे रवाना हो गये। श्री अवतारकृष्ण बक्सी तथा शाह आदि मित्रोंसे विदा लेते दुःख हुआ। पुनः गजनीके ऊपर उड़े।

सायंकाल काबुल पहुँच गये। हवाई जहाजमें काम करनेवाले सभी हिन्दुस्तानी थे।

पश्तूनिस्तान—पख्तूनिस्तान

पश्तूनिस्तानके विषयमें कुछ लिखना आवश्यक है। अफगानिस्तानमें पख्तूनिस्तानका मानचित्र तथा झण्डा दोनों देखा। राजनीतिक आन्दोलन है। इसका सम्बन्ध चाहे हिन्दुस्तानकी राजनीतिसे न हो परन्तु कालान्तरमें हो सकता है।

लिखा जा चुका है कि अफगानिस्तानमें दो भाषाएँ—पश्तो तथा ताजिक पारसी—प्रचलित हैं। पश्तो भाषा-भाषी देशके लिए पश्तूनिस्तान शब्दका प्रयोग किया जाता है। गत अध्यायोंसे स्पष्ट हो गया होगा कि सिन्धु नदीके पश्चिमीतटको अफगानी अपने देशकी प्राकृतिक सीमा प्राचीनकालसे मानते रहे हैं। पेशावरको अपने देशका भाग मानते हैं। विवाद आजसे नहीं, सदियोंसे चला आ रहा है।

पश्तूनिस्तानमें सिन्धु नदीके पश्चिमका पूरा भाग, सीमान्त प्रदेश और बलूचिस्तान आ जाता है। यदि पाकिस्तान पश्तूनिस्तानकी माँग मंजूर कर ले तो उसके पास पश्चिमी पंजाब तथा सिन्ध रह जायगा। सिन्धु नदी पश्तूनिस्तानमें पड़ जायगी। भारतके बँटवारेके पश्चात् केवल सिन्धु नदीकी जलराशि द्वारा ही पश्चिमी पंजाब और सिन्धका सूबा आबाद किया जा सकता है। पश्चिमी पाकिस्तानके हाथ गेहूँ, चावल तथा कुछ और अनाजकी फसलोंके अतिरिक्त कुछ न आयेगा। मेवेके देश निकल जायँगे। पश्चिमी पाकिस्तानका आधेसे अधिक भूभाग निकल जायगा। परिणाम स्पष्ट है। पूर्वी बंगाल आर्थिक और जनसंख्याके अनुपातसे पश्चिमी पाकिस्तानका दूना हो जायगा। पंजाब और सिन्ध यदि पाकिस्तानकी इकाईमें ही रहना चाहेंगे तो वे प्रत्येक बातमें बंगालके आश्रित रहेंगे।

पश्तूनिस्तानका बनना होगा पश्चिमी पाकिस्तानकी आर्थिक और राजनीतिक मृत्यु।

सिन्धु नदी, समोर, दरदा, अन्दोश, गुलरी, जैकबाबाद, नसीराबाद, हुसेनाबाद, अबोटाबाद, कश्मीर, मुजफ्फराबाद तथा अरब सागरतकका पाकिस्तानी भूखण्ड, वर्तमान अफगानिस्तानमें शामिलकर पश्तूनिस्तानमें शामिल है। चितराल कश्मीरके पश्चिम-उत्तरकोणपर है। वह भारतका अंग है। इस समय पाकिस्तानियोंने जबरदस्ती उसपर कब्जा कर रखा है। वह भी पश्तूनिस्तानमें शामिल किया गया है। हालमें ही चितरालके विषयमें भारत सरकारने जब कहा कि वह भारतका अंग है तो अफगानियोंने इसे नापसन्द किया था।

सिन्ध सूबा पश्तूनिस्तानमें शामिल नहीं किया गया है। अफगानिस्तान चारों ओर अन्य देशोंसे घिरा है। उसका विदेशसे सम्बन्ध दूसरे देशोंसे होकर है। विदेशोंपर विदेशी नीति निर्धारण, आर्थिक व्यवस्था एवं आवागमनके लिए निर्भर करता रहा है। इस दासतासे मुक्ति पानेके लिए एक बन्दरगाह होना आवश्यक है। कराची बन्दरगाह इस कमीकी पूर्ति करता रहा है। कराची पश्तूनिस्तानमें शामिल नहीं किया गया है। उससे व्यर्थ-का विवाद उठता। पाकिस्तानके पास कोई बन्दरगाह अथवा राजधानी नहीं रह जाती। उसके लिए दावा करना पाकिस्तानी, सिन्धी तथा पंजाबी जनताकी मनोभावनाओंको ठेस लगाना होगा। एतदर्थ बलूचिस्तान, जिसकी भाषा पश्तू है, शामिल किया है। पश्चिमी पंजाबकी भाषा पंजाबी और सिन्धी है। भाषाका सिद्धान्त एक ही तरह लागू किया जा सकता है। बलूचिस्तानकी दक्षिणी सीमा अरब सागर है। उसका छोटा बन्दरगाह पसनी बड़े बन्दरगाहमें परिणत किया जा सकता है। पसनीसे कन्धारका सीधा मार्ग है।

काबुलमें लोग पख्तूनिस्तान तथा कन्धारमें पश्तूनिस्तान कहते हैं। सिन्धु नदीको अबासीन कहते हैं। 'अबा'का अर्थ पिता तथा 'सीन'का अर्थ नदी होता है। सिन्धु नाम उन्हें प्रिय नहीं है। सिन्धुको वह पितृ नदी कहते हैं। पितृ देश तथा नदी अपने पास रखना चाहते हैं। हिन्दू शब्द सिन्धुका अपभ्रंश है। उसे अपनाकर मुसलिम भावनाको ठेस लगाना उचित न समझा गया होगा।

पखतूनिस्तानका झण्डा मैंने देखा है। अध्ययन किया है। उसमें तीन कपड़ेके टुकड़े सिले हैं। हमारे झण्डेके ही तरह तीन वस्त्रकी पट्टी है। बीचमें काला तथा दोनों तरफ अर्थात् ऊपर नीचे लाल है। झण्डेके मध्यमें हिमाच्छादित पर्वत और उगता सूर्य है। उसके चारों ओर श्वेत गोला बना है। कालेपर अल्लाह अकबर तथा पश्तूनिस्तान लिखा है।

पख्तूनिस्तानकी एक परिभाषा और है। अफगानिस्तानमें कई जातियाँ रहती हैं। देशके दक्षिण-पूर्वमें पठान जाति रहती है। उनका कबीला मुहम्मदी या अहमदी है। यह जाति अफगानिस्तान तथा पाकिस्तान दोनोंमें रहती है। बलूचियोंकी बहुत बड़ी आबादी है। अफगानिस्तानके किला-ए-बिस्तसे अरबसागर तथा सिन्ध प्रदेशके सीमान्ततक आबाद है। अफगानिस्तानके उत्तरमें उजबेक, मध्यमें मंगोल, हजारा, पश्चिममें ताजिक जातियाँ हैं। इस प्रकार देखा जाय तो अफगानिस्तानके पूर्व तथा दक्षिण दिशामें सिन्धु और अरबसागरतक पठान जाति बसी है। जिस सीमाका मैंने ऊपर वर्णन किया है उसमें यही जाति रहती है। उनका रहन-सहन, बोल-चाल, रीति-रिवाज, मुखाकृति एवं खान-पान सब मिलता है।

अफगानिस्तानको ५ क्षेत्रोंमें बाँटा गया है। उत्तरी, पूर्वी, दक्षिणी, दक्षिण-पूर्वी तथा पश्चिमी मण्डल है। उत्तरी मण्डलमें

मैमनाह, मजार-ए-शरीफ, कटगान, बदखसान है। पूर्वीमें चितरालसे लेकर बलूचिस्तानकी सीमातकका प्रदेश है। दक्षिणमें काबुल आदि हैं। पूर्वी-दक्षिणीमें गजनी, कन्धार आदि हैं। पश्चिमीमें फरह, वाखनसूर तथा हेरात आदि है। अफगानिस्तानके उत्तरमें रूस, पश्चिममें ईरान, दक्षिण-पश्चिममें पाकिस्तान है। इस प्रकार अफगानिस्तान दो तरफसे पाकिस्तानसे घिरा है।

अफगानिस्तानके मण्डलोंमें पूर्वीय, दक्षिणी और पूर्वी-दक्षिणी अर्थात् तीन मण्डलोंमें पठान जाति पश्तो भाषाभाषी रहती है। पश्तो भाषा बोलनेवाले पाँच मण्डलोंमेंसे तीन हैं। इनके अतिरिक्त पाकिस्तानका फ्रान्टियर तथा बलूचिस्तान पश्तो भाषी है। एक-भाषा-भाषियोंके एकीकरणका नारा ही पश्तूनिस्तान आन्दोलन है।

स्वरूप तथा भाषाका सम्बन्ध देखा जाय तो पश्तू भाषाका अरबी भाषासे कोई सम्बन्ध नहीं है। पश्तून लोग सेमेटिक जातिके नहीं हैं। वे शुद्ध आर्य हिन्दू जातिके थे। उनमें हिन्दुओंका खून उसी प्रकार है जैसे पाकिस्तानके मुसलमानोंमें है।

प्रश्न उठ सकता है कि बलूचिस्तानमें बलूची रहते हैं। वे पठान नहीं हैं, भाषा चाहे उनकी पश्तो ही क्यों न हो। इसका बड़ा अच्छा उत्तर मिलता है। पठानोंका कहना है कि उनकी मूल जन्मभूमि सुलेमान पर्वतमालाका समीपवर्ती प्रदेश था। यह प्रदेश बलूचिस्तानका पूर्वीय सीमान्त है। पठान नाम उनके निवासके कारण मिला है। ताजिक फारसीमें 'पश्त'का अर्थ होता है पीठ अर्थात् पर्वतकी पीठ। पर्वतके पीछे। यह एक वचन है। उसका बहुवचन होता है 'पश्तानाह'। पश्तानाहका अपभ्रंश है पख्तून। पश्तूनसे भाषाका बोध होता है। संक्षेपमें यही पश्तूनिस्तान अथवा पख्तूनिस्तानकी रूपरेखा है।

पठान कहते हैं—विश्वमें यदि इसराइल जातिके लिए एक

देश बन सकता है, फारसी अरबी आदि बोलनेवालोंका एक देश हो सकता है तो एक भाषा और एक जातिके लोगोंको क्यों न मिलने दिया जाय। पाकिस्तानने अपनी जाति, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति अपनी सभ्यताकी रक्षाके लिए भारतका बँटवारा कर एक जातिके लोगोंका एक देश पश्चिम और दूसरी जाति बंगालीका पूर्वी बंगाल बनवा लिया है। पख्तून भाषाभाषी तथा पख्तून जाति उससे क्यों वंचित रखी जाय। पकिस्तानके पास पठानोंके इस तर्कका कोई उत्तर नहीं है। वे एक-भाषाभाषी एक जातिके लोगोंको अलग रखना चाहते हैं। यह कबतक सम्भव रहेगा, भगवान जाने।

आर्याना (अफगानिस्तान) का मानचित्र